सचित्र जासूसी उपन्यास।

लेखक दुर्गाप्रसाद खत्री।

(२) (66)

रायसाहब बाबू बटुकचंद की मोटर उनके आलीशान
ान के फाटक पर आकर रुकी और बा० बटुकचंद उतरे।
जाने इस समय वे कहां से लौट रहे थे, पर उनके चेहरे की
स्कुराहट से मालूम होता था कि वे जहां और जिस
ाम के लिये भी गये हों, उसमें सफल हुए हैं।

नौकर अदब से खड़े हो गये। रायसाहब फाटक के अन्दर
ाना ही चाहते थे कि किसी आदमी ने आगे बढ़ कर सलाम
िया और एक बंद लिफाफा उनके हाथ में दिया। बटुकचंद ने
क आश्चर्य की निगाह उस लिफाफे पर और दूसरी सवाल की
िगाह उस आदमी पर डाली जिसने इस तरह उनके 'पोजीशन'
ा कुछ ख्याल न कर उनके हाथ में चीठी देने की जुर्रत की थी
र वह आदमी कुछ भी न बोला और फिर एक दफे सलाम कर
हीं चला गया। कुछ सोचते हुए राय साहब भीतर चले।

कपड़े उतारकर कुछ देर ठंडे होने के बाद राय साहब ने वह
िफाफा खोला। उसका लाल रंग देख उन्होंने उसे किसी
ह के न्योते की चीठी समझा था पर भीतर जो कुछ पढ़ा
सने उनका सिर घुमा दिया। चीठी का मजमून यह था।

"बटुक चंद !

तुम्हारे पास रुपया जरूरत से ज्यादा है और हमारी सभा
ो अपने कामके लिये रुपये की सख्त जरूरत है। ऐसी हालत
कुछ फेर बदल दोनों ही के लिये अच्छा है।

(२)

रायसाहब बाबू बटुकचंद की मोटर उनके आलीशान मकान के फाटक पर आकर रुकी और बा० बटुकचंद उतरे। न जाने इस समय वे कहां से लौट रहे थे, पर उनके चेहरे की मुस्कुराहट से मालूम होता था कि वे जहां और जिस काम के लिये भी गये हों, उसमें सफल हुए हैं।

नौकर अदब से खड़े हो गये। रायसाहब फाटक के अन्दर घुसा ही चाहते थे कि किसी आदमी ने आगे बढ़ कर सलाम किया और एक बंद लिफाफा उनके हाथ में दिया। बटुकचंद ने एक आश्चर्य की निगाह उस लिफाफे पर और दूसरी सवाल की निगाह उस आदमी पर डाली जिसने इस तरह उनके 'पोजीशन' का कुछ खयाल न कर उनके हाथ में चीठी देने की जुर्रत की थी पर वह आदमी कुछ भी न बोला और फिर एक दफे सलाम कर कहीं चला गया। कुछ सोचते हुए राय साहब भीतर चले।

कपड़े उतारकर कुछ देर ठंढे होने के बाद राय साहब ने वह लिफाफा खोला। उसका लाल रंग देख उन्होंने उसे किसी तरह के न्योते की चीठी समझा था पर भीतर जो कुछ था उसने उनका सिर घुमा दिया। चीठी का मजमून यह था।

"बटुक चंद!

तुम्हारे पास रुपया जरूरत से ज्यादा है और हमारी सभा को अपने काम के लिये रुपये की सख्त जरूरत है। ऐसी हालत में कुछ फेर बदल दोनों ही के लिये अच्छा है।

अगर अपनी बेहतरी चाहते हो तो दो दिन के अन्दर एक लाख रुपया हमारे सपुर्द कर दो। परसों रात को बारह बजे एक आदमी तुम्हारे बाग के दर्वाजे पर पहुंचेगा। उसके हाथ में अगर यह रकम तुमने दे दी तो ठीक है नहीं तो उसी जगह तुम अपने लड़के की लाश पाओगे जिसे हम लोग ले जा रहे हैं

खबरदार! अगर पुलिस को खबर दी या किसी दूसरी तरह का फिसाद खड़ा करके धोखा देना चाहा तो अपने लड़के से हमेशा के लिये हाथ धोओगे।"

यह चीठी पढ़ बटुकचंद की यह हालत हो गई कि काटो तो लहू नहीं। उन्होंने फिर उसे पढ़ा। नीचे दस्तखत की जगह पर गौर किया मगर कोई नाम दिखाई न पड़ा हां एक बड़ा सा कत्थई रंग का धब्बा इस तरह का जरूर दिखाई पड़ा मानो ऊपर से गाढ़ी लाल स्याही या खून की बड़ी बूंद गिरी हो और चारो तरफ फैल गई हो। धब्बे के बीचोबीच में कुछ सफेद जगह छूटी हुई थी जो देखने में चार उंगलियों के दाग की तरह मालूम होती थी। बस दस्तखत या निशानी अगर कुछ थी तो इतना ही और उसमें कुछ भी न था।

कुछ देर परेशानी और बदहवासी की हालत में बैठे रहने के बाद बटुक चंद ने एक नौकर को हुक्म दिया, "बच्चे बाबू को देखो तो कहां हैं?" नौकर चला गया और थोड़ी देर में लौट आकर बोला, "उनको रामगोविन्द टहलाने के लिये ले गया था मगर अभी तक लौटा नहीं।" सुनते ही बटुकचंद का

कलेजा कांप गया। उन्होंने रुकते गले से कहा, 'कई आदमी जाओ और देखो वह कहां है, जल्दी बच्चे बाबू को खोज कर लाओ।" नौकर दौड़ता हुआ चला गया मगर बटुकचंद के दिल में किसी ने कहा, "जरूर रामगोविन्द उसे लेकर भाग गया।" वे परेशानी के साथ कमरे में इधर उधर टहलने और तरह तरह की बातें सोचने लगे।

एक घंटे के बाद बच्चे बाबू की खोज में गये हुए आदमी लौटे। बच्चे बाबू तो नहीं मिले मगर बहुत दूर निराली सड़क पर बेहोश रामगोविन्द और वह हाथगाड़ी जिस पर बच्चे बाबू बैठकर घूमने निकलते थे मिली। रामगोविन्द मुश्किल से होश में आया था और इस समय नौकरों के साथ यहां तक लौट आया था। बटुकचंद ने उससे पूछा, "बच्चा कहां है ?" वह बोला, "बाबूजी, मैं उनको घुमाता हुआ मडुआडीह की सड़क पर से लौटा आ रहा था कि पीछे से तीन आदमियों ने आकर मुझे पकड़ लिया और एक गाड़ी पर से बच्चे बाबू को उठाने लगा, जब मैंने रोका तो सभों ने मुझे इतना मारा कि मैं बेहोश हो गया। इसके बाद की मुझे खबर नहीं, ये लोग गये हैं और पानी वगैरह छिड़का है तो होश में आया हूं और बड़ी मुश्किल से यहां तक पहुँचा हूं।"

कह कर रामगोविन्द अपनी चोटें दिखाने लगा परंतु बटुकचंद का ध्यान उधर न था। वे अपने प्यारे बेटे और उस चीठी की बात सोच रहे थे।

(३)

गंगा के तट पर, काशी से लग भग तीन कोस ऊपर चढ़ कर, एक ऊंचे टीले पर छोटा सा मगर सुन्दर मकान है जिस के तीन तरफ सुहावना बागीचा और चौथी तरफ कल-कल-नादिनी गंगा बह रही हैं।

मकान छोटा है। शायद मुश्किल से उस में आठ दस कमरे होंगे, मगर फिर भी मजबूत बहुत बना हुआ है। इसकी कुरसी लगभग आठ हाथ ऊंची है और इसमें पूरब की तरफ एक मजबूत दरवाजा है जो बागीचे की सतह से कोई नौ दस हाथ की ऊंचाई पर पड़ता है। उस दरवाजे तक जाने के लिये काठ की सुन्दर सीढ़ियां बनी हुई हैं जो मकान की कुरसी के साथ साथ गईहुई हैं। इन सीढ़ियों के अलावे और कोई रास्ता उस मकानमें जाने का नहीं है। सिर्फ यही नहीं, इतने ऊंचे चढ़ कर मकान की पहिली मंजिल में पहुंचने पर भी उस खंड में सिवाय सदर दरवाजे के और एक भी खिड़की दरवाजा या रोशनदान नहीं है। चारो तरफ मजबूत और मोटी संगीन दीवार है। हां जब इसके भी ऊपर चढ़ कर आप दूसरी मंजिल में पहुंचेंगे तो आपको वह मंजिल बहुत ही खुली और खुलासी दिखाई पड़ेगी जिसके चारो तरफ की बड़ी बड़ी खिड़कियों के राह बखूबी हवा आती है और चारो तरफ दूर दूर तक का दृश्य दिखाई पड़ता है। गंगा तो यहां से ऐसी मालूम पड़ती हैं मानों इस मकान का

वार से सटी हुई बह रही हो मगर बहुत दूर पर रामनगर का क़िला भी दिखाई पड़ता है और अगर आस्मान साफ़ है तो काशी का भी अस्सी की तरफ़ वाला हिस्सा तथा दूर पर के माधोराव के दोनों धरहरे साफ़ साफ़ दिखते हैं।

इसी मकान के गंगा जी की तरफ़ के एक बड़े कमरे में हम इस समय पाठकों को ले चलते हैं। कमरे की तीन बड़ी बड़ी खिड़कियां खुली हुई हैं और उनकी राह ठंढी ठंढी हवा आ रही है। बीच में सुफेद फर्श बिछा हुआ है और चारों तरफ़ कुछ कोच तथा कुरसियां भी पड़ी हुई हैं जिनमें से एक पर इस समय एक नौजवान अध लेटा सा पड़ा हुआ है और पंखी से अपने बदन की गर्मी दूर कर रहा है। उसका साफा सामने के एक छोटे टेबुल पर पड़ा हुआ है और उसी पर एक चमकदार छोटी पिस्तौल भी रक्खी हुई है। नौजवान के माथे पर की पसीने की बूंदें बता रही हैं कि वह कहीं दूर से चलता हुआ आ रहा है।

गर्मी शान्त हुई और नौजवान कोच पर से उठ खड़ा हुआ। उसकी निगाह दीवार पर लटकने वाली बड़ी घड़ी पर पड़ी और उसने बेचैनी के साथ कहा, "पौने आठ बज रहा है और वे लोग अभी तक नहीं पहुंचे-क्या कुछ......" अभी बात खतम नहीं हुई थी कि दूर से "झग झग झग" की भारी आवाज सुनाई पड़ी, नौजवान चौंका और खिड़की के पास आकर उत्तर की तरफ़ देखने लगा। सुबह के सूर्य की रोशनी में

चमकते हुए गंगा के साफ पानी पर दूर से कोई काली चीज दिखाई पड़ी, नौजवान ने दीवार में बनी एक आलमारी खोली और उसमें से एक दूरबीन निकाल कर उस चीज की तरफ देखा। साफ मालूम हो गया कि वह एक मोटर बोट है जो बड़ी तेजी के साथ पानी को चीरती हुई सीधी इसी तरफ को आ रही है। नौजवान के चेहरे पर संतोष की निशानी दिखने लगी और वह उसी जगह फर्श पर एक मोटे गाव तकिये के सहारे इस तरह लेट गया कि उसका मुंह गंगाजी की तरफ रहे।

"भग भग" की आवाज तेज होने लगी और देखते देखते वह मोटर बोट पास आ पहुंची। जब वह इस मकान से लगभग आध मील के फासले पर पहुंची तो नौजवान पुनः उठा और खिड़की में आकर खड़ा हुआ। मोटर की चाल कम हो गई थी और अब वह बहुत धीरे धीरे आगे बढ़ रही थी। नौजवान ने पुनः दूरबीन हाथ में ली और उसकी मदद से देखा कि कोई आदमी उस नाव के अगले हिस्से में आ कर खड़ा हुआ है। नौजवान गौर से उस तरफ देखने लगा। देखते देखते उस नाव वाले आदमी ने एक लाल रंग की झंडी उठाई और कुछ इशारा किया। नौजवान ने भी आलमारी में से एक लाल झंडी निकाली और किसी इशारे के साथ उसे दिखाया। झंडी के इशारे में ही कुछ बातें हुईं और तब उस मोटर बोट की चाल फिर तेज हुई, लगभग

पांच-ही मिनट के बाद वह मकान के पास आकर किनारे से लगी और उस परसे कई आदमी उतरकर इस मकान की तरफ बढ़े। उन्हें देख नौजवान भी अपनी जगह से हटा और नीचे की मंजिल में उतर सदर दर्वाजे के पास जा पहुंचा। उसी समय नाव पर से उतरे हुए आदमी भी जो गिनती में चार थे वहां आ पहुंचे। उंगलियों के इशारे से नौजवान ने उनसे कुछ बात की जिसके बाद वे सब सीढ़ियां चढ़ ऊपर आ गये। नौजवान सभों से गले मिला और तब सभों को ऊपर चलने को कह कर आप एक कोठड़ी में घुस गया जो दर्वाजे के बगल ही में पड़ती थी। इस कोठड़ी की दीवारों में और फर्श में भी तरह तरह के कल पुर्जे लगे हुए थे। नौजवान दीवार में लगे एक बड़े पहिये के पास पहुंचा और उसका मुट्ठा पकड़ कर घुमाने लगा। पंद्रह या बीस दफे घूमने के बाद वह पहिया रुक गया और नौजवान कोठड़ी के बाहर निकल कर ऊपर की मंजिल के उसी कमरे में जा पहुंचा जिसमें वह पहिले बैठा था और जिसमें वे चारो आदमी भी जा पहुंचे थे जो मोटर बोट पर से उतरे थे। नौजवान भी उन्हीं के पास जा बैठा और बोला, "कहो क्या हुआ?"

चारों में से एक बोला, "जैसा हम लोगों ने सोचा था ठीक वैसा ही उतरा!"

नौजवान०। वह लड़का कहां है।

"यह है।" कह कर उस आदमी ने एक बड़ा सा गमड़े

का बेग खोला जो वह साथ लाया था। बेग के अन्दर कपड़े
बीच में अच्छी तरह सम्हाल कर रक्खा हुआ मगर बेहो
एक तीन या चार बरस का सुन्दर लड़का था। नौजवान
उसे मुलायम हाथों से बेग के बाहर निकाला और एक बा
कलेजे की धड़कन और सांस पर निगाह देने बाद फर्श प
सुला दिया। सभों में फिर बातें होने लगीं।

नौजवान०। इसको लाने में कुछ तरद्दुद तो नहीं पड़ा।

एक आदमी०। नहीं कुछ नहीं। सिर्फ इसके साथ जो नौकर था उसने कुछ हाथ पांव चलाए पर जल्दी ही हम लोगों ने उसे बेकाबू कर दिया और इसे लेकर चले आये।

नौज०। हमारी चीठी उसके पास पहुंच गई?

आदमी०। हां, जब हम लोगों ने देख लिया कि वह खास बहुक चंद के हाथ में दे दी गई तब वहां से हटे। रात भर तो वहीं पर छिपे रहे सुबह को यहां चले आये। अब जैसी कुछ सलाह हो किया जाय।

नौज०। तुम लोगों ने और कुछ कार्रवाई करने की बात सोची है?

आदमी०। हां एक बात तो सोची है, अगर आपकी राय हो तो की जाय।

नौज०। क्या?

आदमी०। काशी के एक रईस बकुल चंद चक्रवर्ती का नाम शायद आप ने सुना होगा।

नौ०। हां मैंने सुना है।

आद०। उसे रायबहादुरी मिली है और इस खुशी में वह सारनाथ के अपने बागीचे में एक पार्टी देने वाला है।

नौ०। अच्छा ?

आद०। वह पार्टी सिर्फ उसके दोस्तों की ही नहीं होगी बल्कि उनकी स्त्रियां भी उसमें आवेंगी जिनके लिये सवारी का खास और बहुत अच्छा बंदोबस्त किया गया है। इसके इलावे कोई आध दर्जन रंडियां भी मौजूद रहेंगी।

नौ०। तब ?

आद०। हम लोगों की राय है कि उस वक्त उस बागीचे पर छापा मारा जाय। बड़ी गहरी रकम हाथ आवेगी।

नौ०। हैं ! औरतों पर छापा !!

आद०। क्या हर्ज है ? हम लोगों का उद्देश्य तो सब तरह से पाक और साफ है। औरतों का केवल जेवर उतरवा लिया जायगा, और किसी तरह से उनको न तकलीफ दी जायगी न बेइज्जती की जायगी। जितनी औरतें आवेंगी सब अमीरों हां की होंगी जिन्हें कुछ जेवर निकल जाना कुछ भी न अख-रेगा मगर हम लोगों को लाख डेढ़ लाख रुपया मिल जाना कोई ताज्जुब नहीं।

नौ०। फिर भी......

आद०। यह भी तो सोचिये कि वह एक नये रायबहादुर बने हुए की दी गई पार्टी होगी। सब राय साहब रायबहादुर

राजा साहब और खां बहादुर ही इकट्ठे होंगे। सरका
नौकर और ओहदेदारों की भी कमी न होगी जिन्हें सताना ह
लोगों का पहिला काम है, फिर सरकार के खुशामदी "ज
हुजूर" और भेदिये भी वहां सभी मौजूद रहेंगे मुमकिन है f
कलेक्टर और कमिश्नर भी मौजूद रहें। अगर एक ही हम
में इतने आदमियों पर हम लोग अपना आतंक जमा सके त
क्या कुछ काम न होगा।

नौ०। हां सो तो ठीक है, अच्छा मैं "भयानक चार" व
आगे यह प्रस्ताव रख दूंगा जैसा वह कहेंगे वैसा ही किय
जायगा।

सब०। बस बस यही तो हम चाहते हैं।

नौ०। यह पार्टी कब होने वाली है?

एक०। शायद छः सात दिन में होगी।

नौ०। तो काफी मौका है, मैं उन लोगों से सलाह करके
तुम्हें उसी ठिकाने पर, खबर दूंगा।

एक०। बहुत अच्छा।

नौज०। इधर कोई नया हाल चाल तो नहीं है?

एक०। जी कोई नई बात तो नहीं है पर सुना है काशी
के पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट मि० गिब्सन छुट्टी पर जा रहे हैं और
उनकी जगह आगरे से कोई आ रहा है।

नौ०। आगरे से! क्या नाम है कुछ मालूम हुआ?

एक० । ठीक तो नहीं मालूम शायद मि० कैमिल या ऐसा ही कुछ है ।

मि० कैमिल का नाम सुनते ही वह नौजवान चौंक उठा और सिर नीचा कर कुछ सोचने लगा । कुछ देर तक उसके साथी लोग ताज्जुब के साथ उसकी तरफ देखते रहे । आखिर एक ने पूछा, "मि० कैमिल का नाम सुन कर आप चौंक गये क्यों ? क्या आप उन्हें जानते हैं ?"

नौजवान ने सिर उठाकर कहा, "हां मैं उसे अच्छी तरह जानता हूं । वह बड़ाही कट्टर आदमी है और डर या घबराहट तो उसे छू नहीं गई है । खैर देखा जायगा । अब तुम लोग जाओ, मगर जाने से पहिले इस लड़के को उस औरत के सुपुर्द करते जाओ जिसे पहिले से इसी काम के लिये हम लोगों ने यहां बुला रक्खा है । अब यह होश में आ रहा है ।

"बहुत अच्छा ।" कह कर वे आदमी उठ खड़े हुए । एक ने उस लड़के को गोद में उठा लिया और दूसरे ने वह बेग पुनः बंद कर हाथ में ले लिया । नौजवान ने एक से पूछा, "चीठी में के दिन की मोहलत दी गई है ?" जवाब मिला, दो दिन की ।" नौजवान ने कहा, "ठीक है, अच्छा तो कल संध्या को फिर यहीं आ कर मुझसे मिल लेना ।"

सब कोई नीचे की मंजिल में उतर गये । वह नौजवान भी उनके साथ ही साथ था ।

(४)

राय बटुकचन्द की वह रात किस तरह बीती यह उन्हीं का दिल जानता होगा। रायबहादुरी न मिलने का गम तो था ही, ऊपर से प्यारे बेटे के खो जाने ने और भी गजब ढा दिया। पहिली चोट पर इस दूसरी चोट ने पड़ कर उनके दिल और दिमाग को एक दम चौपट कर दिया।

उनकी वह रात पलंग पर पड़े करवटें बदलते ही बीत गई। कभी उन दुष्टों की बात सोचते जिन्होंने उन्हें चीठी लिखी थी, कभी अपने बच्चे की मुसीबत का ख्याल करते, कभी उस एक लाख रुपये की तादाद पर सिहरते जिसे देने पर ही वे अपने बच्चे को वापस पा सकते थे और कभी इस धमकी पर कांपते कि अगर पुलिस को खबर की गई तो लड़का मार डाला जायगा। तरह तरह की तर्कीबें सोचते पर कोई कारगर होती दिखाई नहीं पड़ती थी। लाचार वह रात उन्हें चिन्ता, फिक्र और घबराहट में ही काट देनी पड़ी।

सुबह होते ही वे पलंग पर से उठे और अपने बैठक में आए। वह चीठी निकाली और बड़ी देर तक उसे बार बार पढ़ते रहे। आखिर उन्होंने अपने मन में कोई कार्रवाई करने का ठीक किया और चीठी बंद कर जरूरी कामों से निपटने चले गये।

आठ बजने के कुछ पहिले ही सब तरह से फारिग हो बटुक चन्द अपनी मोटर में आ बैठे और हांकने वाले से बोले

"कलेक्टर साहब के बंगले पर चलो।" यह कहते हुए उन्होंने अपने चारो तरफ एक गौर की निगाह डाली। चारो तरफ उनके नौकर चाकर ही खड़े थे, कोई गैर आदमी मौजूद न था।

मोटर तेजी से रवाना हुई और पन्द्रह मिनट से कुछ कम ही में कलेक्टर साहब के बंगले के फाटक पर पहुंच गई। बटुकचन्द उतरे और बंगले के पास पहुँचे। सीढ़ियां चढ़ रहे थे कि चपरासी ने आ कर लंबी सलाम की। उन्होंने सलाम कबूल करते हुए कहा, "बड़ा ही जरूरी काम है, साहब क्या कर रहे हैं?" चपरासी बोला, "मैं अभी देखता हूं, हुजूर तशरीफ रक्खें।" बटुकचंद बरामदे में रक्खी कुरसियों में से एक पर बैठ गये और बार बार घड़ी की तरफ जो सामने ही टंगी थी इस तरह देखने लगे मानों उन्हें बहुत थोड़े वक्त में कई काम करने हैं।

यकायक एक प्यादा उनके सामने आ खड़ा हुआ। उसके हाथ में एक लाल लिफाफा था जिसे उसने बटुकचन्द की तरफ बढ़ाया और कहा, "हुजूर को देने के लिये उस आदमी ने दिया है।" लाल लिफाफा देखते ही न जाने क्यों बटुकचंद का कलेजा कांप गया। उन्होंने चौंक कर उस तरफ देखा जिधर उस प्यादे ने बताया था, फाटक के पास एक आदमी खड़ा दिखाई पड़ा जिसने उन्हें अपनी तरफ देखते देख हाथ उठा कर चार उंगलियां दिखाईं और तब एक उंगली होंठ पर

रख चुप रहने का इशारा करने बाद एक तरफ को भाग गया।

बटुकचन्द सिहर उठे और कांपते हाथों से उन्होंने लिफाफा खोला। लाल कागज पर लिखी एक छोटी चीठी थी जिसका मजमून यह था।

"खबरदार!"

हम लोग तुम्हारे एक एक कदम पर निगाह रखते हैं यह तो इस चीठी से ही तुम्हें मालूम हो गया होगा, अब होशियार कर देते हैं कि अगर तुमने किसी से हम लोगों के बारे में कुछ कहा तो तुम्हारी खैरियत नहीं है। तुम्हारा लड़का तो जान से मार दिया जावेहीगा—और भी एक ऐसी कार्रवाई की जायगी जिससे तुम कहीं के न रहोगे बस होशियार! "कपास के फूल" की बात याद करो और सम्हल जाओ।

अगर कल रात को बारह बजे हमें एक लाख रुपया न मिल जायगा तो तुम्हारी खैर नहीं।"

चीठी के नीचे उसी प्रकार का खून के धब्बे ऐसा दाग और बीच में चार उंगलियों का निशान था जैसा पहिली चीठी में था।

पढ़ कर बटुकचंद का चेहरा पीला पड़ गया। न जाने चीठी में किस गुप्त भेद की तरफ इशारा किया गया था कि वे एक दम कांप उठे। उनकी हिम्मत न पड़ी कि उस जगह ठहरें या साहब से वह बात कहें जिसके लिये वहां आए थे। उठ खड़े हुए और इसी बंगले के नीचे की तरफ उतरने लगे।

समय चपरासी ने वहां पहुँच कर कहा, "यह क्या ! हुजूर आ रहे हैं !!"

बटुकचन्द रुक गये और बोले, "क्यों, साहब का पता मिला ? क्या कर रहे हैं ?"

चपरासी बोला, "कुछ बहुत ही जरूरी काम कर रहे हैं, मुझे आप को सलाम देने को कहा है और कहा है कि 'मैं इस वक्त बड़ा ही 'बिज़ी' हूं किसी और मौके पर तशरीफ लावें तो बेहतर हो।"

यदि और कोई मौका होता तो शायद बटुकचन्द इस बात से अपनी बड़ी भारी बेइज्जती समझते और साहब के दर्शन किये बिना कभी न लौटते पर इस समय उन्हें यह सुन संतोष ही हुआ। वे बोले, "कोई हर्ज नहीं, कोई जरूरी काम न था, फिर कभी मिल लूंगा !!" चपरासी की लंबी सलाम लेते हुए वे फाटक की तरफ बढ़े। चपरासी यह कहता हुआ भीतर लौट गया, "का जाने दुई अच्छर में का रक्खल हो कि नाहीं मिलल तो दौड़त चल आवलन और मिले बदे साहब के पैर चाटत रहलन !! आज भला साहब ऐसन कौनों से मिलिहें जिन के राय बहादुरी नाहीं मिलल हो !!"

चपरासी की टिप्पणियों से बिल्कुल बेखबर डरे और घबराए हुए बटुकचन्द अपनी मोटर पर सवार हुए और घर ले चलने का हुक्म दिया।

(५)

पौ फट गई है परन्तु सूर्य देव के आगमन की सूचना देने वाली लाली अभी आसमान पर फैली नहीं है।

ऐसे समय में बाबू बटुकचंद अपने मकान के बाहर निकले। दरवाजे पर उनकी छोटी दो आदमियों के बैठने वाली मोटर खड़ी थी। बटुकचंद उसके पास गये और ड्राइवर को उतर आने का इशारा किया। जब वह उतर आया तो आप ह्वील पर जा बैठे और उससे कहा "तुम्हें साथ चलने की जरूरत नहीं मैं अकेला ही जाऊंगा।" फट फट की आवाज के साथ इन्जिन चला और झटके के साथ मोटर दूर निकल गई।

बहुत तेज चाल के साथ बटुकचंद ने शहर की सड़कें पार कीं और तब उस सड़क पर चले जो सारनाथ से होती हुई गाजीपुर की तरफ जाती है। बनारस से गाजीपुर सड़क के रास्ते करीब चालीस मील के पड़ता है और वहां जाने की सड़क बहुत ही रमनीक स्थानों से होती हुई कई जगह गङ्गाजी के इतने पास से गुजरी है कि सड़क पर से उनका दर्शन हो सकता है। कई पुराने जमाने की इमारतें और ऐतिहासिक खंडहर भी इस पर पड़ते हैं। बटुकचंद ने मोटर को पूरी तेजी से इसी सड़क पर छोड़ दिया और वह घंटे में साठ मील की तेजी से दौड़ने लगी।

एक घंटे से कुछ अन्दर ही गाजीपुर के पास बटुकचंद आ पहुंचे। दूर से वहां के अफीम की कोठी का ऊंचा बुर्ज

रुक कर उन्होंने मोटर की चाल कम की और उस सड़क पर घूमे जो अफ़ीम के कारखाने को जाती है। गंगा से कुछ ही हट कर तीन चार खूबसूरत और आलीशान बंगले बने हुए थे जिनमें से एक के आगे उन्होंने मोटर रोकी और फाटक खोल भीतर की तरफ चले।

एक नवयुवा मेम अपने दो सुन्दर बालकों के साथ बंगले के सामने वाले रमने पर टहल रही थी। मोटर की आवाज सुन वह चौंकी और जब बटुकचन्द को अपनी तरफ आते देखा तो उनकी तरफ ताज्जुब के साथ बढ़ी। कुछ ही आगे बढ़ने पर दोनों ने एक दूसरे को पहिचान लिया। बटुकचंद ने आगे बढ़ मेम से हाथ मिलाया और मेम ने उनसे पूछा, "हलो राय साहब! इस वक्त इतना सुबह कहां?"

बटुकचंद दोनों लड़कों को प्यार करने बाद बोले, "किंग साहब से बहुत ही जरूरी बात करनी है, वे उठे हुए हैं?"

मिसेज किंग बोलीं—"हां, हां, वे अपने सुबह के कमरे में कुछ काम कर रहे हैं, मैं अभी उन्हें आपके आने की खबर करती हूं।"

मेम साहब ने लड़कों को खेलने को कहा और तब बंगले की तरफ बढ़ीं। बटुकचंद उनके साथ हो लिये। बंगले के पास पहुंचते ही किंग साहब से उनकी मुलाकात हुई जो सीढ़ियां उतर रहे थे। बटुकचन्द को देखते ही वे आगे बढ़ आये और बड़े प्रेम से हाथ मिला कर बोले, "इतना सुबह आज

आप कहां ?" बटुकचंद ने कहा,"मैं एक बड़ी मुसीबत में पड़ आपसे सलाह लेने आया हूं।" मि० किंग ने चौंक कर कहा, "कैसी मुसीबत ?" बटुकचंद बोले,"भीतर चलिये तो सुनाऊं।" किंग उनका हाथ पकड़े भीतर चले गये। मौका समझ मिसेज किंग बाहर ही रह गईं।

अपने प्राइवेट कमरे में ले जा कर किंग ने बटुकचंद को एक कुरसी पर बैठाया और आप सामने बैठ कर पूछा, "हां अब कहिये क्या मामला है ?"

बटुकचंद ने अपने चारों तरफ गहरी निगाह डाली और तब जेब से वह चीठी जो उन्होंने दुष्टों की तरफ से पाई थी निकाल कर उनके सामने रख दी। किंग ने उसे उठा लिया और चुपचाप पढ़ने लगे। ज्यों ज्यों चीठी पढ़ते जाते थे उनके चेहरे से घबड़ाहट और परेशानी प्रगट होती जाती थी और जब समूची चीठी खतम कर वे उस जगह पहुंचे जहां दस्तखत की जगह पर लाल धब्बा बना हुआ था तो एक दम उछल कर बोले,"ओफ ओह ! यह तो उन्हीं शैतानों की कार्रवाई है जिन्होंने अपने को 'रक्त-मंडल" के नाम से मशहूर कर रक्खा है !!"

बटुकचंद ने ताज्जुब से पूछा, "रक्त-मंडल क्या ?" किंग साहब बोले,"वह खूनियों और शैतानों की एक कमेटी है जिसका काम ही रईसों और भले मानुसों को तकलीफ पहुंचाना और सरकार को तंग करना है। उसके मुखिया कोई

चार आदमी हैं जो अपने को 'भयानक चार" कहते हैं। उन की कंबख्त निगाहें जिस पर पड़ती हैं उसकी खैरियत नहीं।

बटुकचंद कांप कर बोले, "आपको इनका हाल कैसे मालूम?" किंग साहब बोले, "मैं जब बनारस का पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट था तभी मुझे इस मामले की खबर थी और इधर तो मैं खुद इनके फेर में पड़ गया हूं। यह देखो आज चार दिन हुआ यह चीठी मुझे मिली है।"

कह कर किंग साहब ने एक चीठी दराज में से निकाल कर बटुकचंद को दिखाई। बटुकचंद ने उसे पढ़ा, यह लिखा हुआ थाः—

"मिस्टर किंग!

हमारी सभा का यह विचार है कि इस देश से अफीम का नाम निशान उठा दिया जाय जिसने देशवासियों की आत्मा-देह और मन को चौपट कर उन्हें गुलामी की बेड़ी पहिना रक्खी है।

इस लिये तुम्हें खबर दी जाती है कि अगर आज से पंद्रह दिन के भीतर तुम अपनी अफीम की कोठी बंद कर के सब तैयार अफीम बर्बाद न कर दोगे तो तुम्हारा और तुम्हारी कोठी का नाम निशान मिटा दिया जायगा। खबरदार, खबरदार, खबरदार!"

इस चीठी के नीचे भी उसी प्रकार का खून के धब्बे की तरह गोल दाग और बीच में चार उंगलियों का निशान था।

बटुकचंद ने चीठी पढ़ कर रख दी और किंग साहब की तरफ देख कर पूछा,"तब आप इस मामले में क्या कर रहे हैं ?" किंग साहब बोले,"सरकार से लिखा पढ़ी हो रही है जल्दी ही कुछ किया जायगा।"

बटुकचन्द बोले—"खैर आप तो सरकारी नौकर हैं और सरकार आपकी मदद करेगी मगर मैं गरीब तो बेमौत मर रहा हूं, किसी से फरियाद भी करने नहीं पाता। कल कलेक्टर साहब से मिलने गया था सोचा था इस बारे में उनसे मदद लूंगा मगर वहां भी कंबख्त रक्त-मंडल वाले पहुंच ही गये।"

इतना कह बटुकचन्द ने कल का सब हाल कह सुनाया और वह दूसरी चीठी भी दिखाई। किंग साहब सब हाल सुन बोले, 'इन कंबख्तों का जाल इस तरह चारों तरफ फैला हुआ है कि कोई बात इनसे छिपा कर करना मुश्किल है।"

बटुक०। मगर अब मेरी जान तो किसी तरह छुड़ाइये! कोई ऐसी तर्कीब निकालिये कि मेरा रूपया भी न बर्बाद हो और मेरा बेटा भी वापस मिले।

किंग साहब देर तक कुछ सोचने के बाद बोले—"अच्छा मुझे एक तर्कीब सूझी है। बेइमानों के साथ बिना धोखेबाज़ी किये काम नहीं चलेगा। आप ऐसा करिये—"

दोनों में धीरे धीरे कुछ बातें होने लगीं। दिन दो घंटा चढ़ चुका था जब बटुक चन्द किंग साहब से बिदा हुए और अपने घर की तरफ लौटे।

(६)

आधी रात के लगभग जा चुकी है। बा० बटुकचन्द के पिसनहरिया के पास वाले बागीचे में इस समय बिल्कुल सन्नाटा छाया हुआ है। माली चौकीदार और सिपाही सभी रात की पहिली नींद में मस्त हैं। सिर्फ बीच वाली इमारत के सब से ऊपर के कमरे में दो आदमी एक टेबुल के पास बैठे हुए धीरे धीरे कुछ बातें कर रहे हैं। इनमें से एक तो बटुकचंद हैं और दूसरे मिस्टर किंग। टेबुल पर एक लम्प जल रहा है जिसकी रोशनी मद्धिम की हुई है। न जाने कब से ये लोग यहां बैठे हुए हैं परंतु जिस समय घड़ी ने बारह बजाए उस समय किंग साहब ने एक अंगड़ाई ली और कहा, "रायसाहब अब तैयार हो जाइये।"

राय बटुकचन्द ने टेबुल का दराज खोला। उसमें नोटों के दो थाक रक्खे हुए थे। बटुकचंद ने दोनों को निकाला और गिना। हजार हजार के पचास पचास नोट थे। कुल एक लाख के नोट थे।

नोटों को हाथ में लेते हुए एक बार बटुकचंद का कलेजा कांप गया और उन्होंने डरे हुए स्वर में कहा, "देखिये किंग साहब! कहीं ऐसा न हो कि यह एक लाख रुपया भी चला जाय और मेरा बेटा भी हाथ न आवे।"

किंग साहब बोले, "नहीं ऐसा कभी न होगा, मेरे दोनों नौकर बड़े ही होशियार हैं और उनके काम में किसी तरह

उधर दौड़ती रही इसके बाद वह रोशनी बंद हो गई और मानों यह निश्चय कर लेने के बाद कि वहां पर सिवाय बटुकचन्द के और कोई नहीं है, बाइसाईकिल का सवार पुनः इनकी तरफ बढ़ा। कुछ ही सेकेन्डों में वह इनके पास आ पहुँचा और साइकिल पर चढ़े ही चढ़े अपने पैर जमीन पर टेक खड़ा हो जाने बाद उसने कहा, "कौन खड़ा है, बटुकचन्द ! "

यह सवाल कुछ ऐसे रोब के साथ किया गया था कि खाम-ख्वाह खुशामदी बटुकचन्द के मुंह से निकल गया "जी हां, हुजूर !!" इसके साथ ही उन्होंने जुबान रोकी मगर उसी समय उस आदमी ने पुनः पूछा,"क्या इरादा है, रुपया लाए हो ?"

बटुकचंद ने हाथ जोड़ कांपते कांपते कहा, "हुजूर ! मैं गरीब......" पर उस आदमी ने इनकी बात खतम न होने दी और डपट कर कहा,"बकवाद न करो ! हमें मालूम है कि आज तुमने एक लाख रुपे के नोट बंक से मंगवाए हैं। अगर तुम अपने लड़के को जिन्दा चाहते हो तो रुपया हमारे हवाले करो नहीं तो अपने लड़के की लाश देखने के लिये तैयार हो जाओ !"

बटुकचन्द का मुंह खुला पर कुछ जवाब न निकल सका। एक गहरी सांस ले कर जो उनके कलेजे को फोड़ती हुई निकली थी, उन्होंने जेब में हाथ डाला और नोट के दोनों बंडल निकाल उस आदमी की तरफ बढ़ाए। उस आदमी ने बंडल ले लिये और साइकिल के लंप की रोशनी में उन्हें गौर से देखा। फिर

समय वह हेन्डिल पर झुका हुआ नोटों की जांच कर रहा था, उस समय लंप की रोशनी पड़ने से बटुकचन्द ने देखा कि उस आदमी की समूची पोशाक लाल रंग की है यहां तक कि हाथों में भी लाल दस्ताने चढ़े हुए हैं तथा चेहरे पर एक लाल नकाब पड़ी हुई है।

तेजी मगर कुछ लापरवाही के साथ उस आदमी ने नोटों को गिना और तब दोनों बंडलों को जेब के हवाले करते हुए कहा, "ठीक है, तुमने बुद्धिमानी की जो हमलोगों से दुश्मनी मोल नहीं ली। मैं जाता हूं—मेरे पीछे मेरी ही तरह के दस आदमी और आवेंगे। जब वे सब निकल जावें तो बारहवां आदमी जो इधर से जायगा तुम्हें तुम्हारा लड़का देता जायगा।"

(७)

किंग साहब इस फिक्र में पड़े थे कि जिस तरह हो ऐसा करना चाहिये कि बटुकचन्द का लड़का भी मिल जाय, उनका रुपया भी न मारा जाय और वे दुष्ट लोग भी गिरफ्तार कर लिये जांय।"

इसके लिये उन्होंने इन्तजाम भी बहुत अच्छा किया था। हम ऊपर लिख आये हैं कि बटुकचन्द के बागीचे के बाहर की सड़क दोनों तरफ से दो ऊंची दीवारों से घिरी हुई थी। इन दीवारों के सबब से कोई आदमी जो इधर से जाने वाला हो, वो तीन सौ गज तक सिवाय आगे जाने या पीछे लौटने के

और कहीं आ नहीं सकता था। किंग साहब ने इसी बात का लाभ उठाना चाहा था। उनके दो खास आदमियों की मातहती में बीस होशियार और मजबूत आदमी काम कर रहे थे। इस सड़क पर थोड़ी थोड़ी दूर पर ऊंचे ऊंचे आम इमली सेमल आदि के पेड़ थे। इनमें से दस पेड़ों पर दस आदमी बन्दूकें लिये बैठे हुए थे और बाकी के दस आदमी हाथ में लोहे की पतली मगर मजबूत तारें जिनका एक एक सिरा उन्हीं पेड़ों से बंधा था लिये पेड़ों की आड़ में छिपे खड़े थे। किंग साहब का हुक्म था कि जिस समय मेरी सीटी एक दफे बजे उसी समय ये तार वाले आदमी दौड़ कर सड़क के दूसरी तरफ चले जांय और तारों के दूसरे सिरे को सामने के पेड़ों से कस कर बांध दें। जिस समय उस सड़क पर दस जगह इस तरह तारें बंध जांयें उस समय घोड़ा, मोटर, साइकिल, या पैदल किसी का भी अचानक एक तरफ से दूसरी तरफ भाग जाना कठिन था क्योंकि अन्धेरे में ये पतली तारें दिखती नहीं और भागने वाले इनसे लड़ कर जरूर चोट खाते जिससे उन्हें रुकना मजबूरी हो जाता। किंग साहब का दूसरा हुक्म था कि जिस समय उन की सीटी दो बार बजे उसी समय पेड़ पर के सिपाही गोलियों की बाढ़ हवा में दागना शुरू करें और जैसे ही वे तीसरी सीटी सुनें पेड़ से उतर आवें और सब लोग मिल कर डाकुओं को गिरफ्तार कर लें। इस प्रकार सब तरह का पक्का इन्तजाम कर के किंग साहब स्वयम् भी एक पेड़ की आड़ में पिस्तौल

बैठे थे और उन्हें पूरा निश्चय था कि डाकू जरूर पकड़ जायेंगे।
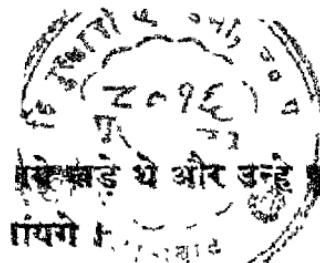
किंग साहब को विश्वास था कि रक्त मंडल वाले कम से कम दस पन्द्रह आदमी के गरोह में जरूर होंगे क्योंकि आखिर उन्हें भी तो अपने पकड़े जाने का अन्देशा होगा मगर इसके विपरीत जब उन्होंने सिर्फ एक आदमी को मामूली साइकिल पर चढ़ आते देखा तो उन्हें ताज्जुब हुआ। वे कुछ निश्चय नहीं कर सके कि इसे रक्त-मंडल का आदमी समझें या कोई मामूली मुसाफिर, अस्तु वे इसी उधेड़ बुन में रह गये और वह साइकिल सवार सामने से निकल गया। तब वे पेड़ की आड़ से बाहर निकले और गौर से देखने पर उन्हें मालूम हुआ कि उस आदमी ने बटुकचन्द से कुछ बातें की और बटुकचन्दने उसे कुछ दिया। वे समझ गये कि जरूर यह कुछ वही मामला है मगर वे तब तक कुछ कर नहीं सकते थे जब तक कि बटुक-चन्द का लड़का उन्हें मिल न जाता और वे बंधा हुआ इशारा करते क्योंकि उन्हें यह अन्देशा तो था ही कि अगर वे जरा भी जल्दीबाजी कर गये तो ताज्जुब नहीं कि उस बेचारे लड़के की जान चली जाय क्योंकि अपने को फंसा देख रक्त-मंडल वाले, जो दया क्या चीज है इसे बिलकुल जानते तक नहीं, लड़के को कदापि जीता न छोड़ेंगे। इसी से वे कुछ करने का निश्चय न कर सके और चुपचाप बैठे रह गये। वह आदमी चला गया और सड़क पर फिर अन्धेरा हो गया।

थोड़ी देर बाद एक दूसरा आदमी साइकिल पर सवार आता दिखाई पड़ा। किंग साहब होशियार हुए पर यह आदमी बिना रुके या बटुकचन्द से कुछ बात किये आगे बढ़ गया। इसके कुछ देर बाद तीसरा आदमी आया और चला गया और तब इसी तरह आठ दस आदमी साइकिल पर सवार आये और चले गये। अब किंग साहब घबराए और सोचने लगे कि आखिर मामला क्या है। उनकी समझ में कुछ भी न आया और अन्त में वे दीवार के साथ साथ आड़ में से होते हुए बटुकचन्द के सामने आ खड़े हुए जो एक टक मूरत की तरह फाटक के सामने खड़े हुए थे। किंग साहब ने उनकी कोहनी पकड़ कर हिलाई और धीरे से पूछा, "आखिर यह मामला क्या है ? रक्तमंडल वालों ने तुमसे कुछ बातें कीं या नहीं ?"

बटुकचन्द ने धीरे और संक्षेप में सब बातें कहीं और अन्त में बोले, "दस आदमी जा चुके हैं एक और जाने बाद बारहवां जो आवेगा वह मेरे लड़के को लेता आवेगा।" किंग साहब ने सुन कर दांत पीसा और कहा, "अफसोस ! मेरा सब सोचा विचारा बेकार गया, खैर मैं उस बारहवें आदमी को ही गिर-फ्तार करूंगा।" बटुकचन्द ने कहा, "खैर जो चाहे कीजिये मगर मेरा लाख रुपया तो चला ही गया, अब इतना ख्याल रखियेगा कि मेरा लड़का जीता जागता मुझे मिल जाय तब जो कुछ होना हो सो हो।"

इसी समय ग्यारहवां आदमी सामने से गुजरा। किंगसाहब

शियार हो गये, सीटी जेब से निकाल उन्होंने हाथ में ले ली
ैर इस फिक्र में हुए कि बारहवां आदमी उधर से जाए और
सीटी बजावें जिसके साथ ही सड़क तारों से घिर जाय
और वह आदमी गिरफ्तार हो जाय।

यकायक कोई एक काली छोटी चीज़ सड़क पर दौड़ती आती हुई दिखाई पड़ी जो फाटक के सामने आ कर रुक गई। मिस्टर किंग और वटुकचंद ने गौर से देखा तो मालूम हुआ कि वह एक छोटी लड़कों के घुमाने फिराने की गाड़ी है जिस के अन्दर कोई बच्चा लेटा हुआ है। वटुकचंद ने झुक कर देखा तो उन्हीं का बच्चा था जो इस समय गहरी नींद में था। उन्होंने गाड़ी का हेण्डिल पकड़ लिया तथा उसे घुमा कर फाटक के अन्दर ले आये और तब मालूम हुआ कि उसके साथ एक लंबी रस्सी बंधी हुई थी जिसका दूसरा सिरा शायद आगे जाने वाले साइकिल सवार के हाथ में था।

वटुकचंद ने बाग के अन्दर के एक लैंप के नीचे जा कर अपने बच्चे को अच्छी तरह देखा और तब एक लंबी सांस ले कर कहा, "किंगसाहब ! आपकी कारीगरी कुछ काम न आई और मेरा एक लाख रुपया भी चला ही गया। खैर मेरा बच्चा मुझे मिल गया। यही गनीमत है।"

किंगसाहब बोले, "मुझे बड़ा ही अफसोस है कि इतनी तर्कीब करने पर भी दुष्ट लोग निकल ही गये, मगर खैर ! तुम

अपने रुपये जाने का अफसोस न करना चाहिये !!"

बटुकचंद ताज्जुब से बोले, "सो क्यों ?"

किंग साहब ने कहा, "वे सब नोट जो तुमने दिये पकड़ा रही हैं, वे नकली नोट मेरे पास जांच के लिये आये थे। मैंने तुम्हारी गैरहाजिरी में तुम्हारे दोनों बंडल निकाल कर उन नकली नोटों के दो बंडल उस दराज में रख दिये थे। वे असली नोट तुम्हारे नीचे के बैठक वाले कमरे के टेबुल की दराज में रक्खे हुए हैं जा कर ले लो।"

बटुकचंद के मुंह से खुशी की एक चीख निकल गई, वे लड़के की गाड़ी दौड़ाते हुए अपने बैठक घर के सामने पहुंचे और दौड़ कर सीढ़ियां चढ़ने बाद कमरे में पहुंचे। पीछे पीछे लड़के की गाड़ी ढकेलते हुए किंग साहब भी पहुंचे।

बटुकचंद ने रोशनी की। किंग साहब ने कहा, "वह बाईं तरफ वाला दराज खोलो।" बड़ी उत्कंठा के साथ बटुकचंद ने दराज खोला, मगर भीतर नोटों का एक भी बंडल न था। बटुकचंद ने इधर उधर देख कर कहा, "कहां ? इसमें तो कोई बंडल नहीं है !!"

ताज्जुब के साथ किंग साहब ने भी आगे बढ़ कर देखा मगर उस दराज में नोट थे ही कहां जो दिखाई पड़ते ! आश्चर्य में डूब कर उन्होंने कहा, "बड़ी विचित्र बात है। मैंने अपने हाथ से दोनों बंडल इसी जगह रक्खे थे।"

इसी समय बटुकचंद की निगाह लाल कागज के एक टुकड़े पर पड़ी जो उसी दराज में पीछे की तरफ पड़ा हुआ था। कांपते हाथों से उन्होंने उसे खोल कर पढ़ा, यह लिखा हुआ था:—

"रक्त मंडल ही के साथ चालाकी!! यह नहीं सोचा कि तुम्हारे ऐसे नौसिखुओं को अभी हम लोग दस बरस तक भरा सकते हैं!!

"बटुकचंद! तुम्हारा एक लाख रुपया तो गया ही, अब तुम अपने लड़के से भी हाथ धो बैठो! हां काश तुम अगर दो लाख रुपया खर्चने पर तैयार हो तो शायद उसे पुनः पा जाओ!!"

"किंग! तुमने नाहक इस मामले में हाथ डाल बटुकचंद का बुरा किया और हम लोगों से भी दुश्मनी खरीदी। तुम्हारी बीबी सुबह से गायब है, जाओ पहिले उसे खोजो!"

इसके नीचे रक्त मंडल का लाल निशान था।

चीठी पढ़ कर बटुकचंद के मुंह से एक चीख निकल गई। उन्होंने कागज किंग साहब के आगे फेंक दिया और दौड़ कर उस गाड़ी के पास गये जिसमें उनका लड़का लेटा हुआ था। लड़के को गाड़ी से उठाते ही सब कलई खुल गई। वह सिर्फ मोम का एक पुतला था जो रंग रंगा कर ठीक उनके

लड़के की सूरत का बना दिया गया था। बटुकचंद फिर एक चीख निकली। यह दोहरी चोट उनका दिमाग सह न सका। वे उसी जगह जमीन पर गि बेहोश हो गये।

"सच्चा नाटक"

(१)

राय बहादुर बाबू नकुलचन्द्र का बड़ा भारी बाग इस समय हजारों रोशनियों से जगमगा रहा है। बीच की आलीशान इमारत तो दिन की तरह चमक रही है।

बाग और इमारत में सैकड़ों आदमियों की भीड़ इधर से उधर घूमती फिरती दिखाई दे रही है और बड़े फाटक पर जिसके ऊपर रोशनी से "स्वागत" लिखा हुआ है सैकड़ों सवारियों की लम्बी कतार जुट रही है। इसके बगल ही में एक दूसरा इससे कुछ छोटा दर्वाजा है जिस पर कई औरतों का गरोह दिख रहा है। मर्दानी सवारियें इस बड़े फाटक पर उतरती हैं और जनानी उस दूसरे पर।

इस जगह के मालिक बाबू नकुलचन्द्र ने इस बार रायबहादुरी पाने की खुशी में आज अपने दोस्तों और मेहरबान अफसरों की दावत की है। केवल उन्हीं की नहीं बल्कि उनकी औरतों और अपनी बेरादरी के औरतों को भी न्योता दिया गया है। नकुलचन्द्र की स्त्री की दौड़ धूप और खुशामद की बदौलत शहर से दूर होने पर भी औरतों की काफी ताद

दाव् आ रही है जिन्हें वे खुद " रिसीव " कर रही हैं और जो उस दूसरे दर्वाजे की राह अलग ही अलग भीतर के महल में पहुँच रही हैं जहां उनके लिये तरह तरह की खातिर के सामान जुटाये गये हैं। मर्दों के बैठने के लिये बाग के बीचो-बीच में एक बहुत बड़ा शामियाना टांगा गया है जिसके नीचे गाने बजाने और भोज की तैयारियां हो रही हैं। चारो तरफ बड़ी चहल पहल, दौड़ धूप और गुलशोर मचा हुआ है जिसके बीच में बाबू नकुलचन्द्र फिरकी की तरह व्यस्त और परेशान घूम रहे हैं।

चारो तरफ जगह जगह लगे हुए और रोशनी से जगमगाते खूबसूरत शामियानों में से एक में हम अपने पाठकों को ले चलते हैं। इसके बीचोबीच में एक संगमर्मर का बड़ा टेबुल है जिस पर लेमोनेड सोडा और अन्य साथिनी बोतलें दिख रही हैं तथा चारों तरफ की कई कुरसियों में से एक पर बनारस के सुपरिंटेन्डेन्ट मि० गिबसन, दूसरे पर रायसाहब बा० बटुक चन्द, तीसरे पर फौज के कप्तान मि० पेन केक और बाकी तीन चार कुरसियों पर और भी कई अफसर और रईस बैठे हुए बातें कर रहे हैं। और तो सभी खुश हैं मगर बाबू बटुकचन्द के चेहरे पर अफसोस की काली छाया पड़ी हुई दिखाई पड़ती है।

अचानक दर्वाजे पर छाया पड़ी और एक नया आदमी भीतर आया। यह गाजीपुर की अफीम कोठी के मैनेजर मि० किंग थे। " ओहो! आप लोग यहां बैठे हैं!" कहते हुए उन्होंने

सभों से हाथ मिलाया और तब बटुकचन्द के बगल की एक कुरसी पर बैठ गये। उसी समय उनकी निगाह बटुकचन्द के उदास चेहरे पर पड़ी और उन्होंने झुक कर धीरे से कहा, "क्यों बटुकचन्द ! तुम इतने उदास क्यों हो ?"

बटुकचन्द ने किंग की तरफ एक विचित्र निगाह डाल कर कहा, "आप तो जानते ही हैं।"

किंग०। वही अपने लड़के के गम में ?

बटुकचन्द ने सिर हिलाया। किंग साहब ने पुनः कहा, "क्या उसका अभी तक पता नहीं लगा ? खैर लगेहीगा इसमें इतना गमगीन होने की क्या बात है ? मुझे देखो, मेरी औरत तब से गायब है, मुझे तुमसे कहीं ज्यादा फिक्र है मगर मैं इस लिये चारो तरफ अफसोसकी बारिश करता तो नहीं चलता !!"

बटुक०। क्या आपकी स्त्री का अभी तक पता नहीं लगा ?

किंग०। नहीं कुछ नहीं, मगर उम्मीद है कि जल्दी ही लग जायगा। गिबसन साहब बहुत कोशिश कर रहे हैं और मैं भी पूरा जोर लगा रहा हूं।

बटुक०। (कुछ ताने के साथ) ठीक है मगर दूसरों के लिये तो उतना जोर नहीं न लगाया जा सकता। मेरा लड़का चाहे मरे चाहे जीये इसकी किसी को क्या परवाह है !!

किंग साहब ने यह सुन तेजी से बटुकचन्द की तरफ देखा और कुछ कहना ही चाहते थे कि उसी समय खेमे के दरवाजे पर कलेक्टर साहब दिखाई पड़े जिनको बा० नकुलचन्द्र बड़ी

तवज्जह और खातिर से बार बार झुकते और सलामें करते हुए अपने साथ ला रहे थे। उन्हें देखते ही सब लोग खड़बड़ कर उठ खड़े हुए। कलेक्टर साहब ने हंसते हुए सब से हाथ मिलाया और दो चार बातें कीं। इसके बाद नकुलचन्द ने नम्रता से कहा, "अगर हुजूर उधर तशरीफ ले चलें तो खेल शुरू कर दिया जाय।"

कलेक्टर साहब चलने को तैयार हो गये और नकुलचन्द इन सभों को लिये हुए उस आलीशान शामियाने की तरफ चले जिसमें एक छोटे थियेटर का स्टेज खड़ा किया गया था तथा जिसके बगल के दूसरे शामियाने में दावत का इन्तजाम किया गया था। थियेटर वाला शामियाना महल के साथ सटा हुआ था और स्टेज इस तरह से खड़ा किया गया था कि महल की खिड़कियों में से, जिन पर चिकें पड़ी हुई थीं, औरतें भी बखूबी तमाशा देख सकें। कलेक्टर साहब के साथ साथ इधर उधर फैले हुए आदमी भी उसी तरफ इकट्ठे होने लगे और फाटक तथा बाग में एक तरह से सन्नाटा हो गया। केवल नौकर सिपाही आदि ही इधर उधर दिखाई पड़ने लगे।

(२)

प्रधान मेहमान (कलेक्टर) के कुर्सी पर बैठते ही थियेटर का पर्दा उठा और खेल शुरू हो गया।

यद्यपि स्टेज छोटा था पर सीन सीनरी सजावट और पोशाकें इतनी तड़क—भड़क की थीं और ऐक्टरों की इतनी बहुतायत थी कि खेल ने तुरत सभी का ध्यान अपनी तरफ़ आकर्षित कर लिया और थोड़ी ही देर बाद पूरी मजलिस खेल देखने में मशगूल हो गई ।

कोई आधे घंटे तक तमाशा होने के बाद पहिला ड्राप-सीन हुआ। लोगों ने थपोड़ी की आवाज से जगह गुंजा दी और कलेक्टर साहब ने झुक कर अपने मेजबान से पूछा, " ये लोग ऐक्टिंग तो अच्छी कर रहे हैं, क्या इन्हें कहीं बाहर से आपने बुलाया है ?" नकुलचन्द्र बोले, "जी हां हुजूर ! आज कोई पन्द्रह दिन हुआ इनका मैनेजर मेरे पास आया और कहने लगा कि "मैंने नई कम्पनी अभी तैयार की है जिसका कोई खेल अभी तक नहीं हुआ।" उसकी इच्छा थी कि मैं कम्पनी की कुछ मदद करूं। मुझे भी आज के लिये किसी शगल की जरूरत थी अस्तु उससे बातचीत करके आज के लिये ठीक कर लिया। मगर इनकी सीन सीनरी सजावट और ऐक्टिंग देख कर विश्वास होता है कि ये लोग जल्दी तरक्की कर जायंगे।" कलेक्टर साहब बोले, "बेशक यही बात मालूम होती है। अगरचे खेल की बातचीत का पूरा मतलब मैं नहीं

समझ सकता हूं फिर भी उठने की तबीयत नहीं करती है। आप की तजवीज बहुत अच्छी हुई इसमें शक नहीं।"

यह तारीफ सुनते ही बा० नकुलचन्द्र फूल कर कुप्पा हो गये और आपने एक लम्बी सलाम अता फरमाई जिसे ग्रेस साहब ने मुस्कुरा कर दूसरी तरफ मुंह फेर लिया। इतने ही में घंटी बजी और लोग पुनः खेल की तरफ आकर्षित हुए। इसी समय थियेटर का मैनेजर एक पात्र के रूप में पर्दे के सामने आया और सलाम कर के बोला, "साहबान! इस दूसरे ड्राप में आप लोगों को एक आग लगने का दृश्य दिखाया जायगा जिसे हम लोगों ने बड़ी मेहनत से तैयार किया है। इसके लिये हम लोगों ने राय बहादुर साहब के महल का एक हिस्सा दखल किया है क्योंकि स्टेज पर आग लगने का सीन दिखाने से खतरा हो सकता था। गुजारिश यही है कि खिड़कियों में से आग की लपटें निकलते और चीख चिल्लाहट की आवाजें सुन कर आप लोग बिल्कुल न घबड़ावें क्योंकि यह सब कुछ बनावटी होगा और सीन हरवक्त हम लोगों के काबू में रहेगा।"

यह कह पुनः सलाम कर वह चला गया और थियेटर का पर्दा उठ कर एक होटल के "डाइनिंग हाल" का दृश्य दिखाई पड़ा। बहुत से लोग छोटे छोटे टेबुलों के चारों तरफ बैठे खा पी रहे थे, महलसे सटे हुए हिस्से की तरफ एक ऊंची बारहदरी सी बनाई गई थी जिसमें गाने बजाने वाले थे तथा जिसके पीछे होटल का पिछला हिस्सा दिखाया गया था। खेल यह दिखाया

गया था कि एक अमीर मुहल्ले के होटल में रात के जब लोग खा पी रहे थे अब डाकुओं ने यकायक हमला किया और लोगोंको लूट लेना चाहा। अस्तु देखते ही देखते यकायक चारो तरफसे बंदूकों और पिस्तौलों की आवाजें आने लगीं और बहुत से भयानक सूरत वाले आदमियों ने आकर होटल में बैठे हुए आदमियों को डराना शुरू किया। होटल के सब आदमी तो डर कर खड़े होगये पर एक कप्तान ने जिसके साथ कुछ फौजी सिपाही भी थे और जो वहीं भोजन कर रहा था डाकुओं का मुकाबला किया और दोनों तरफ से पिस्तौलें चलने लगीं। डाकुओं को मुकाबला होता देख गुस्सा आ गया। उनके दो दल हो गये, एक तो सिपाहियों तथा उन लोगों का मुकाबला करने लगा जिनमें सिपाहियों की हिम्मत ने हिम्मत ला दी थी और दूसरा दल होटल में चारो तरफ आग लगाने लगा। देखते देखते वहां इतना शोर गुल चीख चिल्लाहट और खून खराबा मचने लगा कि नर्क का दृश्य मालूम होने लगा। इसी समय दो तीन डाकू हाथों में जलती हुई मशालें लिये हुए होटल के पिछले हिस्से अर्थात् उस बनावटी बारहदरी में घुसते दिखाई पड़े और इसके साथ ही उधर भी आग लग गई। इसी समय किसी ने होटल की बिजली की रोशनी बुझादी और अब अंधेरे में से चीख चिल्लाहट और पिस्तौलों की आवाजें सुनाई देने तथा आग की लपटें दिखाई पड़ने लगीं। बड़ा भयानक हो हल्ला मच

गया जो इतना जीवित मालूम होता था कि अगर मैनेजर पहिलेही से आ कर दर्शकों को खबरदार न कर दिये होता तो शायद लोग यही समझ बैठते कि सचमुच कोई भयानक दुर्घटना मच रही है। थोड़ी देर बाद स्टेज पर तो कुछ शान्ति हो गई मगर होटल के पिछले हिस्से अर्थात् महल के अन्दर से गुल शोर चीख चिल्लाहट की आवाज आने लगी जिनके साथ मिले हुये तरह तरह के धड़ाके तथा खिड़कियों में से निकलती हुई आग की लपटें बता रही थीं कि डाकू लोग होटल के अंदर घुस कर उपद्रव मचा रहे हैं। कोई पंद्रह मिनट तक यही हाल रहा और तब यकायक स्टेज पर पुनः रोशनी हो गई। मालूम हुआ कि घुड़सवार तथा पैदल पुलिस आग बुझाने वाली कल के साथ आ मौजूद हुई है। पुलिस ने होटल चारो तरफ से घेर लिया और सीढ़ियां लगा लगा कर खिड़कियों की राह भीतर घुसने लगी तथा दमकल आग बुझाने लगी। यह सब कुछ इतना ठीक और दुरुस्त हो रहा था कि दर्शक लोग मुश्किल से विश्वास कर सकते थे कि वे एक भयानक दृश्य नहीं देख रहे हैं बल्कि थियेटर का एक सीन देख रहे हैं। खिड़कियों की राह असबाब का फेंका जाना, आदमियों का कूदना आदि बिल्कुल स्वाभाविक सा मालूम होता था। धीरे धीरे आग कब्जे में आ गई, शोरो गुल भी कम हो गया, और अपेक्षा कृत शान्ति के बीच में होटल के भीतर से कोई आठ दस डाकू हथकड़ी बेड़ी से जकड़े

निकाले गये जिनके पीछे पीछे उनके लूटे हुए सामान को उठाये कुछ लोग थे तथा आगे पीछे पुलिस थी। दर्शकों की थपोड़ी की आवाज़ के बीच में पुलिस इन डाकुओं को पकड़ कर ले गई और मानों दर्शकों की पसंद के लिये उन्हें धन्यवाद देने के लिये पुलिस का सार्जेंट दर्शकों को एक लम्बी सलाम करता गया। स्टेज पर एक दम सन्नाटा हो गया तथा पर्दा गिर गया।

कलेक्टर साहब ने माथे पर हाथ फेरते हुए सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब की तरफ देख अंगरेज़ी में कहा, "इन लोगों की ऐक्टिंग हैरत अंगेज़ है! सचमुच मालूम होता था मानों हम लोग कोई दुर्घटना देख रहे हैं। गजब का काम इन लोगों ने किया है!!"

सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब ने कहा, "बेशक ऐसी ही बात है। मैंने एक दफा कलकत्ते में आग लगते हुए देखा था। ठीक वही दृश्य था जो इस जगह दिखाई पड़ा।"

मि० किंग जो उन के बगल में बैठे हुए थे बोल उठे, "ठीक है मगर अब स्टेज ऐसा खाली क्यों पड़ा हुआ है? इतनी देर तक खाली पर्दा पड़ा रहना तो अच्छी ऐक्टिंग नहीं कहला सकती।"

इतने ही में मि० गिब्सन ने ताज्जुब से कहा, "हैं! फाटक पर वे कौन लोग दिखाई पड़ रहे हैं? वे ही कैदी और सिपाही मालूम होते हैं जो अभी स्टेज पर से गए हैं।"

सब लोग उसी तरफ देखने लगे और कइयों के मुँह से निकला, "बेशक वे ही तो मालूम होते हैं! मगर ये लोग स्टेज छोड़ कर बाग के बाहर क्यों जा रहे हैं!!"

कई बोल उठे, "स्टेज पर तो ऐसा सन्नाटा है मानो वहां कोई आदमी ही नहीं है। आखिर यह मामला क्या है?"

तरह तरह की ताज्जुब की बातें लोग करने लगे मगर कुछ निश्चय नहीं हो सका कि यह क्या हो रहा है। कैदी तथा सिपाही लोग फाटक पार कर के बागीचे के बाहर हो गये पर स्टेज पर से कोई आहट न मिली। दर्शक लोग ताज्जुब से एक दूसरे का मुँह देखने लगे। आखिर नकुल चन्द्र से न रहा गया और वे अपनी कुर्सी पर से उठ कर स्टेज पर पहुँच कर उस पर्दे के पीछे पहुँचे जो आग और खून खराबे के दृश्य पर गिरा दिया गया था।

यकायक उनके जोर से चीखने और तब एक "हाय" करके धमाके के साथ जमीन पर गिरने की आवाज सुनाई पड़ी जिसे सुनते ही बहुत से आदमी "क्या हुआ? क्या हुआ?" कहते हुये लपक कर उनके पास जा पहुंचे। देखा कि टूटे फूटे कुर्सी मेज और सन्दूकों के ढेर के बीच में बा० नकुलचन्द्र बेहोश पड़े हुए हैं और उनके हाथ में लाल कागज का एक टुकड़ा दबा हुआ है। कुछ लोग उन्हें होश में लाने की फिक्र करने लगे मगर बा० बटुकचन्द्र ने आगे बढ़ कर उनके हाथ का पुर्जा खींच लिया और उसे पढ़ा, पढ़ते ही उनके मुंह से भी एक चीख की आवाज निकल गई और वे भी बदहवासों की तरह जमीन पर बैठ गये। जब कलेक्टर साहब ने उनके पास आकर पूछा, "क्या हुआ बटुकचन्द्र! इस पुर्जे में क्या

है' तो उन्हें होश हुआ और उन्होंने पुर्जा साहब की तरफ बढ़ाया। कलेक्टर साहब ने पुर्जा पढ़ा। यह लिखा हुआ था:—

"रक्त मंडल ने एक बड़ा भारी काम अपने सिर उठाया हुआ है जो है—स्वदेश को जुल्मियों के पंजे से छुड़ाना। इसके लिये सब से बड़ी जरूरत रुपै की है मगर अफसोस कि जिसके पास रुपै हैं वे इस काम में खर्च करने को तैयार नहीं हैं। लाचार होकर हमें जबर्दस्ती करनी पड़ती है और जिस तरह, जहां से, और जैसे मिलता है, रुपया लेना पड़ता है।

"आज का अच्छा मौका हम लोग किसी तरह छोड़ नहीं सके। महल में जितनी औरतें थीं उनके जेवर हम ले जा रहे हैं रायबहादुर नकुलचन्द्र को रायबहादुरी मिली है इस खुशी में उन्हें सबसे अधिक देना चाहिये अस्तु हम उनका खजाना भी लेते जा रहे हैं।"

इतना ही उस चीठी का मजमून था और उसके नीचे एक बड़ा सा लाल धब्बा पड़ा हुआ था जो खून की तरह मालूम होता था और जिसके बीच में चार उंगलियों के निशान पड़े हुए थे।

इस चीठी ने थोड़ी देर के लिये कलेक्टर साहेब के भी होश गुम कर दिये मगर उन्होंने बहुत जल्द अपने को सम्हाला और सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब से कुछ बातें करके अंदर महल की तरफ बढ़े। बाग के सिपाही और सब नौकर चाकर जो मामला गड़-बड़ देख वहां आ जुटे थे तथा बहुत से दर्शक भी उनके साथ

साथ चले मगर उन्होंने सभों को फाटक पर ही रोक दिया और केवल मुख्य मुख्य आठ दस आदमी भीतर घुसे।

महल के भीतर पहुंचते ही वहाँ अद्भुत दृश्य नजर आया। कई नौकर और मजदूरनियां जिनके हाथ पैर बंधे हुए थे तथा मुंह में लत्ते ठूंसे हुए थे चौक में खंभों के साथ बंधे हुए थे तथा एक बड़ी कोठड़ी के अन्दर बहुत सी औरतें बदहवास पड़ी हुई थीं। कुछ औरतें अब कुछ कुछ होश में आ रही थीं तथा कुछ एक कमरे के अन्दर बंद रो रही थीं। नकुलचन्द के खजाने वाले तहखाने का दर्वाजा टूटा पड़ा था और बहुत से संदूक वहां टूटे फूटे इधर उधर बिखरे हुए थे। चारो तरफ तरह तरह के टूटे फूटे और अधजले सामान फैले थे जिससे मालूम होता था कि लुटेरों ने पूरी तरह उस जगह को लूटा है।

कलेक्टर साहब ने उन नौकर मजदूरनियों को खोलने का हुक्म दिया और जब वे सब छूटे तो उनसे सब हाल पूछा। जो कुछ उनकी घबड़ाई और डरी हुई बातों से मालूम हुआ वह यह था कि जब थियेटर में लूट मार और आग का दृश्य दिखाया जा रहा था तो सभी मेहमान तथा घर की औरतें इसी तरफ आकर तमाशा देखने लगी थीं उसी समय कई आदमी हाथ में मशालें लिये खिड़कियों की राह मकान में चढ़ आये। हम लोग समझते थे कि यह सब खेल हो रहा है इससे उन लोगों को रोका नहीं अस्तु वे लोग बीच महल में आ पहुंचे जहां उन्होंने किसी तरह का मसाला जलाया जिससे बहुत

धूंआ पैदा हुआ और सभों की तबीयत बेचैन हो गई तथा सिर घूमने लगा। इतने ही में वे लोग बन्दूक पिस्तौलें लिये औरतों के पास पहुंचे और धमका कर बोले, "बस चुपचाप अपने अपने जेवर उतार उतार कर दे दो ! जरा भी चूं चपड़ किया तो गोली मार देंगे !!" बेचारी औरतें क्या कर सकती थीं। महल भर में वे लोग फैले हुए थे, फिर भी दो एक ने जो शोर मचाया तो बेदर्दी के साथ उन हत्यारों ने उन्हें मार पीट कर सब जेवर उतार लिये। लाचार सभों ने अपने अपने जेवर उतार कर दे दिये। इस बीच में जो धूंआ चौक में हो रहा था उसने तबीयत एक दम खराब कर दी और सब लोग बेहोश हो गये। जो कुछ होश में रह गये उनकी यह गति की गई जो आप देख रहे हैं। इसके बाद उन लोगों ने तहखाने का दर्वाजा तोड़ कर खजाना लूट लिया और फिर सब के सब चले गये।

यह विचित्र हाल सुनते ही सभों के होश दंग हो गये। इतने भयानक काम की कभी वे लोग संभावना भी नहीं कर सकते थे। यद्यपि उन लोगों को गये हुए देर हो गई थी पर फिर भी सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब ने बहुत से आदमियों और सिपाहियों को ले बाग के बाहर निकल उनका पीछा किया और इधर कलेक्टर साहब ने और लोगों की मदद से बेहोश औरतों को होश में लाने और उनका इजहार लेने का काम शुरू किया।

* * * * * * *

दौड़ धूप खोज परेशानी में सुबह हो गई मगर उन लुटेरों का कुछ पता न लगा। हां यह सभों को मालूम हो गया कि महल में जितनी औरतों के बदन पर जो कुछ भी जेवर था वह सब लूट लिया गया और उसके साथ साथ नकुलचन्द्र के खजाने में भी एक पाई न छोड़ी गई। सब मिला कर कोई दस लाख रुपै की जमा लेकर रक्त मंडल के सदस्य ऐसा गायब हुए कि सब लोग सिर पीटते ही रह गये और उनकी धूल भी न मिली। तमाशा देखने और सैर का मजा लेने जो मर्द और औरतें वहां आई थीं वे लुट लुटा कर रोती पीटती घर लौटीं मगर नकुलचन्द्र वहीं रह गये। उनका जो नुकसान हुआ था वह इतना भारी था कि वे पागल से हो गये थे और इस लायक नहीं रह गये थे कि अपनी जगह से हिलते।

बिजली की तरह यह खबर चारों तरफ दूर दूर तक फैल गई और देखते देखते महामारी की तरह "रक्तमण्डल" का नाम चारों तरफ गूंज उठा मगर कोई भी नहीं जानता था कि यह क्या बला है और इसके कार्य्यकर्ता कौन कौन से लोग हैं। हां इस मंडल का डर सभों और विशेष कर अमीरों के दिल में बैठ गया और सभी को अपनी अपनी जान और दौलत बचाने की फिक्र पड़ गई।
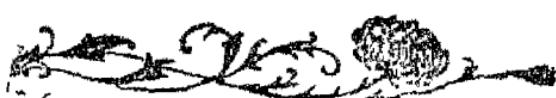
" हाथियों की टक्कर "

(२)

एक बहुत बड़े बंगले के ड्राइङ्ग रूम में जो बिल्कुल अंग-रेजी किते से सजा हुआ है हम अपने पाठकों को ले चलते है। यह बंगला और वह आलीशान बाग जिस में यह बंगला बना है प्रसिद्ध विद्वान और पर्यटक पंडित गोपालशंकर का है जिन्होंने कई लाख रुपया लगाकर इसे बनवाया है। इस समय पण्डित गोपालशंकर अपने ड्राइंग रूम में बैठे हुए एक अखबार पढ़ रहे हैं तथा साथही साथ उस मोटे सिगार का धूंआ भी फेंक रहे है जो उनके होठों के बीच में दबा हुआ है।

अखबार पढ़ते हुए यकायक गोपालशंकर * चिहुंक उठे और कुर्सी की पीठ का ढासना छोड़ तन कर बैठ गये। उन्होंने कोई ऐसी खबर पढ़ी थी जिसने उन्हें हैरत में डाल दिया था। उन्होंने एकबार फिर उस समाचार को पढ़ा और तब नौकर को बुलाने वाली घंटी की तरफ हाथ बढ़ाया ही था कि बाहर की बरसाती में एक मोटरकार के आकर खड़े होने की आवाज सुनाई

---

* गोपालशंकर का विचित्र हाल जानने के लिये "काल्पंरा" नामक उपन्यास देखिये।

पड़ी जिससे उन्होंने घूमकर देखा और साथ ही न जाने क्यों उनका चेहरा एक बार जरा देर के लिये लाल हो गया।

बड़े दरवाजे के शीशों की राह गोपालशंकर ने देखा कि मोटर में से एक अङ्गरेज और एक लड़की उतरी और कमरे की तरफ बढ़ी। उन्हें देखते ही गोपालशंकर भी फुर्ती से उठ खड़े हुए और जबतक नौकर उन दोनों के आने की खबर करे उसके पहिले ही वे दर्वाजे पर पहुंच गये। दोनों को उन्होंने बड़े आदर से लिया और हाथ मिला कर कमरे के अन्दर ले आये।

ये आने वाले यहां के पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट मि० केमिल और उनकी लड़की मिस रोज थे जिनसे पं० गोपालशंकर से बड़ी पुरानी जान पहिचान और बहुत गहरी दोस्ती थी। मि० केमिल की बदली यहां से बनारस के लिये हो गई थी और ये दो ही एक रोज में अपनी नई ड्यूटी पर जाने वाले थे। इस समय अपने दोस्तों से भेंट मुलाकात करने मि० केमिल निकले थे परन्तु इनके चेहरे पर चिन्ता की एक झलक थी जिसे चतुर गोपालशंकर ने पहिली ही निगाह में देख लिया और मामूली बात चीत के बाद कहा, "आज आप के चेहरे से कुछ बेचैनी जाहिर हो रही है, क्या कोई नई बात हुई है?"

केमिल साहब कुछ रुकते हुए बोले, "हां कुछ तो जरूर हुई है! गाजीपुर में मेरे एक दोस्त मि० किंग रहते हैं। उनकी एक चीठी आज आई है जिसमें उन्होंने लिखा है कि आज कई दिनों से उनकी स्त्री मिसेज किंग का पता नहीं लग रहा

है उनका संदेह है कि उसी रक्त मण्डल वाले शैतानों की यह कार्रवाई है जिन्होंने अफीम की कोठी बन्द करने को लिखा था।

गोपाल०। वही रक्त-मण्डल जिसने उस दिन बनारस के किसी रईस की महफिल लूट ली थी ?

केमिल०। हां वही। ये लोग बड़े शैतान मालूम होते हैं और इनका जाल बहुत दूर दूर तक फैला हुआ जान पड़ता है।

गोपाल०। रक्तमंडल ! रक्तमंडल !! यह नाम कुछ परिचित सा मालूम पड़ता है, जरूर पहिले कभी इसे सुना है पर ख्याल नहीं पड़ता। खैर तो मिसेज किंग को गायब हुए क्या बहुत दिन हो गये हैं ?

केमिल०। हां और उन्हें इस रक्तमंडल वालों की तरफ से कई धमकी की चीठियां भी मिल चुकी हैं जिनमें लिखा है कि अगर वे अफीम की कोठी बंद न कर देंगे तो उनकी बीबी जान से मार दी जायगी !!

गोपाल०। (गुस्से से) पाजी ! शैतान !! स्त्री पर जुल्म ! नीचता की हद्द है !!!

गोपाल शंकर की बात जो बहुत धीरे स्वर में कही गई थी केमिल साहब ने नहीं सुनी थी अस्तु वे कहते गये—

केमिल०। जान पड़ता है कि यह रक्तमंडल मुझे बहुत कुछ तकलीफ देगा। पिछले कुछ ही दिनों में तीन घटनाएं इनके सबब से बनारस में हो चुकी हैं। मगर मुझे उम्मीद है कि अगर जरूरत पड़ी तो आप मुझे जरूर मदद देंगे।

गोपाल०। हां हां मैं हमेशा अपने भरसक आपकी मदद करने को तैयार रहूंगा मगर अफसोस तो यही है कि मेरा यहां रहना अब ज्यादे दिनों के लिये नहीं है।

केमिल०। सो क्या? आप क्या कहीं जा रहे हैं?

गोपाल०। हाँ मैं एक महीने के अन्दर ही हिमालय की सैर करने को रवाना हो जाऊंगा। मैं बहुत दिनों से वहां जाने का विचार कर रहा था पर मौका नहीं मिलता था। अब इस बार नैपाल दरबार की तरफ से मुझे बुलावा मिला है और मैं यह मौका छोड़ना नहीं चाहता।

रोज जो अब तक चुप बैठी थी बोल उठी, "नैपाल दरबार ने आपको क्यों बुलाया है?"

गोपाल०। अपने रियासत के कुछ प्राचीन खंडहरों की जांच के लिये तथा यह भी देखने के लिये कि उनके राज्य में कहीं मिट्टी के तेल वगैरह की खान है या नहीं, हां खूब ख्याल आया—नैपाल दरबार ने दो चार विचित्र जानवर मेरे चिड़िया-खाने के लिये भेजे हैं। क्या आप उन्हें देखेंगी?

रोज०। (खुशी से) हां जरूर!

तीनों आदमी उठ खड़े हुए और कमरे के बाहर निकले। गोपालशंकर को चिड़ियाओं और जानवरों का बहुत शौक था और उन्होंने बड़े खर्च से बहुत दूर दूर के पशु पक्षी मंगा कर अपने बाग के चिड़िया खाने में इकट्ठे किये थे। इसके लिये उन्होंने अपने बड़े बाग का एक काफी हिस्सा जिसमें नकली

पहाड़, नाले, तालाब, आदि सभी कुछ थे अलग कर दिया था और उसे बहुत शौक से अपने दोस्तों को दिखाया करते थे। इस समय ये मि०केमिल तथा मिस रोज को लिये उसी तरफ चले।

न जाने कब से एक आदमी कमरे के भीतर एक पर्दे की आड़ में छिपा खड़ा था। इन लोगों के जाते ही वह आड़ से बाहर निकला और बीचोबीच में रक्खे टेबुल के पास आया। उस आदमी के हाथ में एक लिफाफा था जिसे उसने टेबुल पर रख दिया और उसके ऊपर एक छोटी खुखड़ी जो उसके कपड़ों में छिपी हुई थी गाड़ दी। उसके बाद वह कमरे के दर्वाजे के पास आया और इधर उधर देख तथा सन्नाटा पा कमरे के बाहर निकल गया। पेड़ों की आड़ देता और लोगों की निगाह बचाता हुआ वह बंगले के पीछे की तरफ चला गया और किसी तरफ को निकल गया।

(२)

लगभग आध घंटे के बाद मिस्टर और मिस केमिल को बिदा कर गोपालशंकर अपने कमरे में वापस लौटे। इस समय उनका चेहरा हँस रहा था और उनके होठों पर एक गीत था पर कमरे के अंदर पैर रखते ही उनकी निगाह टेबुल पर गड़ी भुजाली पर पड़ी जिसे देखते ही उनका गीत उनके होठों ही पर रुक गया। वे झपट कर टेबुल के पास आये और उस खुखड़ी तथा चीठी को देखने लगे। न जाने क्यों उनका दिल किसी अनजानी मुसीबत की बात सोच कर कांप उठा।

कुछ देर तक वे एक टक उन दोनों चीजों को देखते रहे और तब उन्होंने उस गड़ी हुई भुजाली को टेबुल से उठाने के लिये हाथ बढ़ाया पर न जाने क्या सोच कर रुक गये और वहां से हट कर कमरे के चारो तरफ घूमने लगे। हर एक खिड़की दरवाजे और पर्दे को उन्होंने देख डाला पर कहीं किसी आदमी की सूरत दिखाई न पड़ी पर इससे उनके मुख पर नाउम्मेदी की कोई झलक दिखाई न पड़ी, शायद वे पहिले ही से सोचे हुये थे कि जिसका यह काम है वह अब तक यहां बैठा न होगा। कमरे की जांच पूरी कर वे बाहर निकले और अपने नौकर को बुला कर उन्होंने पूछा, "क्या मेरे जाने बाद कोई आदमी इस कमरे में आया था?" उसने जवाब दिया, "जी कोई नहीं?" गोपालशंकर ने फिर पूछा, "तुम या और

नौकरों में से भी कोई नहीं आया?" वह बोला, "जी कोई नहीं, हम सभी लोग वह नई आलमारी ऊपर वाले कमरे में रखने में लगे हुए थे।" यह सुन गोपालशंकर ने फिर कुछ नहीं पूछा और आदमी को बिदा कर कमरे के अन्दर लौट आये।

टेबुल के पास जा कर उन्होंने खुखड़ी को टेबुल से अलग किया जिसकी नोक एक इन्च से ज्यादा लकड़ी में धंसी हुई थी और कुछ देर तक बड़े गौर से उसे देखते रहे। छोटी होने पर भी वह खुखड़ी बहुत सुन्दर बनी हुई थी और उसका फौलादी लोहा बहुत ही अच्छे पानी का था। उसकी बेंट हाथीदांत की बनी थी और उस पर बहुत उम्दी नक्काशी का काम बना हुआ था जिसे देख गोपालशंकर ने धीरे से कहा, "खास काठमांडू की बनी चीज है।"

भुजाली को एक बगल रख अब इन्होंने उस चीठी को उठाया जो उसके नीचे गाड़ दी गई थी। चीठी लाल रंग के लिफाफे के अंदर थी जिस पर किसी का नाम न था। लिफाफा फाड़ने पर अंदर से लाल ही कागज की एक चीठी निकली जिस पर लाल स्याही से कुछ लिखा हुआ था। लाल कागज पर लाल ही स्याही होने के कारण हरूफ साफ साफ पढ़े नहीं जाते थे फिर भी गोपालशंकर ने मतलब निकाल ही लिया। चीठी का मजमून यह था:—

"गोपालशंकर!

हम लोग तुम्हें बहुत दिनों से जानते हैं, बल्कि बेशक सर-

कार की मदद करते रहने पर भी हम लोगों ने तुम्हें अभी कुछ नहीं कहा क्योंकि हमलोग जानते हैं तुम बड़ेही भारी विद्वान हो और हिन्दुस्तान तुम्हें इज्जत की निगाह से देखता है।

"मगर हम लोगों ने सुना है कि तुम नैपाल जा रहे हो। किस काम से जाते हो यह हमें बखूबी मालूम है इसी से यह चीठी लिख कर तुम्हें होशियार करते हैं कि तुम अपना खयाल छोड़ दो वरना तुम्हारे लिये ठीक न होगा।

"तुम्हें चाहे यकीन हो या न हो पर हम लोग ठीक कहते हैं कि जो कुछ हम लोग कर रहे हैं वह अपने देश के फायदे के लिये ही कर रहे हैं। हम लोगों के काम में रुकावट डालने वाला चाहे कितना ही विद्वान क्यों न हो पर देश का दुश्मनही कहलावेगा और उसे इस दुनियां से उठा देना ही मुनासिब होगा। इसी से तुम्हें खबरदार करते हैं कि हम लोगों के मामले में दखल न दो और न झूठ मूठ अपनी जान के ग्राहक बनो। याद रक्खो कि जो भुजाली आज तुम्हारे टेबुल पर गड़ी है उसी को तुम किसी दिन अपनी छाती में गड़ी पाओगे अगर हम लोगों का हुक्म न मानोगे। होशियार, होशियार!!"

इसके नीचे किसी का दस्तखत न था पर एक बड़ा सा लाल धब्बा बेशक दिखाई पड़ता था जो देखने में खून के दाग की तरह मालूम होता था और जिसके बीच में चार उंगलियों का निशान साफ मालूम पड़ रहा था।

अपनी जिन्दगी में गोपालशंकर ने हजारों ही दफे खतरे

के काम किये थे और सैकड़ों ही धमकी की चीठियाँ ये पा चुके थे जिन पर सरसरी की एक निगाह से ज्यादा ने कभी डालते न थे मगर न जाने क्यों इस चीठी को उन्होंने इस नाकदरी की निगाह से नहीं देखा। इसके पढ़ते ही उनके माथे पर सिकुड़न पड़ गई और वे कुछ तरद्दुद के साथ बोले, "खून की बूंद पर "भयानक चार" का निशान चार उंगलियें! हिन्दुस्तान के सब से जबर्दस्त गरोह का निशान!! यह मामूली मामला नहीं है!! खूब सोच विचार के कोई बात ठीक करनी पड़ेगी।"

चीठी लिये हुए वे एक कुरसी पर जा बैठे और आंखें बंद कर बड़े गौर से कुछ सोचने लगे। आध घंटे से ऊपर इसी तरह बीत गया और इस बीच में उनके चेहरे ने तरह तरह के रंग बदले मगर हम कुछ भी नहीं कह सकते कि उनके दिल में इतनी देर तक क्या क्या बातें घूमती रहीं या उन्होंने क्या तय किया। पर काम का कोई ढंग उन्होंने जरूर ठीक कर लिया था यह मालूम होता था क्योंकि इसके बाद वे कुरसी पर से उठे और उस चीठी और भुजाली को लिये हुए कमरे के बाहर हो कर ऊपरी मंजिल के एक दरवाजे के पास आ खड़े हुए जो बंद था। कमर से एक गुच्छा निकाल कर उन्होंने ताला खोला और दर्वाजे के अन्दर जा कर पुनः भीतर से बंद कर लिया। ताला इस तरह से जड़ा हुआ था कि वही ताली भीतर बाहर दोनों तरफ से काम देती थी। दरवाजे के आगे

पर्दा खींच दिया और तब एक खिड़की खोल दी जिससे इस कमरे में बखूबी रोशनी फैल गई।

यह बड़ा कमरा आधा लेबोरेटरी और आधा लाइब्रेरी के ढंग का था। एक तरफ तो दीवार के साथ बहुत सी आलमारियों की कतार थी जिसके अंदर तरह तरह की बड़ी छोटी रंगीन और सादी बोतलों में तरह तरह की चीजें रक्खी हुई थीं और सामने कई बड़े टेबुल थे जिन पर तरह तरह के विचित्र यंत्र और औजार रक्खे हुए थे तथा दूसरी तरफ जमीन से लेकर छत तक टांड़े बनी हुई थीं जिसमें हजारों किताबें रक्खी हुई थीं। सामने एक गोल टेबुल और कई कुर्सियां पड़ी हुई थीं। इस वक्त गोपालशंकर इसी हिस्से की तरफ बढ़े और एक टांड़ के सामने जाकर खड़े हो गये। इसके किसी गुप्त हिस्से को अंगूठे से दबाते ही एक हिस्सा घूम कर अलग हो गया और पीछे दीवार में जड़ी एक लोहे की आलमारी दिखाई दी जिसमें ताली लगाने की कोई जगह दिखाई नहीं पड़ती थी। किसी तरकीब से गोपालशंकर ने इस आलमारी को खोला और उसके भीतर से एक मोटी सी किताब निकाली जिसे टेबुलपर रखके पन्ने उलटने लगे।

पन्ने उलट पलट करते हुए एक जगह पहुँच कर गोपालशंकर रुके और एक कुर्सी खींच कर उस पर बैठ कर गौर से वहां पर पढ़ने लगे। ऊपर की तरफ कुछ मोटे हरफों में लिखा हुआ था—"रक्तमण्डल" और उसके नीचे बहुत ही बारीक बारीक अक्षरों में यह लिखा हुआ था:—

"यह बलवाइयों के एक गरोह का नाम था। इसके सब मेम्बर लाल कपड़ा पहिनते और मुर्दे की खोपड़ी और ताजे कटे हुए भैंसे के सर पर हाथ रख कर कसम खाते थे * कि 'उनकी जाति अब हिन्दी हुई और उनकी जान माल का मालिक रक्तमंडल हुआ।' हिन्दुस्तान को जिस तरह से हो सके स्वतंत्र करना उनका मुख्य उद्देश्य था। इनके चार मुखिया थे जो अपने को भयानक चार कहते थे। इन लोगों ने सन् १८— के लगभग बहुत जोर बांधा था यहां तक कि सरकार भी इनसे घबड़ा गई थी। हिन्दुस्तान भर में इसकी शाखें थीं। अंत में फतेहउद्दीन, रघुवरसिंह और कई होशियार जासूसों की मेहनत से इसका भंडा फूटा और इसके कई मुख्य काम करने वाले पकड़े गये तब से यह कमेटी टूट गई और फिर कभी इसने सरकार को तंग नहीं किया मगर यह न मालूम हुआ कि इनके मुखिया वे भयानक चार भी मारे गये या कहीं निकल गये।"

इसके नीचे पतले अक्षरों में और भी कुछ बातें लिखी हुई थीं जिन्हें गोपालशंकर सरसरी निगाह से पढ़ गये और तब किताब बंद कर उसी स्थान में रख देने बाद वे कमरे के बाहर चले आये। दरवाजे में ताला बंद कर दिया और नीचे उतर गये।

---

* रक्तमंडल का पहिला हाल और "भयानक चार" के भयानक कामों का पूरा परिचय जानना हो तो प्रतिशोध नामक उपन्यास पढ़िये।

(३)

अपनी मुलाकातों से छुट्टी पा मिस्टर केमिल घर वापस लौटे और भोजन करने बाद नौकरों से असबाब इत्यादि बंधवाने की फिक्र में लगे क्योंकि इन्हें दो ही एक रोज में बनारस के लिये रवाना होना था। इनकी स्त्री और लड़की भी अपने अपने असबाब के फेर में पड़ी हुई थी।

लगभग दो घंटे के बाद केमिल साहब को कुछ फुरसत मिली और वे इतना मौका पा सके कि अपने बंगले के बरामदे में आराम कुर्सी पर पड़ कर अखबार पढ़ते हुए एक सिगार का लुत्फ ले सकें। उन्होंने ताजा अखबार उठा लिया और फका-फक धूंआ उड़ाते हुए उसके पेजों पर सरसरी निगाह डालने लगे। यकायक एक समाचार की मोटी हेडिंग ने उनका ध्यान आकर्षित किया। वह समाचार यह था:—

"वैज्ञानिकों में हलचल !!"

"बेतार की तार बंद !!!"

"दो रोज से भारत के बेतार की तार के सब यंत्र बेकार पड़े हुए हैं। दिल्ली आगरा, इलाहाबाद, बंबई, कलकत्ता लाहौर, कहीं का कोई भी यंत्र न तो कहीं समाचार भेज सकता है न कहीं का समाचार ले रहा है। यंत्रों में कहीं कोई खराबी नहीं है। वैज्ञानिक परेशान हैं क्योंकि इसका कोई सबब मालूम नहीं होता। लोगों में तरह तरह के खयाल फैल रहे हैं। कुछ का

कहना है कि मंगल ग्रह वालों ने कोई कार्रवाई की है और कुछ समझते हैं कि पृथ्वी पर बिजली का बड़ा भारी तूफान आया हुआ है जिसने बेतार के तार के सब यंत्र बेकार कर दिये हैं। अभी तक कुछ भी ठीक नहीं हो पाया है।"

यही समाचार था जिसने सुबह गोपाल शंकर को ताज्जुब में डाल दिया था। इस समय केमिल साहब को भी इसे पढ़ कर बड़ा ताज्जुब हुआ और वे मन ही मन बोले, "आज शाम को मौका मिला तो कप्तान रूथी से मिल कर पूछूंगा कि यह क्या मामला है?"

कप्तान रूथी बेतार की तार के बड़े भारी जानकार थे और आगरे के सरकारी बेतार की तार के संबंध में कुछ नई मशीनें बैठाने के लिये आज कल यहीं आये हुए थे। इनसे और मि० केमिल से बड़ी दोस्ती थी क्योंकि दोनों विलायत में एक ही स्कूल में पढ़े हुए थे।

मि० केमिल ने फिर अखबार उठाया ही था कि उनकी कान में मोटर की आवाज आई जो अभी अभी उनके फाटक पर आकर खड़ी हुई थी और उस पर से एक आदमी उतर कर तेजी से इनकी तरफ आ रहा था। केमिल साहब ने पहिचाना कि ये आगरे के प्रसिद्ध मगर सूम अमीर बा० गोपाल-दास हैं। "यह इस वक्त क्यों आ रहे हैं?" कहते हुए केमिल साहब उठे और दो एक कदम आगे बढ़े, तब तक गोपाल दास भी आ पहुंचे। केमिल साहब ने उनसे हाथ मिलाया और कुर्सी

पर बैठाते हुए कहा, "बाबू गोपाल दास! इस बेमौके कैसे आना हुआ?"

गोपाल दास ने जिनके चेहरे से तरद्दुद और घबराहट बरस रही थी बेचैनी के साथ डरते हुए चारो तरफ देखा और एक लम्बी साँस लेकर कहा, "केमिल साहब! मैं बड़े भारी तरद्दुद में पड़ कर आपके पास आया हूं।"

मिष्टर केमिल ने कहा, "सो क्या? मुझे बताइये, मुझसे जो कुछ हो सकेगा मैं हमेशः करने को तैयार हूं।"

यह सुन गोपाल दास ने अपनी जेब से एक लाल कागज का टुकड़ा निकाला और केमिल साहब के सामने रख कर कहा, "मेरी घबराहट का यही सबब है।"

केमिल साहब ने वह पुर्जा उठाया और पढ़ा, लाल कागज पर लाल ही स्याही से मगर मोटे मोटे हरफों में यह लिखा हुआ था:—

"गोपालदास!

तुमने शैतानी और सूमड़ेपन कि बदौलत बहुत सा रुपया इकट्ठा किया है। यह दौलत तुम्हारे लिये बिल्कुल बेकार है क्यों कि तुम्हें कोई लड़का बाला भी नहीं है जो तुम्हारे बाद तुम्हारे धन को भोगे। इस लिये तुम्हें मुनासिब है कि अपना रुपया किसी अच्छे काम में खर्च करो। हम लोग देश को स्वाधीन बनाने की कोशिश कर रहे हैं और तुमसे मदद की उम्मीद रखते हैं। हमें विश्वास है कि आज से तीन दिन

के भीतर तुम हम लोगों को एक लाख रुपया दे कर देश का उपकार करोगे। आज के तीसरे दिन आधी रात को अपने सोने वाले कमरे की खिड़की से ऊपर से गिरा देने से रुपया हमें मिल जायगा।

"खबरदार! अगर तुमने रुपया नहीं दिया तो तुम्हारी खैर नहीं है!! यह भी ख्याल रखना कि पुलीस को हमारा हाल न मालूम होने पावे। अगर तुम ने पुलीस को खबर की तो उसी दिन मार डाले जाओगे!!"

यही उस चीठी का मजमून था और इसके नीचे एक बड़ी सी लाल बूंद की तरह का निशान बना हुआ था जिस पर चार उंगलियों का दाग था। इसे देखते ही केमिल साहब पहिचान गये कि रक्तमण्डल के " भयानक चार " का मशहूर निशान है। न जाने क्यों चीठी पढ़ और निशान देख कर एक बार केमिल साहब घबरा गये मगर तुरन्त ही उन्होंने अपने को काबू में किया और गोपालदास से बोले, "यह चीठी आपको कब मिली है?"

गोपाल०। बस आज ही मिली है। कोई आधा घन्टा हुआ होगा। चीठी पढ़ते ही मैं इतना घबराया कि सीधा आप के पास दौड़ा आया हूं। यह किसकी चीठी है और यह निशान कैसा है यह सब मुझे कुछ नहीं मालूम मगर मेरा दिल कह रहा है कि इसके लिखने वाले बड़े खराब आदमी हैं और मुझे तकलीफ पहुंचाने का उन्होंने कस्द कर लिया है।

केमिल० मैं इस निशान को पहिचानता हूं। यह एक शैतानों के गरोह का निशान है जो बड़े ही दुष्ट और लालची हैं।

गोपाल०। (रोने स्वर से) तो हुजूर मेरी जान इन बद-माशों से बचाइये! मुझे बस आपही का भरोसा है!!

केमिल०। घबड़ाइये नहीं, घबड़ाइये नहीं! ये लोग आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकते, आप बेफ़िक्र रहें, मैं आपकी हिफा-जत का पूरा बन्दोबस्त कर दूंगा और इन कम्बख्तों को पकड़ने का भी उपाय करूंगा।

गोपाल०। जी हां हुजूर! बस कुछ ऐसा कर दीजिये कि इस ढली उमर में मेरी गाढ़े पसीने की कमाई इन पाजियों के हाथ में न पड़ने पावे और मैं गरीब मुफ्त में न सताया जाऊं; मैंने जब से चीठी पाई है मेरा जी बेतरह घबड़ा रहा है, कभी मन में आता है कि शहर छोड़ कर चला........

केमिल०। नहीं नहीं आप बिल्कुल घबड़ाइए नहीं यह लोग कुछ कर नहीं सकेंगे। आप बेफिक्री से घर जाकर रहें मैं अभी कोतवाल साहब को लिख कर आपका इन्तजाम कर देता हूं। एक सिपाही बराबर आपके मकान के इर्दगिर्द पहरा देगा और आप का बाल बांका न होने पावेगा। मगर आपकी बेहतरी के खयाल से मैं यह जरूर कहूंगा कि आप जहां तक हो सके मकान ही पर रहें और बिना कोई जरूरी काम हुए बाहर न निकलें।

गोपाल०। जी हां हुजूर ऐसा ही कर दें। बल्कि दो सिपाही रहें तो और ठीक है। मैं आज से जब तक आप न कहेंगे घर के बाहर न निकलूंगा। मगर अब मेरी जान आप के हाथ में है।

केमिल साहब ने कुछ और बातचीत कर गोपालदास को शान्त किया और उनके सामने ही कोतवाल साहब को टेलीफोन कर के हिफ़ाजत का पूरा बन्दोबस्त भी कर दिया। तब जाकर गोपालदास की घबराहट दूर हुई और वे केमिल साहब को बहुत बहुत धन्यवाद देते हुए वहां से बिदा हुए। वह चीठी केमिल साहब ने रख ली।

उनके जाने के बहुत देर बाद तक केमिल साहब रक्त-मण्डल की वह चीठी बार बार पढ़ते और गौरसे कुछ सोचते रहे इसके बाद वे उठे और भीतर जा अपने कपड़े पहिन कर बाहर निकले। उनके बंगले से थोड़ी ही दूर पर वर्तमान कलेक्टर का बंगला था, केमिल साहब उसी तरफ रवाने हुए उनकी चाल तेज़ थी और माथे पर की सिकुड़नें उनके दिल में घर कर लेने वाले तरद्दुद की खबर दे रही थीं।

(४)

आगरे के कमिश्नर मिस्टर टेम्पेस्ट अपने प्राइवेट रूम में पं० गोपालशंकर के साथ बैठे हुए कुछ बातें कर रहे हैं। और कोई इस कमरे में नहीं है।

गोपालशंकर०। गुप्त ! इस बात को तो मैंने इतना गुप्त रक्खा कि आज मिस्टर केमिल के साथ बातचीत होने पर भी मैंने कुछ प्रगट नहीं किया कि मैं वास्तव में किस काम के लिये नैपाल जा रहा हूँ मगर फिर भी इन लोगों को पता लग ही गया।

टेम्पेस्ट०। तब इससे तो मालूम होता है नैपाल के उस गुप्त किले से इन लोगों को भी कुछ सम्बन्ध है?

गोपाल०। केवल सम्बन्ध ही नहीं मुझे तो गुमान होता है कि वहीं इन लोगों का हेड कार्टर है और वहीं से ये लोग काम करते हैं, कोई ताज्जुब नहीं कि वे शैतान "भयानक चार" इसी गुप्त किले में ही रहते हों।

टेम्पेस्ट०। (उछल कर) बेशक यही बात है। आपका खयाल बहुत ठीक है। जरूर वह गुप्त किला ही रक्तमण्डल का हेड आफिस है। अब जो मैं खयाल करता हूं तो यही बात मालूम पड़ती है। मगर......

गोपाल०। मगर क्या ?

टेम्पेस्ट०। मगर इस हालत में रक्त मण्डल ने आप को चीठी भेज कर एक तरह पर अपना भण्डा फोड़ा है। अगर वे यह चीठी न भेजते तो आप को या मुझे यह गुमान क्यों कर होता कि जिस किले का भेद लेने आपको जाने के लिये सरकार इलतिजा कर रही है वह रक्तमण्डल के ही भेदों का खजाना है।

गोपाल०। हाँ यह बात जरूर है और इसी से मैं ख्याल करता हूं कि जो चीठी मेरे पास आई है वह एक फजूल की धमकी नहीं है बल्कि एक भयानक आगाही है जिससे होशियार हो जाना चाहिये।

टेम्पेस्ट०। (हंस कर) मालूम होता है आप के दिल में रक्तमण्डल का डर समाने लग गया है।

गोपाल०। (गम्भीरता से) बेशक! अगर डर नहीं तो उनकी ताकत की इज्जत और कद्र जरूर मेरे दिल में घर कर गई है। सिर्फ इसी बात से देखिये कि जिस बात की खबर केवल आप को और मुझे है और जिसे हम लोगों के सिवाय इस शहर में कोई नहीं जानता उसका पता इन लोगों को लग गया है और ये लोग पूरी तरह से जान गये हैं कि नैपाल और भूटान की सरहद के भयानक जंगलों और पहाड़ों में दबे हुए एक पुराने किले पर भारत सरकार संदेह की नजर डाल रही है और मैं उसकी खोज करने जा रहा हूं। इसे क्या आप मामूली बात समझते हैं!!

टेम्पेस्ट०। नहीं नहीं मैं इसे मामूली बात नहीं समझता मगर इसे कोई बहुत बड़े महत्व की भी नहीं मानता।

गोपाल०। इसका सबब यह है कि आपको रुकमण्डल का पिछला इतिहास पूरी तरह मालूम नहीं है और न आपको यही खबर है कि उनका मजबूत जाल किस तरह चारो तरफ फैल रहा है। शायद बनारस की तीनों घटनायें आप के खयाल से उतर गई हों मगर मैं उन्हें भूल नहीं सकता बल्कि मुझे तो डर है कि आज ही कल में यहां भी कुछ उपद्रव होने वाला है। खैर यह सब जो कुछ भी हो, आज मैं जिस मतलब से आया हूं वह यह था कि मुझे अब पहिले की बनिस्बत बहुत ज्यादा इन्तजाम करके वहाँ जाना होगा और भारत तथा नैपाल सरकार को और भी गहरी तरह पर मेरी मदद करनी होगी नहीं तो मैं अपने काम में सफल होने का जिम्मा न लूंगा।

टेम्पेस्ट०। बेशक बेशक यह तो मैं भी समझ रहा हूं कि मामला अब पहिले से ज्यादे मुश्किल हो गया है। पर यह मैं आपको विश्वास दिला सकता हूं कि आप को जो और जैसा जैसा इन्तजाम चाहते हैं सरकार वैसाही करने को तैयार है। आप मुझे बतावें कि आप और क्या क्या चाहते हैं ?

गोपाल०। पहिली बात जो मैं चाहता हूं यह है कि नैपाल सरकार की निजी तार और टेलीफोन से काम लेने का अधिकार मुझे मिल जाय और ऐसा प्रबन्ध हो जाय कि जरूरत पड़ने पर वहां से सीधे दिल्ली तक खबर भेजी जा सके।

टेम्पेस्ट० । (ताज्जुब से) क्यों ? इसके लिये तो आप अपने साथ निज की एक बेतार की तार की मशीन ले ही जा रहे हैं !!

गोपाल०। वह मेरे ज्यादे काम न आ सकेगी। क्या आपने आज यह नहीं पढ़ा कि दो रोज से हिन्दुस्तान के सब बेतार के तार बेकाम हो गये हैं।

टेम्पेस्ट० । हां, मगर इससे क्या ?

गोपाल० । इससे यही कि वह किला या उसमें के रहने वाले जब चाहें मेरे बेतार के तार को बेकार कर सकते हैं।

टेम्पेस्ट० । क्या ? क्या ? क्या आप इसे भी उस किले वालों की ही कार्रवाई समझते हैं ?

गोपाल० । बेशक !! क्या आपने जर्मनी के प्रोफेसर ब्लूशर का वह लेख नहीं पढ़ा जिसमें उन्होंने दो बरस पहिले के बेतार की तार को बेकार कर देने वाले अपने एक आविष्कार का हाल प्रकाशित किया था ?

टेम्पेस्ट० । (जोर से टेबुल पर हाथ पटक कर) हां ठीक है अब मुझे ख्याल आया ! उनका लेख जर्मन अखबार "तुंगजी तुंग" में निकला था और उस पर बड़ी खलबली मचगई थी। तो आपका सोचना है कि उस किले में भी वैसी ही कोई मशीन बनाई गई है जैसी प्रोफेसर ब्लूशर ने ईजाद किया था ?

गोपाल० । हां।

टेम्पेस्ट० । (कुछ गौर करके) बेशक आपका कहना

ठीक हो सकता है। तब तो यह मामला बहुत ही गहरा होता दिखाई देता है। अगर हम लोगों का बेतार का तार काम न कर सका तो बड़ी मुश्किल होगी !

गोपाल०। बेशक और उस वक्त थोड़ी बहुत उम्मीद मामूली तारों और टेलीफोनों की हो रह जायगी। मगर मैं उन्हीं पर बिल्कुल भरोसा नहीं रख देना चाहता हूँ। मेरा विचार है कि एक हवाई जहाज भी मेरी मदद पर दिया जाना चाहिये।

टेम्पेस्ट साहब यह बात सुन कुछ जवाब दिया ही चाहते थे कि दरबान ने आकर कहा, "कलेक्टर साहब और सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब आये हैं।" टेम्पेस्ट साहब ने कहा, "यहीं भेज दो।" और तब गोपालशंकर की तरफ देख कर बोले, "इन दोनों साहबों का एक साथ आना मतलब से खाली नहीं है !" गोपालशंकर बोले, "बेशक कोई नई बात हुई है !" और तब कुर्सी से उठने लगे मगर मि० टेम्पेस्ट ने कहा, "आप भी बैठिये, मेरा दिल कह रहा है कि आपकी भी मौजूदगी की हम लोगों को जरूरत पड़ेगी।" गोपाल शंकर यह सुन फिर अपनी जगह बैठ गये और उसी समय मि० डगलस और मि० केमिल ने कमरे में पैर रक्खा।

चारो आदमियों ने एक दूसरे से हाथ मिलाया और तब कुर्सियों पर बैठने के साथ ही मि० केमिल ने कहा, "पं० गोपालशंकर का यहां मौजूद रहना अच्छा ही हुआ, हम लोगों को शायद जल्दी ही आपकी मदद की जरूरत पड़ेगी।"

टेम्पेस्ट०। सो क्या ?

केमिल०। यही कि रक्तमंडल ने इस शहर में भी अपना शैतानी काम शुरू कर दिया।

मि० टेम्पेस्ट और गोपालशंकर यह सुनते ही चौंक पड़े और दोनों ने एक दूसरे पर गंभीर निगाह डाली। इसके बाद टेम्पेस्ट बोले, "क्या बात है कुछ खुलासा कहिये।"

केमिल साहब ने यह सुन गोपालदास से पाई हुई चीठी सभों के सामने टेबुल पर रख दी और कहा, "यहां के रईस बा० गोपालदास से इस चीठी के जरिये एक लाख रुपया मांगा गया है और न देने पर जान से मार डालने की धमकी दी गई है।"

चारो आदमी कुछ देर के लिये चुप हो गये। इस खबर ने सभी पर असर किया क्योंकि रक्तमंडल का नाम पिशाच की तरह मशहूर हो चला था। कुछ देर बाद मि० टेम्पेस्ट ने वह चीठी उठा कर पढ़ी और तब गोपाल शंकर के हाथ में दे दी। इसके बाद चारो आदमी धीरे धीरे कुछ बातें करने लगे।

आधे घंटे के बाद इन लोगों की बात चीत खतम हुई और तब सब कोई बाहर निकले। चलती समय कमिश्नर साहब ने मि० केमिल से कहा, 'गोपालदास की पूरी हिफाजत होनी चाहिये। खुदा न खास्ता कुछ हो गया तो शहर एक दम डर जायगा और बड़ी मुसीबत आ जायगी !" जवाब में मि० केमिल ने कहा, "जो कुछ संभव है मैं करने से बाज न आऊंगा।"

(५)

पौ फट चुकी है। खुली हुई खिड़कियों की राह बाग के फूलों की मीठी खुशबू लिये हुए ठंढी हवा आ रही है जिससे गोपालशंकर की मसहरी का पर्दा लहरें ले रहा है।

एक करवट ले कर गोपालशंकर ने आंखें खोलीं और तब अंगड़ाई लेकर उठ बैठे। आज उन्हें उठने में कुछ देर होगई थी कारण कल बहुत रात गये तक वे अपनी लेबोरेटरी में कुछ काम करते रहे थे जिससे सोने में कुछ देर हो गई थी। उन्होंने पर्दे के बाहर हाथ निकाला और पानी की सुराही उठानी चाही मगर उनका हाथ किसी दूसरी ही पतली और ठंढी चीज पर लगा जिससे वे चौंक पड़े और अपना हाथ उन्होंने खींच लिया। मसहरी का पर्दा उन्होंने उठाया और तब आगे झुक कर देखने से मालूम हुआ कि जिस टेबुल पर उनके पीने और हाथ मुंह धोने के लिये पानी वगैरह रक्खा रहा करता था उस पर एक खुखड़ी गड़ी हुई है जिसकी नोक एक लाल कागज के टुकड़े को दबाये हुए है। पानी वगैरह सामान टेबुल के नीचे जमीन पर पड़ा हुआ है।

यह अद्भुत चीज़ देखते ही गोपालशंकर की सब खुमारी दूर हो गई और वे छलांग मार कर पलंग के नीचे उतर आये। कुछ देर तक वे उस खुखड़ी को देखते रहे जो ठीक उसी तरह की थी जैसी एक वे कल पा चुके थे,इसके बाद उन्होंने खुखड़ी

को टेबुल से अलग किया और वह कागज निकाल कर पढ़ा। लाल स्याही में यह लिखा था।—

गोपालशंकर !

"तुमने हमारी कल की चीठी पर कोई ख्याल न किया ! मि० टेम्पेस्ट से मिल कर जो कुछ बातें तुमने की हैं वह सब हमको मालूम हो चुकी हैं इस लिये आज पुनः हम तुम्हें आगाह करते हैं कि अपना इरादा छोड़ दो और हमारे काम में विघ्न न डालो। याद रक्खो कि तुम्हें मार डालना हमारे लिये एक अदनी बात है और आज ही हम लोग यह कर सकते थे पर फिर भी "भयानक चार" की आज्ञा न होने से केवल होशियार करके छोड़ देते हैं। अब भी समझ जाओ और मुफ्त हम लोगों से बैर मोल लेकर अपनी जान के ग्राहक न बनो।"

इसके नीचे रक्तमंडल का वही निशान—लाल दाग में चार उंगलियां—बना हुआ था।

गोपालशंकर कुछ देर तक इस चीठी को पढ़ते रहे इसके बाद यह देखने लगे कि इस चीठी और खुखड़ी को यहाँ रखने वाला कमरे में आया क्यों कर क्योंकि सोने के पहिले वे दर्वाजा भीतर से बन्द करके सोए थे जो अब भी उसी तरह बन्द था, और कोई राह कमरे में आने की न थी। आखिर सब कुछ देख भाल कर उन्होंने निश्चय किया कि आने वाला जरूर किसी तरह इस खुली खिड़की की राह ही आया होगा।

वे खिड़की से झाँक कर कुछ देखने के लिये बढ़े ही थे कि

दीवार के साथ लगे टेलीफोन की घंटी जोर से बज उठी। उन्होंने पास जाकर चोंगा कान से लगाया तो केमिल साहब की आवाज सुनाई पड़ी जो बड़ी घबड़ाहट के साथ कह रहे थे—"पंडित गोपालशंकर हैं क्या? कृपाकर के जल्दी गनेश मोहाल में बा० गोपालदास के मकान पर आइये। मैंने सुना है कि रात को उनका खून हो गया।"

गोपालशंकर ने चौंक कर कहा, "खून? किसने किया?" केमिल की कांपती हुई आवाज आई, "उसी कमबख्त रक्तमंडल ने, उनके गले में एक रेशमी रस्सी का फन्दा पड़ा हुआ था जिसके संग एक लाल कागज पर उसका खूनी निशान बना हुआ था। आप जल्दी आइये मैं वहीं जा रहा हूं।"

"मैं अभी आया।" कह गोपालशंकर ने चोंगा टाँग दिया और तब यह कहते हुए कमरे के बाहर निकले, "इस खूनी गरोह की कार्रवाई शुरू हो गई। मुझे बड़ी होशियारी से काम करना पड़ेगा नहीं तो इन हाथियों की टक्कर मैं बर्दाश्त न कर सकूंगा।"

" मृत्यु-किरण "

(१)

गिरिराज हिमालय की ऊंची चोटियों के बीच में दबी हुई एक नीची परन्तु समथर जमीन के टुकड़े की तरफ हम अपने पाठकों को ले जाना चाहते हैं।

यह जमीन का टुकड़ा जो चौड़ाई में कोई आध कोस और लम्बाई में इससे कुछ ज्यादा होगा अपने चारो तरफ के ऊंचे ऊंचे पहाड़ों के बीच में इस तरह दबा हुआ है कि न तो यकायक यहां पर किसी का आना ही संभव है और न आस-पास की किसी पहाड़ी चोटी से अचानक इस पर निगाह ही पड़ सकती है। यहां तक आने का कोई सीधा रास्ता भी दिखाई नहीं पड़ता क्योंकि उस जमीन के चारो तरफ कितने ही भयानक गार और दर्रे हैं जिनको पार करके इस तरफ आना बहुत ही कठिन है। केवल यही नहीं, उस जमीन को घेरने वाली पहाड़ियां भी इतनी विकट और ऊंची हैं कि उन का पार करना भी काम रखता है। यद्यपि चारो तरफ की पहाड़ियों पर प्रायः और विशेष कर जाड़े के दिनों में बरफ पड़ा करती है पर इस जगह के नीचा होने के कारण यहां बर्फ

की सूरत नहीं दिखती और इसी सबब से हरियाली और जंगली पेड़ों की बहुतायत है। दूर से देखने में वह स्थान एक भयानक जंगल की तरह मालूम होता है और ऐसा भास होता है मानो किसी ने उसे पहाड़ों के बीच में दबा दिया हो।

सरसरी निगाह से देखने वाले को इस मैदान और जंगल में कोई विशेषता या विचित्रता नहीं मालूम होगी और वह तुरत कह देगा कि इस स्थान में शायद जंगली और खूंखार जानवरों के इलावे किसी आदमी का पैर कभी भी न पड़ा होगा, मगर वास्तव में ऐसा नहीं है। यह एक बड़े ही भयानक गरोह का अड्डा है और यहां की एक एक बित्ता जमीन विचित्रता से भरी हुई है जिसका हाल आपको थोड़ी ही देर में मालूम हो जायगा। इस समय हम आपको यहां से हटा कर पूरब तरफ के पहाड़ों में ले चलते हैं और यहां से दो या तीन कोस फासले पर पहुंचते हैं जहां पहाड़ की चोटी पर एक घुड़सवार खड़ा अपने चारो तरफ गौर से देख रहा है। इसका घोड़ा पसीने से लथपथ है और खुद इसके चेहरे पर की बूंदें बता रही हैं कि कहीं बहुत दूर से आ रहा है। पोशाक से यह फौजी जवान मालूम होता है बल्कि कोई ऊंचा अफसर होने का गुमान होता है और सूरत शक्ल देखने से तुरत ही मालूम हो जाता है कि यह नैपाली है।

मालूम होता है कि यह नौजवान यहां किसी चीज की खोज में पहुँचा था क्योंकि बहुत देर तक इधर उधर देखते

रहने के बाद इसने अपनी जेब से एक दूरबीन निकाली और उसकी मदद से तुरत ही उस आदमी को खोज निकाला जो सामने की तरफ पहाड़ी ऊबड़ खाबड़ पत्थरों और ढोकों पर से चलता हुआ तेजी के साथ उसी की तरफ आ रहा था, मगर जो अब भी कोई मील भर के फासले पर होगा। उसे देख कर नौजवान के मुंह पर संतोष की एक झलक दिखाई पड़ी। वह घोड़े से उतर पड़ा और उसे लम्बी बागडोर के सहारे बांध कर उस आदमी की तरफ बढ़ा जो उसे देख कर अब और भी तेजी से आ रहा था, घड़ी भर के अंदर ही दोनों में मुला-कात हो गई। नये आने वाले ने नौजवान को सलाम किया और तब एक चीठी दी जो लाल रंग के लिफाफे में बन्द थी। नौजवान ने लिफाफा खोला और भीतर की चीठी निकाल कर पढ़ी। चीठी का मजमून क्या था इसे तो हम नहीं कह सकते परन्तु उसे पढ़ कर नौजवान के माथे पर शिकनें जरूर पड़ गईं और वह कुछ देर के लिये किसी गहरे सोच में पड़ गया। आखिर कुछ सोच कर वह उस आदमी से बोला, "मैं तुम्हारे साथ चलने को तैयार हूँ।" उस आदमी ने यह सुन सलाम किया और साथ आने का इशारा कर पीछे की तरफ मुड़ा। नौजवान उसके साथ हुआ और दोनों तेजी से उसी नीच वाले मैदान की तरफ चले जिसका हाल हम ऊपर लिख आए हैं।

यद्यपि वह जगह दो कोस से ज्यादे दूर न थी मगर वहां तक पहुंचने का रास्ता इतना घूम घुमौवा भयानक और पेचीला था

कि मैदान तक पहुंचने में तीन घन्टे से ऊपर लग गये और सूरज अपने सफर का आधे से ज्यादा हिस्सा तय कर के नीचे की तरफ झुकने लगे। अभी तक सिवाय इन दो आदमियों के और किसी तीसरे आदमी की शकल दिखाई नहीं पड़ी थी मगर अब एक लंबे चौड़े गार के सामने पहुंच कर जो बीच के टुकड़े को चारो तरफ की पहाड़ियों से अलग कर रहा था वह आदमी रुका और जेब से एक सीटी निकाल कर उसने एक खास इशारे के साथ बजाई। आवाज के साथ ही सामने की चट्टानों की आड़ से निकल कर एक आदमी सामने आ गया जिसने इशारों ही में इस आदमी से कुछ बातें कीं और तब किसी तरफ को चला गया। थोड़ी देर बाद जब वह लौटा तो उसके साथ दो आदमी और थे जो एक मोटा रस्सा लिये हुए थे। वह रस्सा गार के इस पार फेंक दिया गया जिसे इधर वाले आदमी ने एक चट्टान के साथ खूब मजबूती से बांध दिया, दूसरा सिरा दूसरी तरफ बांध दिया गया और तब एक झूला इसके बीच में लटका दिया गया जिसके साथ लंबी रस्सी बंधी हुई थी। उस आदमी ने नौजवान से कहा, "इसी झूले में बैठ कर उस पार जाना पड़ेगा।" जवाब में नौजवान ने कहा, "मैं तैयार हूं।" झूला रस्सी से खींच कर इस पार लाया गया, नौजवान उस पर बैठ गया और तब इस आदमी ने कहा, "मैं अब इसी पार रह जाऊंगा, यहां से आगे अब ये आदमी आपको ले जायगे।" नौजवान ने कुछ जवाब न दे कर सिर्फ

सर हिला दिया। उधर के आदमियों ने रस्सी खींचना शुरू किया और वह झूला फिसलता हुआ नौजवान को लिये इस पार से उस पार चला। जब वह गार के बीचोबीच में पहुंचा तो नौजवान को उसकी अथाह गहराई की तह में बहते हुए पानी की एक चमक और उसकी आवाज़ की एक आहट सुनाई पड़ी और उसने गुमान से समझ लिया कि यहां से गिरने वाले की एक एक हड्डी का भी पता न लगेगा, मगर वह नौजवान भी बेहद कड़े कलेजे का था। यद्यपि उस अथाह गार के ऊपर से उसको ले जाने वाला झूला हवा के सबब से बेतरह पेंगें ले रहा था मगर उसके दिल में ज़रा भी डर न था बल्कि वह गौर से चारो तरफ और नीचे ऊपर देखता हुआ सोच रहा था कि अगर कभी इस जगह लड़ाई होने की नौबत आवे तो किस तरह यह जगह जीती जा सकती है। इसी समय वह झूला उस पार पहुँच गया, दो आदमियों ने सहारा दे कर नौजवान को उसपर से उतार लिया और एक आदमी ने जो उन सभों का सरदार मालूम होता था नौजवान से कहा, "आप मेरे साथ चले आवें।" नौजवान उसके साथ हो लिया और दोनों तेज़ी के साथ उस जंगल के पिछले हिस्से की तरफ बढ़े, मगर थोड़ी देर के बाद नौजवान ने जब पीछे की तरफ घूम कर देखा तो उसे न तो वह रस्से का पुल ही दिखाई पड़ा और न वे आदमी ही। सब के सब इस तरह गायब होगये थे मानों यह सब भूतलीला हो।

(२)

उस जंगली और पहाड़ी मैदान में आध कोस तक वे लोग बराबर चले गये और अब दूर से एक ऊंची दीवार दिखाई पड़ने लगी जो शायद किसी मकान की थी पर हजारों बरस के पुराने और आकाश से बातें करने वाले पेड़ों में यह इस तरह से छिपी हुई थी कि दूर से या अगल बगल के पहाड़ों की चोटियों से इसका दिखाई पड़ना बहुत ही कठिन था। यहां तक तो किसी ग़ैर की सूरत दिखाई नहीं पड़ी थी पर अब उस नौजवान को विश्वास करना पड़ा कि यहां बहुत से पहरेदार चारो तरफ मौजूद हैं क्योंकि थोड़ी थोड़ी दूर पर किसी न किसी पेड़ या पहाड़ी ढोंके की आड़ से कोई आदमी बंदूक लिये निकल आता था मगर नौजवान के साथी के एक इशारे ही पर फिर पीछे हट कर गायब हो जाता था। ज्यों ज्यों ये लोग उस दीवार के पास पहुँचते जाते थे इन संतरियों की बहुतायत होती जाती थी और ऐसा मालूम होता था मानों हर एक पेड़ और ढोंके के पीछे कोई न कोई छिपा हुआ है।

आखिर ये लोग उस दीवार के पास जा पहुँचे और अब नौजवान ने देखा कि यह ऊंची दीवार एक हलका गोल घेरा बनाती हुई बहुत दूर तक दोनों तरफ चली गई है और मालूम होता है कि किसी किले की दीवार है जो सैकड़ों बरस की होने पर भी अभी हजारों गोले सहने लायक है।

नौजवान ने यह भी देखा कि इस दीवार के ऊपर भी बहुत से पेड़ लगे हुए हैं जिसके सबब से यह दूर से दिखाई नहीं पड़ती थी।

नौजवान के साथी ने अब उसकी तरफ देखा और कहा, "अब हमें किले के अन्दर जाना होगा।" नौजवान ने जवाब में मंजूरी की गरदन हिला दी जिसे देख उसने जोर से सीटी बजाई। देखते देखते लगभग बीस आदमी वहां आ कर जमा हो गये जो पोशाक और हर्बों से सिपाही या पहरेदार ही नहीं मालूम होते थे बल्कि बहुत ही होशियार, लड़ाके और ताकतवर भी मालूम होते थे। उस आदमी ने उनकी तरफ कुछ इशारा किया जिसके साथ ही वे सब वहां से हट गये और कुछ ही देर बाद जमीन खोदने के औजार, फावड़े कुदाली आदि लेकर वहां आ पहुंचे और दीवार से लगभग पचीस कदम के फासले पर एक जगह उन्होंने खोदना शुरू किया। लग भग आध घड़ी में वहां एक कमर भर गहरा गड़हा तैयार हो गया। इस गड़हे के तह में एक पत्थर की पटिया दिखाई पड़ी जिसके उठाने से एक छोटे तहखाने का मुंह दिखाई पड़ा जिसमें उतरने के लिये सीढ़ियां दिखाई पड़ीं। उस आदमी ने नौजवान से कहा, "यही किले में जाने का दरवाजा है।" उसने जवाब में आगे बढ़ने का इशारा किया। आगे आगे वह आदमी और पीछे पीछे वह नौजवान गड़हे में उतरे और सीढ़ियों की राह तहखाने में चले गये तथा उनके जाते ही

इन आदमियों ने तहखाने के मुंह पर सिल्ली रख गड्ढे को फिर ज्यों का त्यों पाट दिया, जमीन बराबर कर दी गई और इसके बाद वे सब के सब पुनः इधर उधर हट कर गायब हो गये।

उस अंधेरी और तंग सुरंग में नौजवान को बहुत दूर तक जाना पड़ा और तब एक दरवाजा मिला। ठोकरें मारने से उस दरवाजे की एक छोटी खिड़की खुल गई और उसमें से किसी आदमी ने खास बोली में कोई सवाल किया। नौजवान के साथी ने उसी बोली में कुछ जवाब दिया जिसके साथ ही दरवाजा खुल गया और वहां चांदना हो गया। ऊपर चढ़ने के लिये कई सीढ़ियां दिखाई पड़ीं जिनकी राह वे दोनों ऊपर चढ़ गये।

यह जगह जहां अब वे दोनों थे एक तंग कोठरी की तरह थी क्योंकि बीच में लगभग दस गज की जगह छोड़ कर चारो ही तरफ ऊंची ऊंची मजबूत संगी दीवारें थीं पर उनके ऊपर छत न थी और इस कारण वहां चांदना बखूबी था। एक तरफ की दीवार में पतली पतली और बहुत ही तंग सीढ़ियां दिखाई पड़ रही थीं जो ऊपर की तरफ चली गई थीं और उन्हीं के पास एक सिपाही खड़ा था जिसने नौजवान के साथी से विचित्र भाषा में कुछ बातें कीं, उसने उसी भाषा में कुछ जवाब दिया और तब नौजवान की तरफ घूम कर कहा, "आप इन्हीं सीढ़ियों की राह ऊपर चढ़ जाइये, मैं और आगे नहीं जा सकता।"

नौजवान "अच्छा" कह कर बेधड़क उन सीढ़ियों पर चढ़ गया जो इतनी तंग थीं कि सिर्फ एक ही आदमी और सो भी मुश्किल से उन पर से जा सकता था। पचीस या तीस सीढ़ियों के बाद एक कमरा मिला और उसी जगह सीढ़ियों के मुहाने पर खड़े एक नौजवान की सूरत दिखाई पड़ी जो फौजी वर्दी में था। एक दूसरे को देखते ही दोनों झपट पड़े और आपस में चिमट गये और दोनों ही की आंखों से प्रेम के आंसू बहने लगे। बड़ी देर के बाद दोनों अलग हुए और दो कुरसियों पर जा बैठे जो वहां मौजूद थीं।

फौजी जवान ने नौजवान से कहा, "भाई नरेन्द्र! आज कितने बरसों बाद तुम से मुलाकात हुई है! हमारा तुम्हारा साथ छूटे कम से कम दस बरस हो गये होंगे।

नरेन्द्र०। जरूर हुए होंगे, मैं तो एक तरह पर तुम्हारे मिलने की उम्मीद बिल्कुल छोड़ चुका था, मगर भाई नगेन्द्र! तुम्हारी सूरत में इन दस वर्षों ने बहुत बड़ा अन्तर डाल दिया है! ऐसा मालूम होता है मानों तुम्हारी जिन्दगी का यह हिस्सा सुख और शान्ति से नहीं बीता।

नगेन्द्र०। नहीं बिलकुल नहीं, मैं बड़े बड़े तरद्दुदों में पड़ा और बहुत बड़ी बड़ी आफतें मुझे झेलनी पड़ीं मगर फिर भी मैं यह कहूंगा कि ये वर्ष घटनाओं से इस तरह भरे हुए थे कि उनका बीतना कुछ भी मालूम न हुआ, ये सचमुच जिन्दगी के युद्ध के वर्ष थे।

नरेन्द्र०। अब क्या हाल है? क्या अब शान्ति मिली है?

नगेन्द्र०। कहां से, शान्ति तो मानों मुझसे कोसों दूर है!

नरेन्द्र०। सो क्या?

नगेन्द्र०। अब वही सब हाल सुनाने को तो मैंने तुम्हें बुलाया ही है, जरा ठहरो सुस्ताओ और दम लो, सभी कुछ तुम्हें बताऊंगा। तुम्हें रास्ते में तकलीफ तो जरूर हुई होगी।

नरेन्द्र०। नहीं कुछ नहीं, और अगर कुछ हुई भी हो तो तुम्हें देख कर बिलकुल भूल गई।

नगेन्द्र०। (हंस कर) जरूर! खैर फिर भी स्नान ध्यान की तो जरूरत होहीगी।

इतना कह नगेन्द्र ने ताली बजाई जिसके साथ ही एक सिपाही उस कमरे में आ मौजूद हुआ और फौजी सलाम कर खड़ा हो गया। नगेन्द्रनरसिंह ने उससे कहा, "आपके लिये स्नान इत्यादि का प्रबन्ध करो और जो कुछ चीजों की इन्हें जरूरत हो उसका इन्तजाम करो। ये फारिग हो जांय तो मैं इनके साथ ही इस कमरे में भोजन करूंगा।"

सिपाही ने "जो हुक्म" कहा और तब नगेन्द्रनरसिंह ने नरेन्द्रसिंह से कहा, "लो उठो, पहिले सब तरह से निश्चिन्त हो जाओ तो आराम से बातें होंगी।"

नरेन्द्रसिंह को वहां सब तरह का आराम मिला और बहुत जल्दी ही उन्होंने जरूरी कामों से निपट कर स्नान किया। नहाने के लिये गर्म पानी मौजूद था जिसने उनके

ज़र की हरारत बिल्कुल दूर कर दी; उन्होंने खूब अच्छी तरह
न किया और तब संध्या पूजा से भी छुट्टी पाई। इसके
द नौकर उन्हें भोजन के कमरे में ले गया जहां संगमरमर
चौकियों पर तरह तरह के भोजन के पदार्थ रक्खे हुए थे
र नगेन्द्रनरसिंह पहिले ही से बैठे इनकी राह देख रहे
। दोनों आदमी भोजन के साथ ही साथ बातचीत करने
। सब नौकर चाकर नगेन्द्र का इशारा पाकर वहां से
गये थे और उस कमरे में सिवाय इनके और कोई भी
था।

नगेन्द्र०। राजधानी का क्या हाल चाल है, कोई नयी
हुई हो तो सुनाओ, मेरा तो महीनों से उधर जाना ही
हुआ।

नरेन्द्र०। नई बात तो कोई भी नहीं है, सब कुछ साबिक-
तूर है, हां इतना है कि आजकल अंगरेज रेजीडेन्ट रोज
महाराज से मिलने आया करता है और घंटों तक न जाने
क्या बातें हुआ करती हैं। क्या मामला है इसका पता
ी तक नहीं लगा है।

नगेन्द्र०। (हंस कर) उसका पता मैं बता सकता हूं, खैर
हारी बहिन का क्या हाल है?

नरेन्द्र०। किसका कामिनी का? वही हाल है, जब से आई
रे पर हरदम मुर्दनी छाई रहती है, न किसी से बोलना न
लना, न हंसी न खुशी, बराबर उदास रहा करती है, कोई

नरेन्द्र०। अब क्या हाल है? क्या अब शान्ति मिली है?

नगेन्द्र०। कहां से, शान्ति तो मानों मुझसे कोसों दूर है!

नरेन्द्र०। सो क्या?

नगेन्द्र०। अब वही सब हाल सुनाने को तो मैंने तुम्हें बुलाया ही है, जरा ठहरो सुस्ताओ और दम लो, सभी कुछ तुम्हें बताऊंगा। तुम्हें रास्ते में तकलीफ तो जरूर हुई होगी।

नरेन्द्र०। नहीं कुछ नहीं, और अगर कुछ हुई भी हो तो तुम्हें देख कर बिलकुल भूल गई।

नगेन्द्र०। (हंस कर) जरूर! खैर फिर भी स्नान ध्यान की तो जरूरत होहीगी।

इतना कह नगेन्द्र ने ताली बजाई जिसके साथ ही एक सिपाही उस कमरे में आ मौजूद हुआ और फौजी सलाम कर खड़ा हो गया। नगेन्द्रनरसिंह ने उससे कहा, "आपके लिये स्नान इत्यादि का प्रबन्ध करो और जो कुछ चीजों की इन्हें जरूरत हो उसका इन्तजाम करो। ये फारिग हो जांय तो मैं इनके साथ ही इस कमरे में भोजन करूंगा।"

सिपाही ने "जो हुक्म" कहा और तब नगेन्द्रनरसिंह ने नरेन्द्रसिंह से कहा, "लो उठो, पहिले सब तरह से निश्चिन्त हो जाओ तो आराम से बातें होंगी।"

नरेन्द्रसिंह को वहां सब तरह का आराम मिला और बहुत जल्दी ही उन्होंने जरूरी कामों से निपट कर स्नान किया। नहाने के लिये गर्म पानी मौजूद था जिसने उनके

सफ़र की हरारत बिल्कुल दूर कर दी;उन्होंने खूब अच्छी तरह स्नान किया और तब संध्या पूजा से भी छुट्टी पाई। इसके बाद नौकर उन्हें भोजन के कमरे में ले गया जहां संगमरमर की चौकियों पर तरह तरह के भोजन के पदार्थ रक्खे हुए थे और नरेन्द्रनरसिंह पहिले ही से बैठे इनकी राह देख रहे थे। दोनों आदमी भोजन के साथ ही साथ बातचीत करने लगे। सब नौकर चाकर नगेन्द्र का इशारा पाकर वहां से चले गये थे और उस कमरे में सिवाय इनके और कोई भी न था।

नगेन्द्र०। राजधानी का क्या हाल चाल है, कोई नयी बात हुई हो तो सुनाओ, मेरा तो महीनों से उधर जाना ही नहीं हुआ।

नरेन्द्र०। नई बात तो कोई भी नहीं है, सब कुछ साबिक-दस्तूर है, हां इतना है कि आजकल अंगरेज रेजीडेन्ट रोज ही महाराज से मिलने आया करता है और घंटों तक न जाने क्या क्या बातें हुआ करती हैं। क्या मामला है इसका पता अभी तक नहीं लगा है।

नगेन्द्र०। (हंस कर) उसका पता मैं बता सकता हूं, खैर तुम्हारी बहिन का क्या हाल है?

नरेन्द्र०। किसका कामिनी का? वही हाल है,जब से आई चेहरे पर हरदम मुर्दनी छाई रहती है, न किसी से बोलना न चालना, न हंसी न खुशी, बराबर उदास रहा करती है, कोई

सबब पूछे तो रो देती है मगर कुछ बताती नहीं। कोई बीमारी भी नहीं मालूम होती, कई वैद्यों को दिखलाया, सब यही कहते हैं कि बीमारी कोई नहीं है, दिल पर कोई धड़का बैठ गया है या किसी तरह की फिक्र सता रही है, बस वह चिन्ता दूर हो जाय तो यह अच्छी हो जाय, मगर चिन्ता क्या है सो भी तो नहीं न कहती! हमलोग तो सब तरह से हार गये हैं। अगर यही हाल रहा तो वह कुछ दिनों में खाट पकड़ लेगी।

नगेन्द्र०। (अफसोस के साथ) यह तो बहुत बुरी खबर सुनाई, तुमलोग कोशिश कर के उसके दिल की थाह क्यों नहीं लेते?

नरेन्द्र०। क्या थाह लें, खाक! वह कुछ बतावे तब तो।

नगेन्द्र०। कोशिश करो तो जरूर ही कुछ मालूम होगा।

नरेन्द्र०। हम लोग तो सब तरह से कोशिश कर के हार चुके, ऐसा है तो तुम्हीं कुछ कर देखो।

नगेन्द्र०। (गम्भीरता से) जरूर मैं उससे मिलूंगा और मुझे उम्मीद है कि मुझसे वह कोई हाल कभी न छिपावेगी।

नरेन्द्र०। तब तो तुम्हें एक जान बचाने का पुण्य होगा। तुम जरूर आओ बल्कि मेरे साथ ही चलो।

नगेन्द्र०। (सिर हिला कर) नहीं अभी कुछ दिनों तक मैं इस जगह को एक पल के लिये भी नहीं छोड़ सकता। पर हां मौका मिलते ही जरूर आऊंगा यह प्रतिज्ञा करता हूं।

नरेन्द्र०। अच्छा तुम अपना हाल तो कुछ सुनाओ, इतने

दिनों तक कहां रहे और क्या करते रहे. तथा इस पुराने उजाड़ किले में अब तुम कैसे दिखाई पड़ रहे हो ?

नगेन्द्र०। यही सब बताने और तुमसे मदद लेनेको मैंने तुम्हें बुलाया है। अब खा लो तो आराम से बैठ कर बातें करें।

भोजन समाप्त हुआ और दोनों दोस्त हाथ मुंह धो कर बाहर के कमरे में जा बैठे। पान लायची से मेहमान की खातिरी करने बाद नगेन्द्रनरसिंह ने फिर बातों का सिलसिला छेड़ा। इस कमरे में इन दोनों के इलावे कोई तीसरा आदमी न था।

नगेन्द्र०। अब उम्मीद है कि तुम्हारी सफर की हरारत बिल्कुल दूर हो गई होगी और तुम यह जानने के लिये तैयार होगे कि मैंने किस लिये तुम्हें इतनी दूर यकायक इस भयानक स्थान पर बुलाया है। लेकिन वह बात कहने के पहिले मैं इस बात की तुमसे प्रतिज्ञा ले लिया चाहता हूँ कि इस समय मेरी जुबानी जो कुछ भी तुम्हें मालूम पड़े और जो कुछ भी प्रस्ताव मैं तुमसे करूं उससे तुम चाहे सहमत हो या न हो पर अपनी जुबान से उसका हाल किसी तीसरे से न कहोगे।

नरेन्द्र०। (ताज्जुब से) मैं समझता हूं कि मैंने अभी तक कभी इस बात की शिकायत का मौका तुम्हें नहीं दिया है कि तुम्हारा कोई मामूली से मामूली भेद भी किसी गैर से कह दिया हो। लेकिन अगर तुम यह प्रतिज्ञा चाहते ही हो तो लो

मैं प्रतिज्ञापूर्वक कहता हूं कि तुम्हारी कोई बात किसी तीसरे से न कहूंगा।

नगेन्द्र०। (प्रेम से नरेन्द्र का हाथ दबा कर) नहीं नहीं मैं शिकायत नहीं करता लेकिन जब मेरी बात सुनोगे तो तुम्हें आप ही मालूम हो जायगा कि वे कितनी गंभीर हैं और किस तरह मेरे एक एक शब्द पर सैकड़ों जानें टंगीं हैं।

नरेन्द्र०। आखिर बात क्या है कुछ कहो भी तो !!

नगेन्द्र०। जिस समय मैं आगरे में था और वहां की पुलिस से मेरी मुठभेड़ होती थी उस समय का हाल तो तुम जानते ही होगे।

नरेन्द्र०। हां पूरी तरह। लाल पंजे* के नाम से मशहूर हो कर तुमने जो कुछ किया वह सभी मैं अच्छी तरह जानता हूं। परंतु यह मैं अभी तक न जान पाया कि नगेन्द्रनरसिंह को जो घर का काफी धनी और नैपाल का इज्जतदार सरदार है डाकू और लुटेरा बनने की क्या जरूरत पड़ी और लालपंजा के करतूतों की बदौलत जो कुछ धन मिला वह क्या हुआ या किस काम में खर्च किया गया।

नगेन्द्र०। वह अब मैं तुमको बताता हूं। आज बहुत दिनों की बात हुई कि कुछ नवयुवकों ने रक्तमण्डल के नाम से एक सभा खोली थी। उसका पूरा हाल तो यहां बताने का

---

*इस भयानक शब्द का पूरा हाल जानने के लिये "लाल पंजा" नाम का उपन्यास देखिए।

समय नहीं है फिर कभी सुनाऊंगा मगर उसका उद्देश्य यह था कि देश को गुलामी से छुटकारा दिलाना। इसके लिये ही वह सभा खुली थी और इसने बहुत कुछ काम भी किया, यहां तक कि एक बार उसने दुश्मन को हिला दिया मगर बड़ी ही बेदर्दी और कड़ाई से उस सभा को दबाया गया और उसके मुख्य कार्यकर्ता जीते जला दिये गये*जिससे वह टूट सी गई। न जाने किस तरह उसके बचे खुचे मेम्बरों को मेरा पता लगा। वे सब मेरे पास आये, अपनी सभा का सब हाल मुझसे कहा और मेरी मदद चाही। मैंने जवाब दिया, "मैं क्षत्रिय हूं, खुले आम शत्रु को ललकार मैदान में तलवार बजाना मेरा धर्म है और इसके लिये मैं तैयार हूं पर तुम्हारी तरह छिपी लुकी कार्रवाई करने और धोखे में वार करने की मेरी तबीयत नहीं करती। तुम लोग अगर सशस्त्र विद्रोह करने को तैयार हो जाओ और एक राष्ट्रीय सेना बना कर दुश्मनों से मोरचा लेने को तैयार हो तो मैं उसका सेनापति क्या एक मामूली सिपाही बन कर भी लड़ने को अपना सौभाग्य समझूंगा मगर अचानक में वार करने को मैं काय-रता समझता हूं और वह मैं कभी करूंगा नहीं।" मेरी बात सुन वे सब बोले कि "खैर तब आप और किसी तरह से हम

---

* इस सभा का पूरा हाल जानने के लिये लहरी बुकडिपो द्वारा प्रका-शित 'प्रतिशोध' नामक उपन्यास पढ़िये।

लोगों की मदद कीजिये !!" मैंने पूछा, "और किस तरह से मैं मदद कर सकता हूं ?" वे बोले, "रुपये से।" मैंने उसी समय प्रतिज्ञा की कि "दो करोड़ रुपया जिस तरह होगा तुम लोगों को दूँगा। तुम उसे जैसे चाहो खर्च करो। मगर शर्त यह होगी कि किसी गरीब या दुखिया को कभी सताना न होगा और किसी बेकसूर की जान न लेनी होगी।" उन्होंने इसे मंजूर किया और मैंने भी दो करोड़ रुपया देना स्वीकार किया। उसी वादे को पूरा करने के लिये मैंने लालपंजे का रूप धरा और ईश्वर की दया से अपना वादा पूरा भी कर सका।

नरेन्द्र०। यानी दो करोड़ रुपया इकट्ठा कर के उन्हें दे दिया?

नगेन्द्र०। हां, एक तरह पर। एक करोड़ तो मैंने उन्हें दे दिया और एक करोड़ इस शर्त पर अपने पास रक्खा कि उसके खर्च हो जाने और किस तरह पर वह खर्च हुआ यह जान लेने पर उन्हें दिया जायगा।

नरेन्द्र०। अच्छा तब?

नगेन्द्र०। इस बात को कितने ही दिन बीत गये और उन्होंने अपनी कोई खोज खबर मुझे न दी पर इतना मैं जानता रहा कि वे सब गुप्त रूप से कुछ न कुछ कर रहे हैं। इधर थोड़े दिन हुए कि वे सब फिर मुझसे आ कर मिले और बाकी के एक करोड़ की ख्वाहिश की। मेरे सब हाल पूछने पर उन्होंने पहिले करोड़ के खर्चे का कुछ विवरण सुनाया और यह भी बताया कि उनकी सभा ने जिसमें कई श्रेष्ठ वैज्ञानिक

भी हैं शत्रुओं से युद्ध करने का एक भयानक यंत्र आविष्कार किया है जिसकी पूर्ति के लिये और उसे काम लायक बनाने को एक करोड़ और चाहिये।

नरेन्द्र०। वह यंत्र कैसा था?

नगेन्द्र०। देखो मैं सब बताता हूं। उनकी बातें सुन मुझे बड़ा कौतूहल हुआ और मैंने वह यंत्र देखना चाहा। वे मुझे अपने गुप्त स्थान पर ले गये और वहां पर मैंने उस यंत्र को देखा। वह बहुत छोटा था और उसकी शक्ति बहुत कम तथा सीमा बहुत परिमित थी पर तौ भी उसमें गजब की ताकत थी। मुझे विश्वास हो गया कि उस तरह का यदि काफी बड़ा यंत्र तैयार हो सके तो एक दो क्या समूचा संसार बस में किया जा सकता है। मैंने उन्हें बाकी का एक करोड़ रुपया दे दिया और उस यंत्र का बड़ा माडेल बनाने को कहा। कुछ दिन बाद बड़ा माडेल भी बन कर तैयार हो गया पर उसको खड़ा करने लायक निराला और सुरक्षित स्थान उन्हें नहीं मिलता था। तब मैंने इस किले का पता उन्हें दिया, उन्होंने यहां आ कर वह यंत्र खड़ा किया और तब मुझे यहां बुला कर उसको दिखलाया। उसे देख और उसकी शक्ति की जांच कर मुझे विश्वास हो गया है कि जिसके पास यह यंत्र है उसको इस दुनिया का मालिक बनते कुछ भी देर नहीं लग सकती।

नरेन्द्र०। (ताज्जुब से) यह यंत्र कैसा है, क्या करता है और कैसे काम करता है।

नगेन्द्र० । सो मैं तुम्हें पूरा पूरा बताता हूं बल्कि तुम्हें ले जा कर उसे दिखला भी देता हूँ। उठो और मेरे साथ चलो।

नगेन्द्रनरसिंह उठ खड़े हुए और नरेन्द्रसिंह उनके साथ हुए। दोनों आदमी बाहर के कमरे में आए और वहां से सीढ़ियों की राह उतर कर उस जगह पहुँचे जहां तहखाने की राह किले के बाहर से नरेंद्रसिंह भीतर आये थे। यहां से नगेन्द्रनरसिंह पूरब की तरफ रवाना हुए।

लगभग सौ गज के जाने के बाद नरेन्द्रसिंह को ऐसा मालूम हुआ मानों उनके पैर के नीचे की धरती कुछ कांप रही हो, किसी बड़ी मशीन के चलने पर उसके आस पास की जमीन में जिस प्रकार कंपन होता है यह कंपन वैसा ही था पर बहुत गौर से चारो तरफ देखने पर भी नरेन्द्रसिंह को कहीं कोई मशीन या दूसरी चीज दिखाई न पड़ी और न कोई मकान या इमारत ही ऐसी दिखी जिसके भीतर किसी प्रकार के यंत्रों के होने का गुमान किया जा सके। उन्होंने नगेन्द्र से इसके बारे में पूछना चाहा पर कुछ सोच कर चुप हो रहे।

ज्यों ज्यों आगे बढ़ते जाते थे जमीन का कांपना बढ़ता जाता था परन्तु आश्चर्य इस बात का था कि किसी तरह की कुछ भी आवाज कान में नहीं पड़ती थी। पर नगेन्द्र को इसका कुछ ख्याल न था। ऐसा मालूम होता था कि नित्य का साथ

होने के कारण उन्हें इसकी विशेषता जान नहीं पड़ रही है। वे इनको लिये ऊंचे ऊंचे पेड़ों के एक झुरमुट की तरफ बढ़े जा रहे थे जो इस किले के बीचोबीच में था।

झुरमुट के पास इन दोनों के पहुंचते ही कई फौजी वर्दी पहिने और हथियारों से लैस सिपाही निकल आये पर नगेन्द्र-नरसिंह को देखते ही सलाम कर पीछे हट कहीं गायब हो गये। वे नरेन्द्र को लिये इस झुरमुट के अन्दर घुसे और कुछ ही देर में उस छोटे जंगल के बीचोबीच में जा पहुँचे। इस जगह ऊपर के पेड़ों की डालें इस कदर एक दूसरे से गुथी हुई थीं कि आसमान नहीं दिखाई पड़ता और चारों तरफ ऊंची ऊंची झाड़ियों ने सब तरफ का दृश्य रोका हुआ था जिससे यहां दिन का समय होने पर भी अन्धेरा था।

थोड़ा आगे बढ़ने पर नरेन्द्र को अपने सामने उस गुफा का मुहाना दिखाई पड़ा जो ठीक ऐसी मालूम होती थी मानो किसी शेर की मांद हो। वह नीचे की तरफ झुकती हुई एक दम जमीन के अन्दर चली गई थी और उसके भीतर घोर अन्धकार था। इन दोनों के उस जगह पहुँचते ही इधर उधर से कई सिपाही वहां आ गये पर नगेन्द्र को देख सलाम कर अदब से खड़े हो गये। किसी विचित्र भाषा में नगेन्द्र ने उनसे कुछ कहा जिसे सुन दो आदमी वहां से चले गये और कुछ ही देर में एक लालटेन लिये हुए लौट आये, तथा बाकी के सब आदमी पुनः जहां से आए थे वहीं गायब हो गये। लाल-

टेन लिये दोनों सिपाही गुफा में घुसे और पीछे पीछे नगेन्द्र और नरेन्द्र जाने लगे।

विचित्र तरह से घूमती और चक्कर खाती हुई वह गुफा बराबर जमीन के अन्दर ही घुसती जा रही थी और अगल बगल की दीवार और छत को देखने से मालूम होता था कि शुरू का हिस्सा चाहे स्वाभाविक ही हो मगर अब यह मनुष्य के उद्योग द्वारा बनाई हुई है। ज्यों ज्यों नीचे उतरते जाते थे जमीन की थरथराहट भी बढ़ती जाती थी और कुछ और नीचे उतरने पर मशीनों के चलने की भी हलकी आहट मिलने लगी। नरेन्द्र ताज्जुब कर रहे थे कि कब यह गुफा समाप्त होगी और किस तरह का यंत्र वे देखेंगे।

यकायक एक मोड़ ले कर गुफा समाप्त हो गई और नरेन्द्र-सिंह को अपने सामने लोहे का एक मज़बूत दर्वाजा दिखाई पड़ा जो भीतर से बंद था और जिसके सामने दो मजबूत कद्दावर सिपाही खड़े थे। नगेन्द्र को देखते ही उन लोगों ने फौजी सलाम किया और उसके कुछ कह देने पर एक ने एक रस्सी खींच ली जिसका दूसरा सिरा दर्वाजे के दूसरी तरफ गया हुआ था। थोड़ी ही देर बाद दर्वाजे के बीच की एक छोटी खिड़की खुली और किसी ने उसमें से झांक कर देखा। सिपाहियों ने उससे कुछ बातें की जिसे सुन उसने सिर भीतर कर लिया। इसके थोड़ी देर बाद घड़घड़ करता हुआ वह भारी दर्वाजा खुल गया। सब सिपाही तो बाहर ही रह

गये और नरेन्द्र को साथ लिये नगेन्द्र भीतर घुस गये। इनके भीतर होते ही दर्वाजा फिर बंद हो गया।

यहाँ पहुँचते ही नरेन्द्र को मालूम हुआ मानो उसके पास ही कहीं कोई बहुत बड़ी मशीन चल रही है, मगर वह सकरी कोठरी जिसमें ये लोग इस समय थे, बिल्कुल खाली थी। हां सामने की तरफ एक बंद दर्वाजा दिखाई पड़ रहा था और उसके पास एक आदमी खड़ा था जिसने नगेन्द्र का इशारा पाते ही वह दर्वाजा खोल दिया। एक दूसरा दर्वाजा मिला और उसके बाद तीन और दर्वाजे लांघने पड़े।

अब ये लोग उस बड़े कमरे में पहुंचे जहां बहुत से आदमी चलते फिरते और काम करते दिखाई पड़ रहे थे। कमरे के चारो तरफ तरह तरह की बहुत सी मशीनें चल रही थीं जिनके शोरगुल के मारे कान के पर्दे फटे आ रहे थे। यहां गर्मी भी बहुत थी मगर बहुत से बिजली के पंखों के कारण, जो तेजी से घूम रहे थे,बहुत तकलीफ नहीं होती थी। बिजली की रोशनी के कारण यहां दिन की तरह उजाला था और जिन कोठरियों को लांघते हुए वे यहां तक आये थे उनमें भी बिजली की रोशनी हो रही थी।

इन दोनों को देखते ही सुफेद बालों वाला एक बूढ़ा आदमी आगे बढ़ आया जिसकी उम्र साठ से कम न होगी, मगर फिर भी फुर्ती और तेजी उसमें अभी तक मौजूद थी तथा ऊंचा माथा बुद्धिमानी का परिचय दे रहा था। इनको

देख नगेन्द्र ने कहा, "देखिये इञ्जीनियर साहेब! ये मेरे एक बड़े पुराने मित्र आप हैं जो नैपाल सरकार के सेनापति हैं। ये आपके आविष्कार का कुछ हाल जानना चाहते हैं और मुझे उम्मीद है कि इनसे हम लोगों को बहुत कुछ मदद मिलेगी।

बड़ी सौजन्यता के साथ उस बूढ़े ने नरेन्द्रसिंह को प्रणाम किया और तब कहा, "यहां तो मशीनों के शोर के मारे कान देना मुश्किल है, मेरे आफिस में चलिये तो बातें हों। वह उन्हें लिये हुए बगल के दर्वाजे से होता हुआ एक छोटे से कमरे में पहुंचा जो आफिस के ढंग पर सजा हुआ था और जहां शीशों के दोहरे दर्वाजों के कारण शोर गुल बहुत कुछ कम था। यहां पहुँच कर सब कोई कुर्सियों पर बैठ गये और बातें होने लगीं।

नगेन्द्र०। (बूढ़े से) केशव जी! मैं चाहता हूं कि आप इनको अपने आविष्कार का कुछ हाल बतायें क्योंकि अगर मैं भूलता नहीं हूं तो मेरे मित्र को अपने स्कूल के दिनों में विज्ञान से बड़ा प्रेम था और ये उसमें बहुत गति भी रखते थे।

केशव०। बहुत अच्छा। (नरेन्द्र की तरफ देखकर) मैं समझता हूं आप को प्रसिद्ध एक्सरेज का हाल मालूम होगा।

नरेन्द्र०। जी हां, मैं एक्स किरणों का हाल अच्छी तरह जानता हूं, अभी हाल ही में उनकी सहायता से मेरे एक मित्र ने अपने फेफड़ों का चित्र उतरवाया था और उसका इलाज करवाया था।

केशव०। करीब करीब उसी तरह की मगर उससे कई हजार गुना अधिक ताकत रखने वाली डेथ रेज अर्थात् मृत्यु किरण का मैंने आविष्कार किया है। इस किरण में अनन्त शक्ति है। यह जिस चीज पर पड़ती है उसे गला डालती है! संसार का कोई भी पदार्थ इसकी शक्ति के प्रभाव से बाहर नहीं है। यहाँ तक कि अभी उस दिन मैं एक छोटे पहाड़ को इन किरणों की सहायता से भस्म कर देने में समर्थ हुआ हूं।

नरेन्द्र०। पहाड़ को भस्म कर सके हैं!!

केशव०। जी हाँ।

नरेन्द्र०। यह तो बड़े आश्चर्य की बात है। अच्छा इन किरणों की उत्पत्ति किस प्रकार से है?

केशव०। इनकी उत्पत्ति का मूल वही बिजली है। बिजली की असंख्य शक्तियों में से एक यह भी है कि वह गर्मी पैदा कर सकती है। मेरे यंत्र उस गर्मी को इच्छानुसार कम बेश करते और जहाँ चाहते वहाँ भेजते हैं। आप जानते हैं कि सूर्य की किरणों में गर्मी है। साधारण रूप से जितनी गर्मी उनमें है वह कोई नुकसान पहुंचाने योग्य नहीं है पर किसी आतशी शीशे की मदद से अगर बहुत जगह की धूप एक बिन्दु पर इकट्ठी कर दी जाय तो उतनी दूर की गर्मी भी उस जगह इकट्ठी हो जाती है और वहां असह्य गर्मी हो जाती है। इसी सिद्धान्त पर मैं भी यंत्रों द्वारा बहुत सी बिजली

की गर्मी एक ही विन्दु पर इकट्ठी करता हूं और वह चीज चाहे कुछ भी क्यों न हो तुरत भस्म हो जाती है। ये सब यंत्र जो आप देख रहे हैं सिर्फ बिजली पैदा करते हैं और इसके बगल के कमरे में वे यंत्र लगे हैं जो उस बिजली की शक्ति में से उसकी गर्मी पैदा करने वाली शक्ति को छांट कर अलग करते हैं और उसके बाद के कमरे में वे यंत्र हैं जो उस गर्मी को संग्रह कर के इच्छानुसार मृत्यु-किरणों के रूप में जहां चाहे भेजते हैं।

नरेन्द्र०। मगर इतने यंत्रों को चलाने लायक कोयला आपको इस बीहड़ जगह में कैसे मिलता है?

केशव०। मेरे यंत्र कोयले या तेल से नहीं चलते। आपको मालूम है कि यह पृथ्वी अन्दर से बड़ी गर्म है, साथ ही उसके अन्दर बिजली भी भरी हुई है। मैं उसी गर्मी और बिजली से काम लेता हूं। इस जगह बहुत से पाइप दो दो और तीन तीन मील नीचे जमीन के अन्दर गाड़ दिये गये हैं जो उस बिजली और गर्मी को इकट्ठा कर के ऊपर भेजते हैं और उनकी सहायता से मेरे यंत्र चलते हैं। आइये उठिये तो मैं सब हाल आपको दिखाऊँ।

इतना कह केशव जी उठ खड़े हुए और दोनों आदमी भी उनके साथ हुए। भिन्न भिन्न कमरों में ले जा कर केशव जी ने अपनी मृत्यु-किरण का सब हाल अच्छी तरह समझाया और वे अद्भुत तथा विचित्र यंत्र भी दिखलाए जिनसे वे

किरणें उत्पन्न होती थीं। इन सब चीजों का विवरण इतना कठिन और ऊंचे दर्जे के वैज्ञानिक तथ्यों से पूर्ण था कि उसका विवरण यहां करना हमारे पाठकों का केवल समय नष्ट करना होगा। उनमें से बहुतों को तो स्वयम् नरेन्द्र भी समझ न सके पर इतना वे जान गये कि इन यंत्रों के बनाने और उन्हें इस स्थान में खड़ा करने में करोड़ों ही रुपये लगे होंगे।

सब तरफ से दिखाते और हाल सुनाते हुए केशव जी नगेन्द्रनरसिंह और नरेन्द्रसिंह को उस कमरे में लाए जो सब का केन्द्र था अर्थात् जहां वे किरणें इकट्ठी होती थीं और जहां से वे इच्छानुसार चलाई जा सकती थीं। इस बड़े कमरे के बीचोबीच में कई गोल टेबुल रक्खे हुए थे जिनके ऊपर लोहे के गोल पाइप छत के साथ लगे हुए थे। इन टेबुलों के ऊपर घिसे हुए शीशे लगे हुए थे और उन पाइपों की राह कहीं से आती हुई रोशनी उन शीशों पर पड़ रही थी। केशव जी ने उनमें से एक टेबुल के पास जा कर कहा, "यह कमरा जमीन से पांच सौ फुट नीचे है अस्तु हमें ऊपर का हाल देखने के लिये उस तरह के पेरिस्कोप लगाने पड़े हैं जैसे कि पनडुब्बी नावों में लगे रहते हैं, जिनके द्वारा वे समुद्र के नीचे रह कर भी ऊपर का हाल देख सकती हैं। इन पेरिस्कोपों में एक विशेषता यह भी है कि इनमें आंख लगा कर देखना नहीं पड़ता बल्कि मेरे ईजाद किये हुए एक खास शीशे की मदद से ऊपर आकाश तथा चारो तरफ की तस्वीर

इस टेबुल पर बनती रहती है जिसे अगर चाहें तो उसकी फोटो भी ले सकते हैं। अच्छा अब देखिये।"

इतना कह केशव जी ने हाथ बढ़ा कर ऊपर के नलके में लगे एक पहिये को घुमाया जिसके साथ ही नलके से निकलने वाली रोशनी तेज हो गई और तब टेबुल के शीशे पर (जो घिसा हुआ यानी उस तरह का था जैसा फोटो उतारने के कमरे के पीछे लगा रहता है) ऊपर के आकाश मैदान और पहाड़ों का एक चित्र बन गया। सब लोग कौतूहल के साथ झुक कर देखने लगे।

जैसा दृश्य नरेन्द्रसिंह ऊपर देख आये थे ठीक वही इस समय उन्हें उस शीशे पर बना हुआ दिखाई पड़ा। आकाश पर धूप पड़ने से चाँदी की तरह चमकने वाले दौड़ते हुए बादल, चारो तरफ की ऊंची ऊंची पहाड़ी चोटियों के भीतर दबा हुआ यह किला और दूर की बर्फ से ढंकी हिमालय की चोटियां सब साफ दिखाई पड़ रही थीं। खूब गौर करने पर नरेन्द्रसिंह को अपना वह घोड़ा भी दिखाई पड़ गया जिसे वे यहां आती समय पहाड़ पर ही छोड़ आये थे और जो टापों से जमीन खोदता हुआ गरदन हिला रहा था। उन्होंने उसकी तरफ इशारा करते हुए कहा, "वाह यह शीशा तो बहुत ही दूर दूर तक की चीजें साफ बता रहा है! यह देखिये मेरा घोड़ा खड़ा है, वापस जाने को उतावला मालूम होता है।" सब लोगों ने झुक कर उसे देखा और तब केशव

जी कहने लगे, "जो नक्शा आपको यह दृश्य दिखा रहा है वह सिर्फ पेड़ों की चोटियों तक ही निकला हुआ है ताकि दुश्मन दूर से उसे देख कर संदेह न कर सके लेकिन जरूरत पड़ने पर यह इससे कई गुना ऊंचा किया जा सकता है और तब पचासों कोस तक की चीजें इसकी मदद से साफ मालूम पड़ती हैं।

इतना कह केशव जी ने एक दूसरे पहिये को हाथ लगाया और उसे घुमाना शुरू किया। ज्यों ज्यों पहिया घूमता था त्यों त्यों टेबुल के शीशे पर बनती हुई तस्वीर में भी अन्तर पड़ता जाता था। ऐसा मालूम होता था मानों देखने वाला ऊंचे चढ़ता जा रहा है। ठीक नीचे की चीजें तो कुछ धुंधली और दूर की चीजें स्पष्ट होती जा रही थीं। यकायक नगेन्द्र ने कुछ देख कर कहा, "प्रोफेसर साहब ठहरिये! देखिये यह क्या है?"

केशव जी ने पेंच घुमाना बन्द कर दिया और सब कोई शीशे की तस्वीर पर उस जगह देखने लगे जहां नगेन्द्रनरसिंह ने इशारा किया था। ऐसा मालूम होता था मानों बहुत दूर से एक काफला चला आ रहा है जिसमें पचासों आदमी और बोझ ढोने के जानवर हैं। नगेन्द्र इसी को देख कर चौंके थे। केशव जी ने बहुत गौर से उस काफिले को देखा और तब कहा, "ये लोग अभी यहां से चालीस मील से ज्यादा दूर हैं। मगर कौन हैं यह साफ पता नहीं लगता। अच्छा देखिये मैं इसका बन्दोबस्त करता हूं।"

केशव जी ने उस नलके साथ लगे कई पेंचों को किसी क्रम से घुमाना शुरू किया। अब उस तस्वीर का और सब भाग तो अस्पष्ट होने लगा सिर्फ वह जगह जहां काफिला था साफ और नजदीक मालूम होने लगी। पहिले से वह कई गुना बड़ी भी हो गई। अब सब कोई पुनः उस जगह झुके और देखने लगे।

ऐसा मालूम होता था मानो पचास साठ आदमियों का एक झुन्ड इसी किले की तरफ चला आ रहा है। आगे आगे बहुत से 'याक' थे जिन पर डेरे खेमे आदि लदे हुए थे। बहुत से कुलियों की पीठ पर और सामान थे तथा कई हथियार बंद सिपाही भी साथ थे और उनसे कुछ पीछे हट कर कई आदमी घोड़ों पर चढ़े आ रहे थे। इन घुड़सवारों के हाथों में दूरबीनें थीं और वे उनके जरिये से बार बार इसी किले की तरफ देखते और तब आपुस में कुछ बातें करते थे।

सब लोग कुछ देर तक गौर से इन लोगों की तरफ देखते रहे और इसके बाद केशव जी ने कहा, "ये लोग न जाने कौन हैं ! मगर इसमें संदेह नहीं कि इनका लक्ष्य यही किला है।"

नगेन्द्र ने यह सुन नरेन्द्र की तरफ घूम कर कहा, "नैपाल सरकार की तरफ से तो ये लोग नहीं आ रहे हैं।" नरेन्द्र ने जवाब दिया, "नहीं ये लोग हमारे आदमी नहीं हैं, ये सिपाही जो पौशाक पहिने हैं वह हमारी वर्दी नहीं है। मैं जब यहां से

चला था तब तक इस तरह की कोई खबर भी नहीं सुनी थी कि इस किले की तरफ जाने की कोई बातचीत हो रही हो।"

नगेन्द्र ने यह सुन कुछ सोच कर कहा, "तब ऐसी हालत में यह जरूर भारत सरकार की भेजी हुई वही पार्टी है जिसकी खबर हम लोगों को लगी थी।"

इसी समय दर्वाजे पर किसी के खटखटाने की आवाज सुनाई दी और केशव जी के "कौन है, भीतर आओ!" कहने पर एक फौजी वर्दी पहिने सिपाही अन्दर आया जिसके हाथ में एक कागज था। सलाम कर उसने वह कागज केशव जी के हाथ में दे दिया। केशव जी ने पढ़ा, यह लिखा था, "बेतार के टेलीफोन से अभी यह समाचार आया है—भारत सरकार की भेजी पार्टी बड़ी ही गुप्त रीति से कई दिन हुआ किले का पता लगाने रवाने हो गई। अभी मुझे यह खबर लगी है। वे लोग अब किले के पास पहुँचते ही होंगे।" बी० एस० ६६.

केशव जी ने वह कागज नगेन्द्रनरसिंह की तरफ बढ़ा दिया जिन्होंने उसे बड़े गौर से पढ़ा और तब कहा "आप बी. एस० ६६ से पूछिये कि क्या गोपाल शंकर भी उस पार्टी में हैं?" केशव जीने यह सुन कर "बहुत अच्छा!" कह एक कागज पर कुछ लिखा और उस सिपाही के हाथ में दे दिया जो सलाम करके चला गया। ये लोग फिर उसी शीशे पर झुके और उस आने वाले गरोह की चाल ढाल देखने लगे।

संध्या होने में कुछ ही देर थी अस्तु आने वाले एक मुला-

सिब जगह देख कर पड़ाव डालने का प्रबन्ध कर रहे थे। जमीन के एक समथर टुकड़े पर काफिला रुक गया था और सब असबाब जमीन पर उतार कर बोझ के जानवर अलग कर दिये गये थे। कुछ लोग तो जानवरों के मलने दलने और चराने में लगे थे और कुछ डेरा खेमा खड़ा करने की फिक्र में थे मगर वे घुड़सवार जो सब के पीछे थे एक ऊंचे टीले पर चढ़ गये थे और वहां पर कुछ कर रहे थे। थोड़ी देर तक बड़े गौर से उनकी कार्रवाई देखने बाद केशव जी बोल उठे—"ये लोग बेतार की तार खड़ी कर रहे हैं। ये देखिये दोनों खम्भे खड़े हो चुके हैं और उनके बीच का जाल खड़ा किया जा रहा है।" गौर से देखने पर और लोगों को भी मालूम हो गया कि बेशक यही बात है और अब वे लोग और भी दिलचस्पी और गौर के साथ उन लोगों की कार्रवाई देखने लगे।

इसी समय फिर दर्वाजे पर से आहट आई और केशव जी के हुक्म देने पर वही सिपाही फिर भीतर आया। इस समय उसके हाथ में एक दूसरा कागज था जिसे केशव जी ने ले लिया और पढ़ा, यह लिखा था, "गोपालशंकर कई दिनों से आगरे में बीमार पड़े हुए हैं यह अभी मैंने सुना है इससे संभव नहीं मालूम होता कि वे भी उस पार्टी में हों।" बी० एस० ६६। केशव जी ने वह पुर्जा नगेन्द्रनरसिंह के हाथ में दे दिया और कुछ पूछना ही चाहते थे कि इसी समय एक दूसरा सिपाही एक और कागज लिये आ पहुंचा। इस पुर्जे को

पढ़ने पर केशव जी ने यह लिखा पाया, "गोपाल शंकर के बीमारी की खबर बिल्कुल गलत है। अभी मालूम हुआ कि वे अपनी जगह पर किसी दोस्त को बीमारी की नकल करने के लिये छोड़ कर आज ग्यारह दिन हुए कहीं चले गये हैं।
ए०जी० ६७

यह कागज भी नगेन्द्रनरसिंह के हाथ में दिया गया और वे उसे पढ़ कर कुछ गौर करने के बाद बोले, "तब जरूर गोपालशंकर इसी गरोह में है। मामला बेढब मालूम होता है। आप इन दोनों को कहला दें कि बहुत होशियार रहें और कोई नई खबर मालूम होते ही सूचना दें और खुद अब खूब होशियार हो जांय। ताज्जुब नहीं कि ये लोग लड़ाई के सामान से लैस हो कर आए हों। उस समय मोरचा लेने की जरूरत पड़ेगी। आपके इञ्जिनों को पूरी तेजी से काम करना पड़ेगा और आपको बहुत होशियार रहना पड़ेगा। न मालूम कब ये आने वाले बादल फट पड़ें।"

केशव जी के वृद्ध चेहरे पर भी लाली दौड़ गई और आंखों में एक चमक दिखाई पड़ने लगी। उन्होंने तन कर कहा "मेरे पास इस वक्त इतनी बिजली तैयार है कि आधा नैपाल राज्य तीन मिनट के अन्दर गारत कर सकता हूं। आप सब तरह से निश्चिन्त रहें। ये थोड़े से आदमी तो क्या इसके सौगुने भी यहां आ कर हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।"

नगेन्द्रनरसिंह ने यह सुन प्रसन्नता से कहा, "मुझे भी

आपकी मृत्यु किरण से ऐसी ही आशा है।" और तब नरेन्द्र-सिंह से बोले, "अब लौटना चाहिये। मुझे बहुत कुछ इन्तजाम करना पड़ेगा।" दोनों आदमी साथ ही कुछ बातें करते हुए पीछे की तरफ लौटे और जिस रास्ते यहाँ तक आए थे उसी राह से होते हुए बाहर हो गये।

(३)

पौ फटने का समय है। गिरिराज की बर्फीली चोटियों पर अरुणोदय के समय की लाली कुछ विचित्र सुनहली छटा दिखा रही है। मंद मंद किन्तु अत्यन्त ठंडी हवा चल रही है और चारो तरफ, एक विचित्र प्रकार की सुगंध फैल रही है जो उस जंगल के कुदरती फूलों के पौधों से आ रही है जिसके पास ही वह पड़ाव पड़ा हुआ है जिसका हाल हम ऊपर लिख आये हैं।

यह पड़ाव जिसमें लगभग पचास आदमियों के होंगे एक गोल घेरा ले कर बना हुआ है। डेरे खेमे यद्यपि बहुता-यत से नहीं हैं मगर उतने आदमियों और जानवरों का मौसिम से बचाव करने को काफी हैं जो इनके साथ हैं। और सब छोलदारियें और डेरे, तो गोल घेरा बांध कर बाहर की तरफ फैले हुए हैं मगर बीचोबीच में कुछ मैदान छोड़ कर एक सूफियाना छोटा और सुन्दर खेमा है जिसके चारो कोनों पर चार सिपाही बैठे ही बैठे नींद में मस्त हो रहे हैं और जिसके दर्वाजे पर का मोटा पर्दा हवा के कारण हिल रहा है।

ऐसे समय में हम एक घुड़सवार को इस डेरे की तरफ आते देखते हैं जो उस तरफ से आ रहा है जिधर वह पहाड़ी किला था जिसका हाल ऊपर लिखा जा चुका है। सुबह और ठंड का वक्त होने पर भी इसका घोड़ा पसीने से लथपथ था जिससे मालूम होता है कि यह बहुत दूर से चलता हुआ आ रहा है और वास्तव में बात भी यही थी।

पड़ाव के पास पहुंच कर इस आदमी ने घोड़े की बाग खींची और जमीन पर उतर पड़ा। दूर ही से देख कर इसने निश्चय कर लिया था कि अभी तक इस लश्कर का कोई आदमी जागा नहीं है और यह भी उसे विश्वास हो गया था कि इस समय की ठंडी हवा अभी घंटे आध घंटे तक किसी को रजाई के बाहर मुंह निकालने की इजाजत न देगी, अस्तु वह कुछ बेखटके था। घोड़े से उतर वह कई कदम पड़ाव की तरफ बढ़ आया और तब चारो तरफ फिर गौर की निगाह डाल और इस बात का निश्चय कर के कि कोई उसे देख नहीं रहा है उसने एक गठड़ी खोली जो उसकी पीठ से लटक रही थी। इस गठड़ी में से कोई चीज निकली जिसे उसने जमीन पर रख दिया और तब जेब से एक लिफाफा निकाला। इसके बाद अपना नेजा उसने जमीन में गाड़ कर खड़ा किया और उस चीज तथा लिफाफे को उसी नेजे पर खड़ा कर दिया। मालूम होता है कि सिर्फ इतना ही करने वह आया था क्योंकि इसके बाद ही वह पुनः अपने घोड़े पर जा चढ़ा

और रवाना हो गया। उस तरफ नहीं जिधर से वह आया था बल्कि उस तरफ जिधर वह जा रहा था अर्थात् नेपाल राजधानी काठमान्डू की तरफ।

इस घुड़सवार को गुमान था कि उसका इस तरह आना और वह चीज रख कर चले जाना किसी डेरे वाले ने नहीं देखा मगर वास्तव में यह बात न थी। बीच वाले सुन्दर डेरे के दर्वाजे का पर्दा जरा हटा हुआ था और उसके अन्दर से किसी आदमी की तेज निगाहें इसकी सब कार्रवाई देख रही थीं। सवार के कुछ आगे जा कर एक टीले की ओट में होते ही यह आदमी पर्दा हटा कर खेमे के बाहर आ गया और सीधा उस तरफ चला जहां नेजा और वह खत रक्खा गया था। दूर से वह नहीं जान सका था कि यह क्या चीज है पर जब नजदीक आया तो उसके मुंह से एक चीख निकल गई क्योंकि उसने देखा कि नेजे पर की चीज एक आदमी का कटा हुआ सर है जो ताजा ही मालूम होता है क्योंकि उसकी गरदन की तरफ से अभी तक खून की बूंदें निकल निकल कर जमीन पर गिर रही थीं। इसकी भयानक आंखें डरावनी तरह पर खुली हुई थीं और इसके खुले हुए मुंह में एक लिफाफा खोंसा हुआ था।

यह विचित्र और डरावनी चीज देख कर एक दफे तो वह आदमी हिचका मगर फिर हिम्मत कर के आगे बढ़ा। सिर के पास पहुँच कर उसने उसके खून से तर बालों को अलग किया
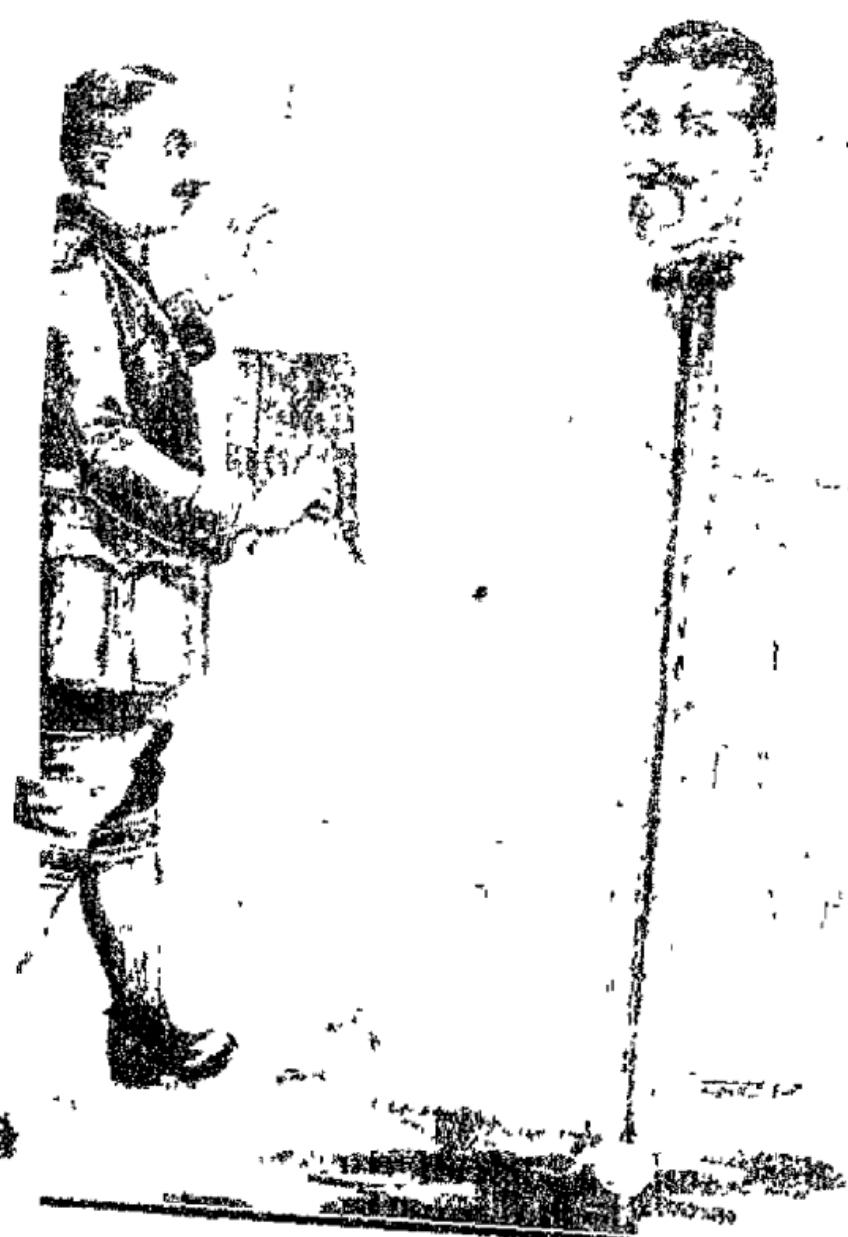
क नेजे पर एक आदमी का ताजा कटा सिर रक्खा है
से खून की बूँदें टपक टपक कर गिर रही हैं।

पृ० ११०

और सूरत पर एक तेज निगाह डालते ही दुःख भरे स्वर में बोला, "हाय हाय ! रघुनन्दन ! तुम्हारी यह दशा !!" एक सायत के लिये उस आदमी की कुछ विचित्र हालत हो गई मगर बड़ी कोशिश कर के उसने अपने को सम्हाला और तब वह लिफाफा निकाला जो उस सिर के मुंह में खोसा हुआ था। लाल लिफाफा देख कर उसे कुछ ख्याल आ गया क्योंकि उसने अपनी आंख बंद कर ली और उसके माथे पर की सिकुड़नें गवाही देने लगीं कि वह कोई बात सोच रहा है मगर फिर तुरत ही उसने वह लिफाफा फाड़ डाला और भीतर की चीठी के मजमून पर गौर किया। यद्यपि सूर्य्यदेव के निकलने में देर थी फिर भी पल पल भर में बढ़ती आने वाली रोशनी इतनी हो गई थी कि वह चीठी पढ़ी जा सके। लाल कागज पर लाल ही स्याही से लिखा हुआ था:—

"जिसको तुमने भेद लेने भेजा था उसी का सिर तुम्हें खबर-दार करता है कि होशियार हो जाओ और आगे बढ़ने का खयाल छोड़ कर यहीं से वापस जाओ नहीं तो एक एक की वही गत होगी जो तुम्हारे इस जासूस की हुई है। होशियार ! होशियार !!"

इसके नीचे किसी का दस्तखत न था मगर एक लाल निशान इस तरह का जरूर पड़ा हुआ था मानों खून की एक बहुत बड़ी बूंद वहां पर गिर पड़ी हो।

पढ़ने वाले ने उस मजमून को खतम कर के पुनः पढ़ने के के लिये निगाह ऊंची की ही थी कि पीछे से कुछ आहट आई

और उसने तेजी से घूम कर देखा। एक नौजवान अङ्गरेज खड़ा हुआ था जिसे देखतेही वह बोल उठा, "आह एडवर्ड! यह देखो मेरे शागिर्द रघुनन्दन की दशा! बेचारा इतनी हिम्मत कर के दुश्मनों में घुस तो गया मगर अपनी जान इन नरपिशाचों से बचा न सका और मारा गया। यह देखो यह चीठी हम लोगों को भी लौट जाने को कह रही है।" कह कर उसने वह चीठी एडवर्ड के हाथ में रख दी और आप इधर उधर देखने लगा क्योंकि उसकी आंखें डबडबा आई थीं और कलेजा रघुनन्दन की याद करके भर आया था।

एडवर्ड बड़े गौर से उस चीठी को पढ़ गया और तब सिर हिला कर बोला, "तब तो इस बात में कोई भी शक नहीं रह गया कि रक्तमंडल का सदर इसी जगह कहीं है। अगर ऐसा न होता तो रघुनन्दन मारा न जाता और हम लोगों को भी इस तरह भागने को कहा न जाता। मेरी समझ में तो पंडित जी अब बहुत होशियारी से आगे बढ़ना चाहिये!!"

जिसे एडवर्ड ने "पंडित जी" कह कर संबोधन किया इन्हें हमारे पाठक अच्छी तरह जानते हैं क्योंकि ये वही पंडित गोपाल शंकर हैं जिनका बहुत कुछ जिक्र पहिले आ चुका है। एडवर्ड की बात सुन कर गोपालशंकर बोले, "इसमें कोई भी शक नहीं है मगर इसके साथ यह बात भी है कि रघुनन्दन के इस तरह मारे जाने का हाल हमें किसी से कहना न चाहिये क्योंकि अगर उन डरपोक पहाड़ियों को यह

हाल मालूम हुआ तो वे एक दम घबड़ा जायंगे बल्कि ताज्जुब नहीं कि हमारा साथ छोड़ कर भाग जांय। योंही वे सब भूत प्रेत और पिशाचों के डर के मारे आगे बढ़ने में आनाकानी कर रहे हैं यह हाल सुन कर तो एक दम ही इन्कार कर देंगे।"

एडवर्ड ने यह सुन कहा, "बेशक आपका कहना बहुत ठीक है और ऐसी हालत में इस सर को इसी जगह कहीं गाड़ देना ही मुनासिब होगा।" गोपाल शंकर की भी यही राय हुई और दोनों ने मिल उसी जगह एक गड़हा खोद उस सिर को गाड़ दिया। मट्टी से गड़हा भर कर उसके ऊपर निशान और जानवरों से बचाने के खयाल से कई पत्थर के ढोके रख दिये गए और तब वे दोनों आदमी पुनः अपने डेरे में चले आए।

खेमे में एक तरफ तो दो सफरी खाट पड़े हुए थे और दूसरी तरफ एक छोटा टेबुल तथा तीन कुरसियां रक्खी हुई थीं। एडवर्ड और गोपालशंकर उन कुरसियों पर जा बैठे और वह लंप तेज कर दिया गया जो टेबुल पर रक्खा हुआ था। एक सन्दूक खोल कर गोपालशंकर ने कागज का लंबा पुलिन्दा निकाला जो वास्तव में एक नकशा था और उसे टेबुल पर फैला कर एक जगह उंगली रखते हुए वे बोले, "हम लोग इस समय यहां पर हैं और यह सब हिस्सा वह है जो इस तरफ के लोगों में "भूतों का घर" के नाम से मशहूर है और जहां कोई भी पहाड़ी किसी भी काम के लिये अपनी मर्जी से जाना मंजूर नहीं करता। वह किला जो हमारा लक्ष्य है यहाँ से तीस मील

पर है और नैपाल की राजधानी भी इस तरफ लगभग उतने ही फासिले पर पड़ती है। अगर हम लोग कोशिश करें तो कल दो पहर को किसी समय उस किले के पास पहुंच जा सकते हैं, मगर अब सवाल यह है कि क्या वहां तक बेधड़क चले जाना मुनासिब होगा?"

एडवर्ड ने कहा, "यही तो मैं भी सोच रहा हूं। यद्यपि हम लोगों के साथ लगभग पैंतीस के मजबूत पहाड़ी, पंद्रह सिपाही और दस गोरखे हैं मगर फिर भी दुश्मन की ताकत जाने बगैर यह नहीं कहा जा सकता कि ये काफी हैं।"

गोपाल०। यही मेरा भी खयाल है। जैसा कि रंग ढंग से मालूम होता है रक्तमंडल वाले सब तरह से चौकन्ने हैं और कोई ताज्जुब नहीं कि लड़ाई भिड़ाई के लिये भी तैयार हों। उस हालत में बहुत सोच समझ के ही आगे बढ़ना ठीक है।

एडवर्ड०। मगर इस तरह एक मामूली धमकी पर बिना कुछ काम किये पीछे लौट जाना भी बड़ी हंसी की बात होगी। मेरी तो यह राय है कि हम लोग उस ऊंची पहाड़ी की चोटी तक तो बढ़े चले जांय जहां से इस किले में जाने का राह गई है और तब वहीं पड़ाव डाल कर हवाई जहाज से काम लिया जाय।

गोपाल०। बस बहुत ठीक है यही राय मेरी भी है। आज शाम तक हम लोग इस पहाड़ी तक पहुँच जांयगे। वहीं डेरा गिरा दिया जाय और कल खूब सवेरे ही बल्कि कुछ रात

रहते ही "श्यामा" पर उड़ चला जाय। मुझे विश्वास है कि वे लोग कितना ही छिप कर क्यों न रहते हों मगर आसमान से हम लोग इनका पता लगा ही लेंगे।

एडवर्ड०। जरूर! मगर साथ ही मेरा यह भी कहना है कि "श्यामा" पर मैं अकेला ही जाऊंगा। हम दोनों का जाना ठीक नहीं, क्या जाने किसी तरह का खतरा हो जाय तो दोनों के दोनों का एक साथ ही दुश्मन के मुंह में चले जाना ठीक न होगा।

गोपाल०। (हंस कर) तुम्हारी सभी रायें ठीक होती हैं। अच्छा यही सही मगर फिर तुम्हें भी बहुत होशियार रहना होगा, ऐसा न हो कि लड़कपन करके खामखाह अपने को किसी आफत में फंसा लो।

इन दोनों में इसी तरह कुछ देर तक और बातें होती रहीं और तब तक पूरी तरह सवेरा भी हो गया। लश्कर के लोग जाग गये और जरूरी कामों से निपटने की फिक्र में पड़े। एडवर्ड और गोपालशंकर भी खेमे के बाहर निकल आए। पड़ाव को खबर दे दी गई कि एक घंटे के भीतर ही कूच हो जायगा। सब लोग तरह तरह की तैयारी में लग गये और चारो तरफ दौड़ धूम मच गई। इसके डेढ़ घंटे के बाद यह पड़ाव उठ गया और आगे की तरफ रवाना हो गया।

(४)

संध्या होने से कुछ पहिले ही पं० गोपालशंकर का लश्कर उस स्थान के करीब जा पहुँचा जहाँ पर पड़ाव डालने का वे सुबह विचार कर चुके थे। पड़ाव पर पहुंचने के कुछ पहिले ही गोपालशंकर और एडवर्ड अपने २ घोड़ों पर सवार उस जगह पहुँच गये थे और अब दूरबीनें ले ले कर अपने चारों तरफ के पहाड़ों और खास कर उस बीच की नीची जमीन को तरफ गौर से देख रहे थे जहां वह विचित्र अमींदोज किला था।

इन दोनों को गुमान था कि अगर रक्तमण्डल का सदर यहीं है तो वे जरूर कहीं न कहीं कुछ आदमियों को चलते फिरते जरूर देखेंगे मगर ऐसा न था। अपने सामने नीचे और ऊपर तथा अगल बगल तक कोसों तक देख जाने पर भी उन्हें सिवाय जंगल और पहाड़ों के कुछ भी दिखाई न पड़ता था मगर हां पीछे की तरफ निगाह करने से उन्हें पहाड़ी रास्ते की पतली पगडंडी से आते हुए और सांप की तरह दूर तक फैले हुए आदमी दिखाई पड़ रहे थे जो संध्या हो जाने के खयाल से तेजी के साथ इधर बढ़े आ रहे थे। इन आद- मियों के सिवाय और कहीं किसी मनुष्य की सूरत दिखाई नहीं पड़ रही थी।

एडवर्ड ने पीछे की तरफ से आते हुए अपने आदमियों को दूरबीन से देख कर कहा, "आधे घंटे के अन्दर ही हमारे

आदमी यहां आ पहुंचेंगे। अब कल क्या करना होगा इसे सोचना चाहिये।"

गोपाल०। वही जो आज सुबह हम लोगों ने सोच लिया है। तुम अपना वायुयान रात भर में ठीक कर सकते हो?

एडवर्ड०। मैं उम्मीद तो करता हूं कि वह ठीक हो जा सकता है, पर इतनी दूर के इस लम्बे सफर में यदि कोई पुर्जा टूट टाट गया होगा तो मुश्किल होगी।

गोपाल०। खैर उस हालत में तो लाचारी है मगर......(रुक कर) वह कौन आ रहा है?

एडवर्ड ने भी दूरबीन उठाई और गौर से उस तरफ देखा। एक सवार तेजी से घोड़ा दौड़ाता इन्हीं दोनों की तरफ चला आ रहा था। कुछ ही मिनटों में वह पास आ पहुंचा और तब घोड़े से उतर कर इन लोगों की तरफ बढ़ा। सवार कोई फौजी जवान मालूम होता था बल्कि उसके नैपाली फौज का कोई अफसर होने का गुमान होता था। नजदीक आ कर उसने फौजी सलाम की और अदब के साथ एक चीठी इन लोगों की तरफ बढ़ाई। गोपालशंकर ने चीठी ले ली और खोल कर पढ़ा। यह नैपाल सरकार की तरफ से आई थी और इसमें यह लिखा हुआ था:—

"पंडित जी साहेब,

हम लोगों को एक नई और बड़े ताज्जुब की बात का पता लगा है जिससे आपको आगाह कर देना बहुत जरूरी है।

मेहरबानी करके इस खत को देखते ही आप और मि० एडवर्ड केमिल इस सवार के साथ यहां चले आवें। आपका लश्कर जहां हो वहीं रोक दीजिये क्योंकि इस नई बात को छान बीन किये बिना एक कदम भी आगे बढ़ना खतरनाक होगा। मैं यहां से कुछ ही दूर पर हूं।

(द:) कप्तान किशनसिंह,
आफिसर
कमांडिंग ११ वीं ब्रिगेड
बहुक्म
श्रीमान महाराजा बहादुर।

गोपालशंकर ने ताज्जुब के साथ चीठी को दोबारा पढ़ा और तब एडवर्ड के हाथ में देते हुए उस नौजवान से पूछा, "कप्तान साहब कहां पर हैं? उस आदमी ने जवाब में पश्चिम की तरफ हाथ उठा कर कहा, "उस तरफ लगभग दो तीन कोस पर उनका डेरा पड़ा हुआ है और उन्होंने इस चीठी के इलावे जुबानी भी कहला भेजा है कि इस खत को पाते ही मेरे पास चले आवें और अपने लश्कर को जहां वह हो उसी जगह रोक दें। एक कदम भी आगे न बढ़ने दें नहीं तो बड़ी आफत होगी।"

गोपाल०। (ताज्जुब से) मगर मेरी समझ में कुछ भी नहीं आता कि यकायक ऐसी कौन सी नई बात पैदा हो गई

है। अभी तीन चार दिन हुए मैं महाराजा साहब से खुद रेजी-डेन्ट साहब के सामने सब बातें तय कर चुका हूँ और अब यह क्या बात पैदा हो गई है ?

सवार०। (लाचारी दिखाता हुआ) अफसोस मैं इसके सिवाय और कुछ भी नहीं कह सकता कि आज दोपहर को कोई डाकू पकड़ा गया है और उसी को जुबानी कोई ऐसी बात कप्तान साहब को मालूम हुई है कि उन्होंने तुरत ही मुझे आपकी तरफ दौड़ा दिया है।

गोपाल०। कोई डाकू पकड़ा गया है ?

सवार०। जी हाँ।

गोपाल०। तब तो कहीं......

गोपालशंकर ने कुछ सोचा और तब एडवर्ड से धीरे धीरे कुछ बातें कीं, इसके बाद वे उस सवार से बोले, "हम दोनों तुम्हारे साथ चलने को तैयार हैं मगर मुशकिल यह है कि अपने लश्कर को मैं यहाँ तक आने का हुक्म दे चुका हूं अब उसके यहाँ तक पहुंचने की राह देखनी पड़ेगी।"

सवार०। अगर आप हुक्म दें तो मैं अभी उसके पास चला जाऊं और आप का संदेशा सुना दूं। आप यह भी कर सकते हैं कि उसी तरफ से होते हुए कप्तान साहब के पास चलें, रास्ते में उन्हें जो कुछ मुनासिब समझें हुक्म देते आयें। यद्यपि कुछ फेर इस तरह जरूर पड़ जायगा मगर कोई हर्ज नहीं हम लोग चाँदना रहते अपने ठिकाने पहुंच जायंगे।

गोपालशंकर ने यह राय पसंद की और तीनों आदमी पीछे की तरफ लौटे। इस बीच में उनका लश्कर बहुत कुछ पास आ चुका था अस्तु थोड़ी ही देर में वे उसके पास जा पहुँचे और तब अपने आदमियों को उसी जगह पहुँच कर जहाँ से वे अभी आये थे डेरा गिराने का हुक्म दे तथा और भी कई जरूरी बातें समझा कर गोपालशंकर एडवर्ड को लिये उस सिपाही के साथ कप्तान किशनसिंह से मिलने रवाना हो गये। इस समय सूर्य्य डूबने में लगभग एक घंटे की देर थी।

गोपालशंकर के चले जाने बाद उनका लश्कर भी आगे बढ़ा और कुछ ही देर में ठिकाने पहुँच कर डेरा खेमा गाड़ने के प्रबन्ध में लगा। यह वही जगह थी जहाँ कल सुबह नरेन्द्रसिंह ने अपना घोड़ा छोड़ा था और उस विचित्र किले की तरफ पैदल रवाने हुए थे।

(५)

मशीन रूम के भीतर के उस कमरे में जहां पेरिस्कोप के शीशे लगे हुए हैं केशव जी और नगेन्द्रनरसिंह खड़े गौर से कुछ देख रहे हैं। उनके सामने के शीशे पर ऊपर के मैदानों का दूर दूर तक का दृश्य बना हुआ है और वे गौर से उन दो सवारों की तरफ देख रहे हैं जो एक पहाड़ी पर खड़े दूरबीनें लिये चारो तरफ देख रहे हैं।

यकायक एक तीसरा सवार उन दोनों की तरफ आता दिखाई पड़ा। उसे देखते ही नगेन्द्र ने चौंक कर कहा "देखिये नम्बर सत्तावन इन दोनों के पास आ पहुंचा। मुझे विश्वास है कि वह जरूर इन दोनों को बहका कर ले आयगा।"

केशव जी ने कुछ जवाब न दिया बल्कि और गौर से उस तस्वीर को देखने लगे। इस नये सवार से उन दोनों की कुछ देर तक बातें होती रहीं और तब वे तीनों ही पीछे की तरफ मुड़कर उधर को चल पड़े जिधर से आदमियों और जानवरों की एक लम्बी कतार इधर ही को आती दिखाई पड़ रही थी। नगेन्द्र ने खुश होकर कहा, "हम लोगों की चाल खूब सच्ची बैठी, अब आप भी तैयार हो जाइये।"

केशव जी यह सुन कर अपनी जगह से हटे और एक आलमारी के पास पहुंचे जिसमें लोहे के पल्ले लगे हुए थे और एक बहुत मजबूत ताला बन्द था। अपने पास की एक ताली से केशव जी ने उस ताले को खोला और तब पल्ला खोलने पर उस आलमारी के अन्दर सजे बहुत से छोटे छोटे शीशे के गोले दिखाई पड़े जिनके अन्दर न जाने क्या भरा था कि वे एक विचित्र तरह की हरी रोशनी से चमक रहे थे। केशव जी ने बड़ी सावधानी से उसमें से दो गोले उठा लिये और उन्हें लिये हुए कमरे के एक कोने में खड़ी एक विचित्र मशीन के पास पहुँचे जिसके विचित्र कल पुर्जे न जाने किस शक्ति की सहायता से तेजी के साथ चल रहे थे। उस मशीन

के भीतर के किसी हिस्से में केशव जी ने ये दोनों शीशे के गोले डाल दिये और तब पुनः आलमारी के पास लौट गये। इस कमरे के चार कोनों में उस तरह की चार मशीनें थीं जिनमें से हर एक में केशव जी ने दो दो गोले डाल दिये और तब वह आलमारी बंद कर ताला लगा कर कमरे के बाहर निकल गये। उनके बाहर होते ही मशीन रूम में से शोर गुल की आवाज बढ़ने लगी और कुछ ही देर में इतनी बढ़ी कि ऐसा मालूम होने लगा मानों कान के पर्दे फट जांयगे। लगभग पन्द्रह मिनट तक यही हालत रही और तब धीरे धीरे वह तेजी कम होने लगी। आधे घंटे के बाद फिर सब पूर्ववत हो गया और धीरे धीरे गड़गड़ाहट की वैसी ही आवाज आने लगी जैसी पहिले आ रही थी। इसी समय केशव जी ने पुनः कमरे में पैर रक्खा।

नगेन्द्रसिंह ने कहा, "लीजिये अब लश्कर ठिकाने आ पहुँचा है।" जिसे सुन केशव जी बोले, "कोई हर्ज की बात नहीं, मेरे इन आठ गोलों में इस वक्त इतनी ताकत भर गई है कि ये पचास साठ आदमी क्या उस समूचे पहाड़ को मैं उड़ा दे सकता हूं जिस पर वे लोग हैं।"

दोनों आदमी पुनः इस शीशे पर झुक कर कुछ देर तक देखते रहे। पड़ाव अब उसी पहाड़ी पर पड़ गया था और चारो तरफ लोग दौड़ धूप कर रहे थे, कोई डेरे खड़ा कर रहा था, कोई जानवरों के दाने घास का प्रबन्ध कर रहा था और

कोई बरतन लिये पानी की खोज में इधर उधर घूम रहा था।
केशव जी कुछ देर तक इस दृश्य को देखते रहे और तब बोले, "कहिये अब क्या हुक्म होता है ! क्या इस लश्कर को मैं ऐसा साफ कर दूँ कि धूल तक का पता न रहे ?"

नगेन्द्र ने यह सुन कहा, "एक नई बात मेरे ख्याल में आई है, क्या आप ऐसा नहीं कर सकते कि ये सब के सब आदमी मरें नहीं बल्कि बेहोश हो जाँय ! क्या आप अपनी मृत्यु-किरणों की शक्ति कुछ कम करके उसका प्रयोग इस लश्कर पर नहीं कर सकते ?"

केशव जी ने कुछ सोचते हुए और सिर खुजलाते हुए कहा, "क्या आप चाहते हैं कि समूचा लश्कर का लश्कर बेहोश हो जाय मगर कोई मरे नहीं ?"

नगेन्द्र०। हां मैं यही चाहता हूँ। क्या ऐसा हो सकता है ?

केशव जी कुछ देर तक कुछ सोचते रहे इसके बाद उन्होंने जेब से कागज पेन्सिल निकाली और कुछ हिसाब करने लगे। इसके बाद यकायक खुश हो कर बोले, "हां मैं ऐसा कर सकता हूं।"

नगेन्द्र०। (खुश हो कर) वाह अगर ऐसा हो तो बात ही क्या है ! बस तो देर की जरूरत नहीं आप वैसा ही करिये जिसमें ये सब के सब कम से कम तीन चार घंटे के लिये बेसुध हो जायं !!

केशव जी कोने की एक मशीन के पास गये और उसके

किसी पुर्जे को घुमा कर फिर शीशे वाले शीशे के पास आ गये। हम ऊपर लिख आए हैं कि शीशे के ऊपर लोहे के ढक्के लगे हुए थे जिनके साथ बहुत से पेंच थे। अब केशव जी ने उन पेंचों को किसी क्रम से घुमाना शुरू किया।

नगेन्द्रनरसिंह शीशे के ऊपर झुके गौर के साथ उस लश्कर की तरफ देख रहे थे। यकायक उन्हें ऐसा मालूम हुआ मानों एक तरह की हरी बिजली उस लश्कर पर चमक गई हो। इसके साथ ही उस लश्कर में एक विचित्र तरह की बेचैनी और घबराहट दिखाई पड़ने लगी। सब लोग घबड़ा-हट के साथ इधर उधर देखने और दौड़ने लगे। और सब जानवर भी बंधे होने पर भी इधर से उधर अपने अपने रस्सों की पहुँच तक दौड़ने लगे।

इसी समय वह हरी बिजली पुनः चमकी। अब सभों की बेचैनी बहुत ही बढ़ गई। बहुतों ने तो अपने कपड़े उतार उतार कर फेंकने शुरू कर दिये मानों वे पागल हो गये हों या उन्हें बहुत गर्मी मालूम हो रही हो और बहुत से जमीन पर गिर कर हांफने लगे।

यकायक केशव जी वहां से हटे और एक दूसरी मशीन के पास जा उसके किसी पुर्जे को छेड़ पुनः अपने ठिकाने आ गये। अब पहिले से भी ज्यादा तेजी से और पुनः पुनः वह हरी बिजली चमकने लगी और उस लश्कर के लोगों की बेचैनी पहिले से सौगुनी ज्यादा होगई। देखते देखते उसमें के लोग जमीन पर

गिरने लगे। आधी घड़ी के अन्दर उस लश्कर का हर एक आदमी बच्चा और जानवर बेहोश हो गया था।

नगेन्द्र ने खुश होकर कहा, "वाह केशव जी, आपने तो कमाल किया, अब यह बताइये कि इन लोगों की बेहोशी कब दूर होगी।

केशव जी बोले, "अगर मैं और कोई कार्रवाई न करूं तो सुबह की सर्द हवा लगने के बाद ही इन्हें होश आ सकता है, क्या यह काफी होगा।"

नगेन्द्र ने कहा, "बहुत काफी! आप बस यह ख्याल रक्खें कि तीन चार घंटे तक इनमें से कोई होश में आने न पावे बस मेरा काम हो जायगा।"

केशव जी के मुंह से "ऐसा ही होगा, आप बेफिक्री से अपना काम करें।" सुनते ही नगेन्द्रनरसिंह तेजी के साथ उस कमरे के बाहर चले गये। इस समय सूरज डूब गया था और अंधेरी चारो तरफ से झुकी आ रही थी।

(६)

पेचीले और तंग पहाड़ी रास्तों पर से घुमाता हुआ वह फौजी जवान गोपालशंकर और पडमर्ड को कुछ उत्तर झुकते हुए पश्चिम की तरफ ले चला।

सूर्यास्त का समय होने से दृश्य बड़ा ही सुहावना हो रहा था। बर्फ से ढंकी हुई चोटियां खून की तरह लाल हो रही थीं और अपने अपने घोसलों में आ कर आराम लेने वाले

परिन्दों की आवाज से जंगल गूंज रहे थे। मस्ती लाने वाली संध्या की हवा बह रही थी और हर तरफ नई बहार दिखा रही थी जिसका आनन्द लेते हुए प्रकृतिप्रेमी गोपाल-शंकर अपने तन मन की सुध भूले हुए थे। उन्हें कुछ भी खयाल न था कि किधर जा रहे हैं या किस काम के लिये जा रहे हैं। केवल एडवर्ड के बगल में उस सवार के पीछे जा रहे हैं, इतनी ही उन्हें होश थी। वे कितनी देर से चल रहे हैं या अपने मुकाम से कितनी दूर आ गये हैं इसको भी उन्हें खबर न थी।

यकायक उस सवार के मुंह से कुछ सुन कर उनकी मोह निद्रा टूटी। वह सवार चलता चलता यकायक रुक गया था और कह रहा था, "गजब हो गया, मालूम होता है मैं रास्ता भूल गया!" अब गोपालशङ्कर भी चौंके और अपने चारों तरफ गौर से देखने पाए उन्हें मालूम हुआ कि वे कैसे बीहड़ स्थान में आ गये हैं।

दो तरफ ऊंचे ऊंचे पहाड़ और सामने की तरफ एक गहरा गड्ढा था जिसकी खड़ी दीवार एक दम नीचे चली गई थी। दोनों तरफ के पहाड़ों पर चढ़ना असम्भव था और पीछे वह घोर जङ्गल था जिसमें से होते हुए वे यहां तक पहुंचे थे। वह नौजवान सवार उस खड्ढ के पास खड़ा कह रहा था, "जरूर मैं रास्ता भूल गया, उस जगह से दाईं तरफ नहीं बल्कि बाईं तरफ मुड़ना चाहिये था! अब क्या

होगा ? इस घोर जङ्गल में से हो कर रात के वक्त जाना भी खतरे से खाली नहीं है। मैं बेमौत मरा। कप्तान साहब मेरी गलती की खबर सुनेंगे तो तुरत मुझे जेल भेजवा देंगे बल्कि गोली मार देने का हुक्म दे दें तो भी ताज्जुब नहीं। हाय ! अब मैं क्या करूं ?

अब एडवर्ड और गोपालशङ्कर को भी अपनी भयानक स्थिति का पता लगा। हिमालय की पेचीली पगडण्डियों और उसके भयानक जङ्गलों का हाल वे बखूबी जानते थे और यह अच्छी तरह समझते थे कि एक बार रास्ता भूल जाने पर बिना घण्टों भटके ठीक राह पर आना बड़ा ही मुश्किल है। खास कर ऐसे मौके पर जब रात की अंधियारी चारो तरफ से झुकी आती हो और सामने खड्ड और पीछे वह भयानक जङ्गल हो जिसमें तराई के प्रसिद्ध शेर चक्कर लगा रहे हों। दोनों तरफ के खड़े ऊंचे पहाड़ किसी तरफ जाने का मौका नहीं देते थे और न उन पर चढ़ना ही सहज था। इस समय की अपनी हालत देख बहादुर एडवर्ड और दूरदर्शी गोपालशंकर भी कुछ घबड़ा गये और खड़े हो कर सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये।

आखिर वह नौजवान कुछ सोच विचार कर बोला, "इस समय अंधेरी रात में उस जंगल से हो कर लौटने की मैं राय नहीं दे सकता, यदि दिन का वक्त या चांदनी रात भी होती तो एक बात थी मगर यों जाना एक दम खतरनाक है। ईश्वर

न करे अगर किसी मुसीबत में पड़ गये तो बड़ा ही बुरा होगा। मुझे ख्याल पड़ता है कि यहां कहीं करीब ही में महाराज का एक शिकारगाह है और एक छोटा बंगला सब तरह के सामानों से लैस वहाँ बना हुआ है, अगर आप लोग कुछ देर यहीं रुकने की तकलीफ करें तो मैं जाऊं और उसका पता लगाऊं।

गोपाल०। वह शिकारगाह किस तरफ है?

नौजवान०। इसी बाँई तरफ वाले पहाड़ पर कहीं है। इसके ऊपर चढ़ने से मुझे विश्वास होता है उसका पता लगेगा।

गोपाल०। (ऊपर की तरफ देख कर) मुझे गुमान होता है कि अगर हम लोग अपने घोड़े इसी जगह छोड़ दें और पैदल चढ़ना शुरू करें तो इस पहाड़ पर चढ़ सकते हैं।

एडवर्ड०। मुझे भी यही उम्मीद होती है। कम से कम एक दफे कोशिश करके देखना चाहिये।

नौजवान०। मेरी राय में आप जल्दी न करें एक दफे मुझे कोशिश कर लेने दें, मैं उधर से होकर इस पहाड़ पर चढ़ने की कोशिश करता हूं। अगर मेरा ख्याल ठीक है और वह शिकारगाह इसी पहाड़ पर है तो रास्ते का पता लगाना कुछ भी मुश्किल न होगा।

गोपाल०। खैर जाओ, मगर बहुत देर न लगाना क्योंकि अंधेरी बढ़ती आ रही है।

"वहीं मैं बहुत जल्द आऊंगा," कह कर नौजवान ने घोड़े का मुंह फेरा और देखते देखते आंखों की आड़ हो गया। एडवर्ड और गोपालशंकर वहीं खड़े अपने खेमोंके फंसने पर बातें करते रहे।

नौजवान को गये एक घड़ी बीती दो घड़ी बीती, तीन घड़ी बीती, मगर वह न लौटा। धीरे धीरे अंधेरा बढ़ने लगा और जंगल में से दरिन्दे जानवरों की बोलियां सुनाई पड़ने लगीं। अब इन लोगों की घबराहट बढ़ने लगी और वहां रुके रहना खतरनाक मालूम होने लगा। एडवर्ड ने आखिर घबरा कर कहा, "मालूम होता है वह नौजवान खुद भी कहीं भटक गया, अब क्या करना चाहिये?"

गोपालशंकर बोले,"एक बार इस घाटी के दूसरे सिरे तक चल कर देखना चाहिये और अगर कुछ पता न लगे तो फिर इस पहाड़ पर चढ़ कर उस बंगले की खोज करनी चाहिये जिसका वह सिपाही जिक्र करता था।"

दोनों आदमी पीछे लौटे। लगभग सौ कदम के जाने बाद ये लोग एक ऐसी जगह पहुंचे जहां एक पतली पगडंडी बीच की घाटी को काटती हुई एक तरफ से दूसरी तरफ निकल गई थी और जिस पर आती समय इन दोनों में से किसी ने भी खयाल न किया था। इसी जगह जमीन पर एक लाल लिफाफा पड़ा हुआ था जिस पर गोपालशंकर की निगाह पड़ी और उन्होंने घोड़े से उतर कर उसे उठा लिया। लिफाफा खुला

हुआ था और उसके भीतर एक लाल रंग का कागज था जिसे निकालने पर लाल ही स्याही से कुछ लिखा हुआ पाया गया। यद्यपि रोशनी बहुत ही कम हो गई थी फिर भी गोपाल शंकर ने वह मजमून पढ़ ही लिया यह लिखा हुआ था—

"गोपाल शंकर !

"हम लोगों के मना करने पर भी तुम आगे बढ़ ही आए। खैर एक मौका तुम्हें और दिया जाता है अब भी सम्हल जाओ और पीछे को लौटो। यदि हमारी बात मान कर पीछे लौट गये तो ठीक ही है नहीं तो याद रक्खो कि आगे बढ़ने का ख्याल करते ही तुम और तुम्हारे लश्कर की धूल का भी पता न रह जायगा।"

"अगर इसी समय अपने लश्कर में जाना चाहो तो बाईं तरफ जाओ और रात भर रह कर सुबह जाने का विचार हो तो दाहिनी तरफ घूमो, मगर खबरदार, खबरदार, हमारी बात मत भूलो।"

इसके नीचे रक्तमंडल का खूनी निशान खून की बड़ी बूंद के बीच में चार अंगुलियों का दाग बना हुआ था जिसे देखते ही गोपालशंकर सब मामला समझ गये और चीठी एडवर्ड की तरफ बढ़ाते हुए बोले, "जिसका मुझे शक था वही हुआ! हम लोगों को धोखा दिया गया और यह सब रक्तमंडल की कारंवाई थी।"

एडवर्ड ने भी उस चीठी को पढ़ा और तब दोनों में सलाह

होने लगी कि अब क्या करना चाहिये। आखिर सोच विचार कर यही निश्चय किया गया कि इस समय अंधेरी रात और अनजान जंगल में से हो कर जाना ठीक नहीं है, रात भर आराम किया जाय और सुबह होते ही अपने लश्कर को चले चला जाय। यह निश्चय कर दोनों आदमी दाहिनी तरफ घूमे और उस पगडंडी पर चले जो चक्कर खाती हुई पहाड़ के ऊपर चढ़ गई थी।

लगभग आधा कोस जाने बाद ये लोग उस पहाड़ की चोटी पर पहुंच गये और वहां इन्हें एक छोटा सा बंगला दिखाई पड़ा जिसका दर्वाजा खुला हुआ था। ये दोनों बेधड़क उस बंगले के पास जा कर घोड़े से उतर पड़े और बंगले के अन्दर घुसे। छोटा सा बंगला था मगर जरूरी सामानों से लैस था और बगल की एक कोठड़ी में नहाने धोने वगैरह का भी इन्तजाम था, पीछे की तरफ एक अस्तबल सा भी बना हुआ था।

इन लोगों ने अपने घोड़ों को मल दल कर उस अस्तबल में बांधा और कुछ घास जो वहीं पड़ी हुई थी उनके आगे रख कर अपने नहाने धोने की फिक्र में पड़े। जलपान का कुछ सामान भी वहां एक आलमारी में था परंतु दोनों ने खाना मंजूर न किया और योंही जाकर उन दो कोचों पर आ पड़े जो बङ्गले में रक्खे हुए थे। बातचीत करते देर हो गई और धीरे धीरे ये लोग नींद में गाफिल हो गये। सोने के पहिले गोपाल-

शङ्कर ने बंगले के सब खिड़की दरवाजे मजबूती से बंद कर लिये और अपनी पिस्तौल दुरुस्त कर के सिरहाने रख ली थी।

सुबह होते ही गोपालशंकर और एडवर्ड उठे और जरूरी कामों से छुट्टी पा अपने लश्कर की तरफ लौटे। लगभग दो घंटे के सफर के बाद ये लोग उस जगह के पास पहुंचे जहां उनका लश्कर पड़ा हुआ था। दूर ही से देख कर गोपालशंकर ने कहा, "हमारे लश्कर के सब आदमी या तो मारे गये और या बेहोश पड़े हैं।"

दोनों ने घोड़े तेज किये और थोड़ी ही देर में लश्कर में आ पहुंचे। लश्कर की विचित्र हालत थी, चारों तरफ लोग जमीन पर पड़े हुए थे, कहीं कोई भी होश में न था, किसी के बदन पर कपड़ा तक न था, दूर से ऐसा मालूम होता था मानों सब मुर्दे हों मगर पास जाने पर मालूम हुआ कि सब मरे नहीं हैं किन्तु बेहोश हैं। ताज्जुब की बात यह थी कि रात की भयानक सर्दी में नंगे पड़े रहने पर भी वे सब जीते क्यों कर बच रहे थे और जंगली जानवरों ने उन्हें क्यों छोड़ दिया था। बेहोशी किसी चीज की हो पर इतनी कड़ी और ऐसा असर करने वाली थी कि लश्कर के जानवरों में से भी बहुतेरे अपनी अपनी जगहों पर बेहोश पड़े हुए थे। गोपालशंकर और एडवर्ड परेशान थे क्योंकि उनकी कुछ भी समझ में नहीं आता था कि यह क्या हो गया।

अब एक और बात की तरफ भी इन लोगों का ध्यान

गया। इन लोगों ने अपने साथ एक छोटा हवाई जहाज ले लिया था जो पैक कर के बहुत थोड़ी जगह में आ सकता था और जिसके कल पुर्जे और सामान छोटे बड़े कई संदूकों में बंद थे। गोपालशंकर की तेज निगाहों ने देख लिया कि वे सब बकस गायब हैं।

जांच करने से यह बात ठीक मालूम हुई और साथ ही इस बात का भी पता लगा कि इन लोगों के साथ रसद का जो कुछ सामान था उसका भी बहुत सा हिस्सा गायब हो गया है और सिर्फ उतना ही सामान बच गया है जिससे लश्कर का दो दिन का काम चल सके। वे बहुत से यंत्र आदि जो इनके साथ थे, वे भी गायब हो गये थे। अब गोपालशंकर बिल्कुल घबड़ा गये और कुछ बदहवासी के साथ उनके मुंह से निकला, "हवाई जहाज गया, वे यंत्र जिन्हें बरसों की मेहनत में मैंने तैयार किया था गये और रसद भी गई। अब सिवाय इसके और क्या चारा रह गया कि यहां से पीछे लौट जाऊं।"

गोपालशंकर ने एक पत्थर की चट्टान पर बैठ कर सिर झुका लिया और एडवर्ड उनके बगल में खड़ा अफसोस की मुद्रा से चारो तरफ देखने लगा।

"मुठभेड़"

(१)

एक अंधेरे और डरावने जंगल के बीच में एक छोटा सा साफ मैदान है जिसमें इस समय हम सौ सवा सौ आदमियों की एक छोटी भीड़ देख रहे हैं।

बीच में एक बड़ा सा गोल टेबुल है जिसके ऊपर लाल कपड़ा बिछा हुआ है। उसके ऊपर बीचोबीच में मनुष्य की खोपड़ी का एक पूरा ढाँचा रक्खा हुआ है और दोनों तरफ दो भैसों के कटे हुए सिर रक्खे हैं जिनमें से ताजा खून अभी तक निकल कर बह रहा है और बूंद बूंद कर के लाल कपड़े को तर करता हुआ नीचे जमीन पर गिर रहा है। भैसों के सिरों के दोनों तरफ दो खून से सने खांड़े रक्खे हुए हैं और उनके बगल में मनुष्य के हाथ की दो हड्डियां रक्खी हुई हैं।

टेबुल की सजावट तो यह है। उसके पीछे तीन कुरसियां रक्खी हुई हैं जिन पर लाल कपड़ा बिछा हुआ है। इस कपड़े पर भी सुफेद रेशम के काम से मनुष्य की खोपड़ी बनी हुई है जिसके नीचे मनुष्य के हाथ की दो दो हड्डियां एक दूसरे को काटती हुई बनी हुई हैं। ये कुरसियां खाली हैं अर्थात इन पर अभी तक कोई बैठा हुआ नहीं है।

सामने और टेबुल के चारों तरफ की भीड़ में जो सवा सौ आदमियों से अधिक की नहीं होगी कोई विशेषता नहीं है सिवाय इसके कि सब के सब लाल रंग का कपड़ा पहिने हुए हैं और उनमें से अधिकांश नवयुवक हैं, इन लोगों में धीरे धीरे कुछ बातें हो रही हैं जिनसे एक तरह की गूंज फैल रही है। साधारण आकृति से यह भी जान पड़ता है कि एक तरह की उत्तेजना भीतर ही भीतर काम कर रही है और ये सभी उपस्थित लोग किसी की उत्कंठापूर्वक राह देख रहे हैं।

यकायक कहीं से शंख की आवाज आई जिसे सुनते ही उपस्थित भीड़ की उत्कंठा बढ़ गई और सभी इधर उधर देखने लगे। अचानक फिर शंख की आवाज आई और साथही सामने की तरफ से तीन आदमी आते हुए दिखाई पड़े जिनकी पोशाक लाल रंग की थी और चेहरे भी लाल कपड़े से ढंके थे। इनको देखते ही सब के सब उठ खड़े हुए और साथ ही "भारत माता की जय" शब्द से यह जंगल गूंज उठा। धीरे धीरे चलते हुए वे तीनों आदमी आ कर उन कुरसियों पर बैठ गये और एक बार फिर वही रव गूंज उठा।

फिर एक शंख की आवाज हुई और इन नये आए हुओं में से एक आदमी उठ खड़ा हुआ। उसने हाथ के इशारे से सभों को बैठने के लिये कहा और जब सब बैठ गये तो गंभीर स्वर में कहना आरंभ किया:—

"भाई हिन्दुओं !

आज बरसों ही के बाद हम लोग फिर यहां इकट्ठे हुए हैं। हम लोगों ने पहिले कहां तक काम किया था और किस प्रकार हम लोग दबा दिये गये। ये दोनों ही बातें कहनी अब बेकार हैं, हमें इसी बात के लिये परमात्मा को धन्यवाद देना चाहिये कि आज इतने दिनों के बाद और इस प्रकार बदल गये हुए वायुमंडल में भी हम लोग इतने आदमी इकट्ठे हो सके जो अपना पहिला उद्देश्य भूले नहीं हैं और जो आज भी कुछ कर सकने की हिम्मत रखते हैं। और नहीं तो देश के लिये प्राणत्याग करना आज भी हमारे हाथ है और यहां तक करने को हम तैयार हैं यही बहुत है।

आज आप लोगों को इतने दिनों के बाद हम लोगों ने जो बुलाया है इसका एक विशेष कारण है। आप सब लोग पिछले इतिहास को पूरी तरह जानते हैं और आपको यह बतलाना व्यर्थ है कि पहिली बार हम लोगों की पराजय इसी लिये हुई कि हमारे हाथ में कोई ऐसी शक्ति नहीं थी जिससे हम उस विशाल शक्ति का मुकाबला कर सकते जिसने यहां का सूत्र पकड़ा हुआ है। परन्तु आज अवस्था बदल गई है। आज हमें एक ऐसी शक्ति मिल गई है जिसकी सहायता से यदि हम चाहें तो घड़ी भर में इस समूची दुनियां का नाश कर सकते हैं। आज हम इस योग्य हो गये हैं कि संसार की बड़ी से बड़ी शक्ति का मुकाबला कर सकें।

"आप पूछेंगे कि वह शक्ति क्या है? वह कुछ नहीं वैज्ञानिक संसार का एक आविष्कार है, आपको बहुत भुलावे में न डाल कर मैं आपको उस शक्ति का एक छोटा सा नमूना दिखला देता हूं।"

इतना कह उस आदमी ने अपने कपड़ों में से काठ का एक छोटा बक्स निकाला। इसके भीतर किसी मसाले में रक्खा हुआ एक छोटा बक्स और था जो इसमें से बाहर निकाला गया और उसके भी अंदर से रूई की कई तहों में बड़ी हिफाजत से रक्खा हुआ एक शीशे का गोला निकला जो अंडे के बराबर मोटा होगा। इस गोले को हाथ में ले और सिर से ऊंचा कर लोगों को दिखाते हुए उसने फिर कहना शुरू किया:—

"आप लोग इस शीशे के गोले को देखते हैं। यह कितना छोटा और साधारण मालूम होता है पर इसके अन्दर संसार की सब से भयानक शक्ति छिपी हुई है। इसी शक्ति की सहायता से हम अपने देश को स्वाधीन करना चाहते हैं। आप लोग इसकी शक्ति का नमूना देखें।"

उस आदमी ने बड़े जोर से उस गोले को एक तरफ फेंका। वह सनसनाता हुआ एक बड़े भारी पेड़ के तने से जा कर लड़ा और फूट कर टुकड़े टुकड़े हो गया। लोगों को यकायक मालूम हुआ मानों एक प्रकार की हरी बिजली वहां पर चमक गई हो। उसी क्षण में वह पेड़ यकायक जल उठा और शीघ्र ही इस प्रकार सुलगने लग गया मानो वह बरसों का सूखा काठ

हो या उस पर मिट्टी का तेल छिड़क दिया गया हो। लगभग पन्द्रह मिनट के अन्दर ही वह समूचा पेड़ धांय धाँय कर के जलने लग गया। कुशल यही थी कि वह पेड़ उस जङ्गल के और पेड़ों से एक दम अलग था और उसके सबब से अन्य पेड़ों में आग लगने की संभावना नहीं थी नहीं तो शायद वहां एक भयानक दृश्य उपस्थित हो जाता, फिर भी विना कारण एक अण्डे के बराबर छोटे गोले से एक हरे पेड़ का इस तरह जलने लग जाना भी कोई कम भय पैदा करने वाली वस्तु न थी। सब लोग डर के साथ उस तरफ देख रहे थे कि अचानक उस बोलने वाले की आवाज ने पुनः सब का ध्यान अपनी तरफ खींचा। वह कह रहा था :—

"आप लोगों ने एक छोटे से गोले की करामात देखी! इस तरह के और इससे सैकड़ों गुना बड़े गोले हजारों और लाखों की तायदाद में हम तैयार कर सकते हैं और उनकी मदद से क्या क्या किया जा सकता है यह आप खुद ही सोच सकते हैं।"

सुनने वालों के उत्साह का पारावार न था, लोग मतवाले से हो गये थे मगर बोलने वाले के एक इशारे ने उन्हें शान्त किया। वह कहने लगा :—

"ऐसे ऐसे गोले तैयार करने के लिये हम लोगों ने इसी देश में एक कारखाना बना लिया है जहां ये अनगिनित तैयार हो सकते हैं। अब हमें जरूरत है ऐसे कार्यकर्ताओं की जो

जान का डर छोड़ कर इन गोलों को इस्तेमाल करने को तैयार हो जांय। क्या आप लोग इसके लिये तैयार हैं ?"

"तैयार हैं! तैयार हैं!!" की आवाज से जंगल गूंज उठा उसने पुनः कहा:—

"मुझे आप लोगों का उत्साह देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई मगर इस काम के लिये बहुत ज्यादा आदमियों की जरूरत है। कम से कम दस हजार आदमी हुए बिना संगठित रूप से कोई काम नहीं हो सकता। आज आप लोगों को बुला कर मैं यही आदेश देना चाहता हूँ कि आप लोग कार्यकर्ता तैयार कीजिये। मैं खूब जानता हूं कि इस समय देश में लाख लाख नवयुवकों का खून जोश मार रहा है मगर वे उसे निकालने का कोई रास्ता नहीं पा रहे हैं। रास्ता मैंने दिखा दिया, उनको खोज लाना अब आप लोगों का काम है। जिस दिन दस हजार ऐसे नवयुवक मुझे मिल जायगे जो देश के लिये सहर्ष अपना प्राण देने को तैयार होंगे उसी दिन हम संसार की सब से बड़ी शक्ति को पैरों के नीचे रौंदने लायक हो जांयगे। क्या मैं उम्मीद करूं कि देश ऐसे दस हजार नवयुवक दे सकेगा ?"

जंगल की छाती को फाड़ती हुई—"जरूर !!" की आवाज गूंज उठी। उस आदमी ने फिर कहा, "मैं भी यही समझता हूं। आज मैंने आपको दिखा दिया कि अब हम वैसे कमजोर नहीं रहे जैसे कुछ बरस पहिले थे अस्तु अब आपको अधिक हिम्मत और विश्वास के साथ काम करना चाहिये। आज के

ठीक एक महीने बाद अर्थात् अगली अमावस को पुनः इसी जगह आप लोग इकट्ठे होंगे। जो नये और विश्वासी साथी आपको मिल सकें उन्हें भी लेते आवें। उस दिन मैं कुछ और वैज्ञानिक अस्त्रों का नमूना दिखाऊंगा और साथ ही आप लोगों से एक नई प्रतिज्ञा करा कर आप को इस नये युद्ध का सैनिक बनाऊंगा। आज बस इतने ही के लिये आप लोग बुलाए गये थे।"

कहने वाला बैठ गया "भारत माता की जय" का घोर शब्द एक बार फिर गूंज उठा और तब शान्ति हो गई। सब लोग उठ खड़े हुए और एक एक वो दो कर के कई पगडंडियों की राह जंगल के बाहर होने लगे। वह टेबुल, खोपड़ी महिष मुण्ड आदि भी न जाने कहां गायब हो गये। वे तीनों नकाबपोश भी न जाने किधर गुम हो गये। कुछ देर के बाद ऐसा मालूम होने लगा मानो वहां कोई था ही नहीं या बरसों से उस जंगल ने किसी मनुष्य की शकल भी नहीं देखी थी।

(२)

एक सुनसान सड़क से जो नैपाल और अंगरेजी भारत की सीमा के पास है, एक अंगरेजी रिसाला जा रहा है।

रिसाला न कह कर इसे एक छोटी टुकड़ी कहना ठीक होगा। आगे आगे लगभग दो सौ पैदल सिपाही उनके पीछे चार तोपों का एक तोपखाना और उसके पीछे लगभग एक सौ के घुड़सवार हैं। अफसर इत्यादि कायदे के साथ हैं और

पूरे मिलिटरी ढंग से कूच हो रहा है । नैपाल के महाराज किसी कारण से भारत की सीमा पर आ रहे हैं । उन्हीं की अगवानी के लिये यह टुकड़ी जा रही है और आज संध्या से पहिले ही अपने ठिकाने पर पहुँच जायगी जिसमें कल महाराज के आने के वक्त से तैयार रहे। कई बड़े बड़े सरकारी अफसर दूसरे रास्ते से वहां पहुँच चुके हैं और स्वयम् प्रान्त के लाट साहब आज शाम को वहां पहुँच जांयगे ।

इतनी शान शौकत दिखाने या इस प्रकार नैपाल के महाराज और प्रान्त के लाट की भेंट होने का वास्तविक कारण क्या है यह हम कुछ भी नहीं जानते परन्तु कोई गूढ़ बात अवश्य है इसमें संदेह नहीं। इस पलटन के आगे आगे जाने वाले कैप्टेन मोरलैन्ड और उनके मातहत अफसर सैन्डरसन में इसी संबंध में धीरे धीरे कुछ बातें होती जा रही हैं। इन्हें अब दस ही पंद्रह मील जाना है इससे कोई जल्दी न होने के कारण इनके घोड़ों की चाल भी तेज नहीं है और पलटन भी मन्द गति से ही चल रही है।

यकायक बातें करना छोड़ कैप्टन मोरलैन्ड ने गौर से सामने की तरफ देखा और कहा, "वह क्या है !" सैन्डरसन ने भी गौर से सामने देखा और कहा, "एक गाड़ी और कुछ सवार मालूम होते हैं।" मोरलैन्ड ने अपनी दूरबीन उठाई और उस तरफ देखने लगे ।

जहां पर ये लोग थे वहाँ से सड़क आगे की तरफ कुछ

ढालुई थी और दूर तक झुकती हुई ही चली गई थीं, दोनों तरफ पेड़ों के भी न होने के कारण यहां से बहुत दूर तक की सड़क साफ दिखाई पड़ रही थी। मोरलैण्ड ने बड़े गौर से देख कर कहा, "सरकारी खजाने की गाड़ी है और साथ में छः सवार और एक अफसर है, मगर न जाने क्यों ये लोग वहीं खड़े हुए हैं।"

मोरलैण्ड ने सैण्डरसन के हाथ में दूरबीन दे दी और उसने भी बहुत गौर से देखा, तब कहा, "जी हां, यही बात है और वह आगे की तरफ जहाँ सड़क पहाड़ के बगल में घूमती है दो सवार और हैं जो हमी तरफ देख रहे हैं बल्कि उनमें से एक के हाथ में दूरबीन भी है उन पर शायद आपने गौर नहीं किया "नहीं तो" कह मोरलैण्ड ने फिर दूरबीन पकड़ी और देख कर कहा, "हां ठीक तो है, मगर वे लोग हमारी तरफ के नहीं हैं। यद्यपि उनकी पौशाक फौजी मालूम पड़ती है फिर भी वे किसी दूसरी जगह के जान पड़ते हैं, मगर वह लो, हम लोगों को देख जंगल में घुस गये।

ये लोग बातें भी करते जाते थे। लगभग एक घड़ी के बाद वे उस जगह पहुंच गये जहां वह गाड़ी और सवार खड़े थे। सचमुच सरकारी खजाने की एक गाड़ी और उसके साथ सात सवार थे। इन पलटन को आते देख उन छहों सिपाहियों का अफसर आगे बढ़ आया और मोरलैण्ड को सलाम कर के बोला, "आप लोग बड़े मौके पर आ गये नहीं तो आज सरकारी खजाना जरूर लूट जाता !!

मोरलैण्ड ०। क्यों? सो क्या बात है? आप लोग कहाँ आ रहे थे, और देर से इसी जगह खड़े क्यों हैं?

अफसर०। मैं यह खजाना ले कर "त्रिपनकूट" के सरकारी खजाने में दाखिल करने जा रहा था। यहाँ से जब लगभग आध मील ऊपर आया हुआ, मेरे घोड़े के सामने एक तीर आ कर गिरा जिसके साथ एक पुर्जा बंधा हुआ था। मैंने तीर से खोल कर उस पुर्जे को पढ़ा तो उसमें यह लिखा पाया, "खजाने की गाड़ी यहीं छोड़ कर तुम लोग फौरन पीछे लौट जाओ नहीं तो एक आदमी भी जीता बचने न पायगा।" मैं इस धमकी की कोई परवाह न कर के बराबर बढ़ता चला गया मगर जब वहां पहुँचा तो दूसरा पुर्जा उसी तरह मिला जिसमें लिखा था—"यह न समझो कि तुम लोग सात आदमी हो और इस तरह हमारे हुक्म को काट कर जा सकते हो, हम पुनः हुक्म देते हैं कि अभी जहां हो, वहीं खजाना छोड़ कर फौरन पीछे लौट जाओ, अगर एक कदम भी आगे रक्खा तो तुम लोगों की बोटी बोटी का पता न लगेगा।" यह पुर्जा पा कर और यह सोच कर कि शायद हमला करने वाले बहुत ज्यादा आदमी हैं और आगे बढ़ने से सरकारी खजाने पर जोखिम आ जाय, मैं रुक कर सोच रहा था कि अब क्या करना चाहिये कि आप की टुकड़ी दिखाई पड़ी और मैं इस लिये रुका रह गया कि आप लोग भी आ जायं तो साथ ही आगे बढ़ूं।"

कप्तान मोरलैण्ड के मुंह पर हंसी दिखाई पड गई। मानों

उनके मन में यह बात दौड़ गई कि हिन्दुस्तानी भी कैसे डर-पोक होते हैं। एक ज़रा से पुरज़े पर डर कर ये सात सवार खड़े हैं और हिम्मत नहीं पड़ती कि आगे बढ़ें"—मगर उन्होंने तुरत ही अपने भाव को छिपा कर पूछा, "क्या आपको मालूम है कि इस गाड़ी में कितना रुपया है?" अफसर ने जवाब दिया, "मैं ठीक ठीक नहीं कह सकता पर सुनता हूं कि सोलह लाख रुपे की अशर्फियां हैं।"

"सोलह लाख !!" ताज्जुब के साथ यह कहते हुए मोर-लैण्ड के चेहरे पर कुछ बल पड़ गये। उन्होंने गौर के साथ कुछ सोचा और तब कहा, "अच्छा आप मेरी फौज के पीछे पीछे चले आयें आप को "चित्रकूट" तक छोड़ दूँगा।"

फौजी सलाम कर उस अफसर ने गाड़ी एक बगल कर दी और मोरलैन्ड अपने सिपाहियों को लिये आगे बढ़ा। जब सब फौज आगे हो गई तो खज़ाने की गाड़ी पीछे पीछे चलने लगी और पुनः सफर शुरू हुआ। मगर मुश्किल से ये लोग सौ गज गये होंगे कि यकायक मोरलैन्ड के घोड़े के सामने एक तीर आ कर गिरा जिसके साथ एक पुर्जा बंधा हुआ था। उन्होंने चिहुंक कर घोड़ा रोका और एक सिपाही को इशारा किया। वह तीर उठा कर उनके पास लाया। उन्होंने पुर्जा खोला और पढ़ा, लाल रंग के कागज पर लाल ही स्याही में लिखा हुआ था, "इस खज़ाने पर हमारी आंख लग चुकी है और इसे हम लोग किसी तरह नहीं छोड़ेंगे, अगर

अपनी जान की खैर चाहते हो तो खजाने की गाड़ी छोड़ कर तुम लोग आगे बढ़ जाओ नहीं फजूल सब के सब मारे जाओगे ."

इसके नीचे किसी का दस्तखत न था केवल एक लाल रंग की बड़ी सी बूंद का निशान बना हुआ था जिसके बीचो बीच में चार उंगलियों का सुफेद निशान बना था।

पुर्जा पढ़ कर मोरलैन्ड ने गुस्से से तीर को जमीन पर पटक दिया और पुर्जे को फाड़ कर टुकड़े टुकड़े कर डाला। इसके बाद क्रोध से मोंछें चबाते हुए उस फौजी जवान ने अपनी पिस्तौल कमर से निकाली और हवा में छोड़ी मानो उस अदृश्य व्यक्ति को जिसने तीर भेजा था खबर कर दी कि वे मोर्चा लेने को तैयार हैं मगर कभी खजाना न देंगे। एक कड़कती हुई आवाज में मोरलैन्ड ने कोई हुक्म दिया जिसके साथ ही सब पैदल और घुड़सवार फौज ने बंदूकें सीधी कीं और उनमें टोटे भर लिये। दूसरा हुक्म हुआ और पुनः डबल मार्च से कूच शुरू हो गया। भला एक फौजी अफसर जिसके साथ सौ पैदल और घुड़सवार फौज के साथ एक तोपखाना भी हो ऐसी मामूली धमकियों की क्या परवाह कर सकता था !!

यकायक दूर से बन्दूक छूटने की भारी आवाज मोरलैन्ड के कान में आई। वे उस पर गौर कर ही रहे थे कि सनसनाता हुआ एक तीर कहीं से आया और उनके घोड़े के पास ही के एक पेड़ के तने में घुस कर कांपता हुआ रुक गया। एक

सिपाही ने उसे निकाल कर मोरलैन्ड के हाथ में दिया मगर उन्होंने गुस्से से उस सवार को अपनी जगह जाने का हुक्म दिया और पुर्जे को बिना पढ़े तीर को तोड़ कर सड़क पर फेंक दिया। इसके बाद घोड़ा बढ़ाया।

मुश्किल से घोड़े ने दो कदम आगे रक्खें होंगे कि यकायक कहीं से आ कर शीशे का एक गोला बीच सड़क पर गिरा और गिरते ही फूट गया। एक हरी बिजली सी लोगों की निगाहों के सामने चमक गई और दूसरे क्षण में डरे हुए सिपाहियों ने देखा कि कैप्टन मोरलैन्ड और उनके घोड़े का कहीं पता भी नहीं है सिर्फ कुछ अधजली हड्डियों के टुकड़े सड़क पर पड़े हैं और अजीब तरह की चिरायंध सी उठ रही है।

सिपाहियों के कलेजे कांप गये और पैर मन मन भर के हो गये। बमों और गोलों से तो वे लोग अच्छी तरह परिचित थे मगर इस तरह के गजब ढहाने वाले शीशे के गोले का ख्याल स्वप्न में भी नहीं हो सकता था। मगर उन्हें कुछ सोचने का भी मौका न मिला और सैन्डरसन ने आगे बढ़ कर कप्तान मोरलैन्ड की जगह लेते हुए कड़क कर कहा, "फायर!!"

एक साथ दो सौ बंदूकों की आवाज से कानों के परदे फट गये। घोड़े चिग्घाड़ उठे, जंगल के परिन्दे और दरिन्दे जानवर एक दम चौंक पड़े। कितने ही पेड़ों के तने चलनी हो गये और धूंए से आसमान भर गया। थोड़ी देर में धूंआ साफ

हुआ और सैन्डरसन ने 'मार्च" का हुक्म दिया। साथ ही सिपाहियों ने पुनः बंदूकें भर लीं।

मुश्किल से फौज ने चार कदम आगे रक्खे होंगे। कहीं से उसी तरह का एक दूसरा गोला आया और सैन्डरसन के घोड़े के पीछे जमीन पर गिर कर फूटा। यह पहिले से दूना बड़ा और शायद अठगुना भयानक था, इसकी हरी चमक से चौंधियाए हुए सिपाहियों की आँखें जब खुलीं तो देखा गया कि सैन्डरसन के साथ ही साथ आगे की चार पंक्ति सिपाहियों की गायब है। केवल कुछ अधजले हड्डियों और कपड़ों के टुकड़े जमीन पर पड़े हुए हैं।

डर के मारे सिपाहियों की बुरी हालत थी। अगर दुश्मन सामने होता और बंदूक तलवार वगैरह मामूली हथियारों से लड़ता तो वे वार का बदला वार से चुकाते पर इस अदृश्य दुश्मन और भयानक गोलों का क्या जवाब दिया जाय। फिर भी उन्होंने हिम्मत न हारी और पैदल और घुड़सवार फौज ने दनादन ऊपर नीचे अगल बगल चारो तरफ फायर करने शुरू कर दिये। तोपखाने के अफसर ने भी हुकूमत अपने हाथ में ली और तोपों में गोले भरे, मगर छोड़ने की नौबत न आ सकी, एक बड़ा सा शीशे का गोला चारो तोपों के बीच में आ कर गिरा और दूसरे सायत में तोप और तोपखाना सभी गायब हो गया। उधर पैदल और घुड़सवार फौज में चार पांच गोलों ने तहलका डाल दिया और देखते देखते आधे से ऊपर

सिपाही मारे गये। मारे गये क्यों कहें एक दम दुनिया से गायब ही हो गये। अब बचे हुए सिपाहियों ने बिल्कुल हिम्मत हार दी और जिसको जिधर रास्ता मिला वह उधर ही को भाग खड़ा हुआ। कुछ ही देर बाद वहां की जमीन बिल्कुल साफ हो गई। केवल वह खजाने की गाड़ी और उसके चारो खच्चर अछूते बच गये थे। इस विचित्र लड़ाई की यह भी विशेषता थी कि जख्मी कोई भी न था और न कोई मुर्दा ही नजर आता था। जिस जिस को उस हरी बिजली ने छूआ वह एक दम गायब ही हो गया था तथा जिसे उसने नहीं छूआ था वह बेदाग बच गया था और इस समय कहीं अपने प्राण बचाने को भाग रहा था।

खजाने की गाड़ी के खच्चर भी भागने के लिये जोर कर रहे थे और आखिर उस भारी गाड़ी को लिये एक तरफ को तेजी से दौड़े मगर कहीं जा न सके। दूर से तेजी के साथ आते हुए दो घुड़सवारों ने उन्हें बड़ी फुर्ती से रोका। एक ने तो उनकी लगाम पकड़ कर खींचा और दूसरा अपने घोड़े से कूद कर हांकने वाले की जगह पर जा बैठा। गाड़ी रुक गई।

दूसरा सवार घोड़े से उतरा। उसके हाथ में एक लाल कागज का टुकड़ा था जिसे उसने जमीन पर रख दिया और कमर से एक तीर निकाल कर उसके ऊपर से जमीन में गाड़ दिया। इसके बाद उसने दूसरे सवार के घोड़े की लगाम

पकड़ ली और अपने घोड़े पर सवार हो गया। खच्चरों पर चाबुक पड़ी और खजाने की गाड़ी घड़ घड़ करती हुई तेजी से रवाने हुई। बगल में यह दूसरा सवार जाने लगा। कुछ ही दूर जाते जाते दोनों आंखों की ओट हो गये और उस जगह मौत का सन्नाटा छा गया।

(३)

रक्षाल से लगभग पचास मील ऊपर बढ़कर एक पहाड़ी मैदान में जहां से हिमगिरि की बर्फीली चोटियों की घटा बड़ी ही मनोहर मालूम होती है एक बड़ा भारी लश्कर पड़ा हुआ है। यहां से नैपाल राज्य की सीमा बहुत दूर नहीं है और काठमान्डू का रास्ता भी इसी जगह से जाता है। लश्कर भारत सरकार का है और इसके कई ऊंचे अफसर यहां दिखाई पड़ रहे हैं। कई नैपाली सरदार और फौजी अफसर भी इन्हीं में मिले जुले दिखलाई पड़ रहे हैं।

एक बड़े खेमे के आगे पेड़ों की साया के नीचे एक बड़ा टेबुल और बहुत सी कुरसियां रखी हैं जिन पर कई अंगरेज और नैपाली अफसर बैठे हैं। इन्हीं में लाट साहब के मिलिटरी सेक्रेटरी मिस्टर फर्गूसन भी हैं आइये हम लोग इन्हीं के पास चलें और सुनें ये लोग क्या बातें कर रहे हैं।

फर्गूसन०। कप्तान बर्न! ताज्जुब की बात है कि हमारी फौजी टुकड़ी अभी तक यहां नहीं पहुंची, इन्हें दोपहर तक यहां पहुंच जाना चाहिये था!

बर्न०। मैं खुद इसी बात पर ताज्जुब कर रहा था। न मालूम क्या बात है। मोरलैन्ड तो बड़ा वक्त का पाबन्द था, इसका इस तरह देर कर करना ताज्जुब में डालता है।

फर्गुसन०। (घड़ी देख कर) दो बज रहा है, ढाई घण्टे में लाट साहब आ पहुंचेंगे। महाराजा साहेब भी शायद आते होंगे। ये लोग नहीं आये तो बड़ा बुरा होगा। (एक नैपाली सरदार की तरफ देख कर) कहिये किशन सिंह जी साहब! आपकी भी तो कुछ फौज आने वाली थी?

किशनसिंह०। जी हां और मैं खुद ताज्जुब कर रहा हूं कि वह क्यों अब तक नहीं आई है? महाराजा बहादुर ने पाँच बजे आने का वक्त दिया था, उनके आने के पहिले अगर फौज नहीं पहुंची तो मैं कहीं का न रहूंगा।

फर्गुसन०। मेरे कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि क्या मामला है।

किशनसिंह (अपने पीछे बैठे एक अफसर की तरफ देख कर) रामसिंह! दो सवार दौड़ाओ जा कर खबर लावें कि फौज कहां है जहां हो वहां से दौड़ा दौड़ आवे!!

राम सिंह उठा और सलाम कर चला गया। फर्गुसन ने यह देख अपने पीछे एक अफसर को देखा और वह भी मतलब समझ तुरत उठ कर चलता हुआ। ये लोग आपस में फिर बातें करने लगे।

यकायक दूर से कुछ आदमियों के एक छोटे गिरोह पर

इन लोगों की निगाह पड़ी जो इधर ही को आ रहा था पहिले तो इन्हें खयाल हुआ कि यह इन्हीं की फौज है मगर फिर तुरत ही विश्वास करना पड़ा कि ये लोग कोई दूसरे ही हैं। थोड़ी देर में ये लोग पास आ गये और इस लश्कर के बाहरी हिस्से पर पहुँच कर रुक गये केवल एक सवार जो कोई अंग्रेज मालूम होता था आगे बढ़ा और कुछ ही देर में जहां ये लोग बैठे हुए थे वहां आ कर घोड़े से उतर पड़ा। अब मिष्टर फर्गु-सन ने पहिचाना कि यह उनके दोस्त मि० केमिल का लड़का एडवर्ड केमिल है। उसे पहिचानते ही उन्होंने कहा, "हलो! एडवर्ड!! तुम यहां कहां?"

सभों ने एडवर्ड से हाथ मिलाया और वह थके हुओं की तरह एक कुर्सी पर गिर गया। उसके चेहरे से इतनी गहरी परेशानी और उदासी टपक रही थी की सभों को विश्वास हो गया कि इस पर जरूर कोई दुर्घटना आई है। सब लोग ताज्जुब के साथ उसकी तरफ देखने लगे। आखिर फर्गुसन ने पूछाः-

फर्गुसन०। एडवर्ड तुम बड़े ही सुस्त और उदास मालूम हो रहे हो आखिर मामला क्या है? तुम तो एक मुहिम पर भ गये थे?

एडवर्ड०। जी हां, मगर कोई सफलता न हुई और हम-लोगों को बुरी तरह जक खा कर लौटना पड़ा।

फर्गुसन०। जक खा कर लौटना पड़ा! सो क्या? तुम्हारे साथ तो पूरा सामान और एक पलोटून भी था!

एडवर्ड०। वह सब लुट गया!

फर्ग्युसन०। लुट गया!! सो कैसे? सब हाल मुझसे खुलासा कहो, और यह भी बताओ कि पं० गोपाल शंकर कहाँ हैं?

एडवर्ड०। वे वापस नहीं लौटे, मैंने बहुत कुछ समझाया परन्तु वे किसी तरह नहीं माने, मुझे सब लश्कर को ले पीछे लौटने का हुक्म दिया और आप पैदल ही कहीं चले गये।

फर्ग्युसन०। अकेले ही!! खैर तुम सब हाल मुझे पूरा पूरा सुनाओ!

एडवर्ड ने वह सब हाल जो हम आगे लिख आये हैं पूरा इन सभों को कह सुनाया और अंत में कहा, "मेरे पास सिर्फ दो दिन की रसद रह गई थी जिससे बड़ी मुश्किल से काम चलाता हुआ आज चौथे दिन मैं यहाँ पहुँचा हूँ। सारा लश्कर अधमूआ हो रहा है। बारे किसी की जान नहीं गई मगर पंडित गोपालशंकर का पता नहीं है उनको मदद पहुँचाने की शीघ्र ही कोशिश होनी चाहिये, नहीं तो वे बड़े खतरे में पड़ेंगे।"

फर्ग्युसन०। सो तो हुई है मगर मेरी समझ में नहीं आता कि कौन सी कार्रवाई की गई जिससे लश्कर का लश्कर बेहोश हो गया और किसी को तनो बदन की सुध न रही। इसमें तो शक नहीं कि यह रक्तमंडल वालों की कार्रवाई है मगर उन्होंने कौन सी तर्कीब की यह पता नहीं लगता।

एडवर्ड०। हम लोगों ने भी बहुत सोचा विचारा मगर

कुछ समझ में न आया और इसी का पता लगाने गोपालशंकर गये भी हैं।

फर्गूसन कुछ कहना चाहते थे कि यकायक बहुत से घोड़ों के टापों की आवाजों ने उन्हें चौंका दिया और वे उधर की तरफ देखने लगे जिधर से लगभग पचास साठ सवार तेजी से इन्हीं की तरफ आ रहे थे। पोशाक और रंग ढंग से वे अंगरेजी फौज के ही सिपाही मालूम होते थे मगर इस समय ये सब इस तरह बेतर्कीब दौड़े चले आ रहे थे मानों कहीं लड़ाई से भागे चले आ रहे हों। थोड़ी ही देर में यह गरोह भी पास आ कर रुक गया और उनमें से दो आदमी जिनमें से एक वह नौजवान अफसर था जो फर्गूसन के हुक्म पर अपनी फौज का पता लगाने गया था, आगे बढ़ कर इन लोगों के पास पहुँचे।

फर्गूसन ने ताज्जुब की निगाह उनकी तरफ उठाई। नौजवान ने घबड़ाए हुए स्वर में कहा, "गजब हो गया! हमारी फौज तो तहस नहस हो गई!! किसी दुश्मन ने उस पर हमला करके आधे से ज्यादा आदमियों को मार डाला बाकी जो बचे वे भाग गये। उनमें से कुछ मुझे मिले जिन्हें मैं साथ ले आया हूं चारों तोपें भी बर्बाद हो गईं और वह खजाने की गाड़ी भी लुट गई जो त्रिपनकुरी से यहां के लिये भेजी गई थी।

यह सुन कर फर्गूसन इस प्रकार चौंक पड़े मानों उन्हें किसी

ने तीर मारा हो। वे एक दम खड़े हो गये और चिल्ला कर बोले, "हैं, सरकारी खजाना लूट लिया गया और अंगरेजी फौज बर्बाद हो गई! यह क्या मैं ठीक सुन रहा हूं!!"

नौजवान बोला, "मुझे अफसोस से कहना पड़ता है कि यह बिलकुल ठीक है। जो कुछ मैं इन सिपाहियों की बातों से मतलब लगा सका हूं, वह यह है कि हमारी फौज इधर चली आ रही थी कि रास्ते में वह खजाने की गाड़ी उन्हें मिली जो रुकी हुई थी। उसके साथ जो छः सिपाही थे उनके अफसर ने कप्तान मोरलेन्ड से कहा कि किसी ने उन्हें खजाना वहीं छोड़ कर चले जाने को कहा था इसी से वे वहां रुक कर सोच रहे थे कि अब क्या करना चाहिये। मोरलैन्ड ने उन लोगों को अपने साथ ले लिया मगर थोड़ा ही आगे बढ़ने पर उन्हें तीर में बंधा एक पुर्जा मिला जिसमें शायद वही बात फिर लिखी थी। उन्होंने अवश्य ही उस पर कोई ख्याल नहीं किया और आगे बढ़े मगर उसी समय कुछ शीशे के गोले आ कर हमारी फौज पर गिरे जिसके गिरते ही आग लग गई और हमारी आधी फौज और तोपखाना देखते देखते उड़ गया। बस यही तो बात है।"

यह विचित्र समाचार सुन फर्गुसन का तो यह हाल हो गया कि वे यह भूल गये कि जागते हैं या सो रहे हैं। उन्होंने गुस्से से टेबुल पर हाथ पटक कर कहा, "ये झूठी बातें! कूड़े का ढेर!! यह क्या कभी मुमकिन है! दो चार

शीशे के गोलों से ब्रिटिश आर्मी नष्ट हो सकती है!! यह कहने वाला पागल है!"

वहां मौजूद और लोगों को भी इस बात पर विश्वास नहीं होता था पर जब उस फौजी टुकड़ी के कई आदमियों को बुला कर पूछा गया और सभों के मुंह से एक ही बात निकली तो सभों को विश्वास करना ही पड़ा।

इस ताज्जुब की बात पर बड़ी ही गुरचूं गुरचूं मची और सभों में बड़ी तेजी से बहस होने लगी कि आखिर यह क्या बात है और यह बहस न जाने कब तक होती रहती अगर एक सवार तेजी से आ कर वहाँ न पहुंचता। यह सवार नैपाल राज्य का था जिसने सलाम कर किशनसिंह के हाथ में एक चीठी दी और पीछे हट गया। किशनसिंह ने चीठी खोल कर पढ़ी और तब फर्गूसन से कहा, "बड़े अफसोस की बात है कि महाराजा साहब की तबीयत यकायक खराब हो गई है और वे तशरीफ नहीं ला रहे हैं। डाक्टरों ने एक हफ्ते तक उन्हें किसी प्रकार की मेहनत करने से मना किया है।"

फर्गूसन ने यह सुन तेजी से पूछा, "सो क्या? महाराजा साहेब को क्या हो गया? खैर तो है!" किशनसिंह ने जवाब दिया, "नहीं कोई डर की बात नहीं है मगर खुलासा कोई हाल नहीं दिया है। कोई दूसरा खत आने पर मालूम होगा।"

इतने ही में वह सवार पुनः आगे बढ़ा और एक लाल कागज का टुकड़ा आगे बढ़ाता हुआ बोला, " मैं आ रहा था तो रास्ते में एक जगह सड़क पर ऐसा मालूम पड़ा मानों कुछ लड़ाई झगड़ा या खून खराबा हुआ हो, उसी जगह एक तीर से छिदा हुआ यह कागज पड़ा था जो मैं उठा लाया हूं।"

किशनसिंह ने वह कागज खोल कर पढ़ा। पढ़ते ही वे चौंक उठे मानों उन्हें बिजली लगी हो, इसके बाद वह कागज फर्गूसन की तरफ बढ़ाते हुए बोले, "यह तो बड़े ताज्जुब की बात है!!" फर्गूसन ने वह कागज देखा और पढ़ा। लाल कागज पर लाल ही स्याही से लिखा होने के कारण वह मुश्किल से पढ़ा जाता था फिर भी कोशिश कर के उसे पढ़ा। यह लिखा हुआ था :—

"रक्त मण्डल के "भयानक चार" का हुक्म न मानने की यही सजा होती है। आगे से लोग होशियार रहें।

"अगर मिस्टर फर्गूसन को यह कागज मिले तो वे भी होशियार हो जांय और समझ लें कि अब हुकूमत दूसरे हाथों में जल्दी ही जाने वाली है। उन्हें चाहिये कि अपना डेरा खेमा सरहद से उठा ले जांय। अब एक महीने तक महाराज और लाट साहब में मुलाकात नहीं हो सकती। अगर वे अपना डेरा नहीं उठावेंगे तो उसकी भी वही हालत होगी जो इस फौज की हुई है।"

इसके नीचे खून की एक बड़ी सी बूंद की तरह का दाग था जिसके बीचोबीच में चार उंगलियों का एक सुफेद दाग था।

फर्गूसन साहब के माथे पर बहुत से बल पड़ गये। वे क्रोध में आ कर कुछ कहना ही चाहते थे कि यकायक कैंप के तार घर के बक्स में से एक अफसर तार का एक लिफाफा लिये वहां पहुंचा। सलाम कर उसने लिफाफा फर्गूसन के हाथ में दिया जिन्होंने आवेश से कांपते हाथों से उसे खोल कर पढ़ा, यह तार था :—

"लाइन बहुत दूर तक टूट जाने के कारण लाट साहब की स्पेशल आ नहीं सकती। वे पीछे लौट रहे हैं। मुलाकात के लिये दूसरा दिन ठीक कर के बतला दिया जायगा। कैम्प तोड़ दो।

डगलस।"

डगलस साहब प्रान्त के लाट के प्राइवेट सेक्रेटरी थे। फर्गूसन ने तार भेजे जाने का मुकाम देखा और समझ लिया कि यहां से लगभग सौ मील दूर यह घटना हुई है। उन्हें रक्तमण्डल के भयानक चार की चीठी का यह जुमला बार बार याद आने लगा, "अब एक महीने तक महाराज और लाट साहेब में मुलाकात नहीं हो सकती—"

कुछ देर तक वे चुप रहे, इसके बाद कांपते स्वर में उन्होंने कहा, "लाइन टूट गई, लाट साहेब वापस चले गये हैं। कैम्प तोड़ देने का हुक्म हुआ है।"

"दुश्मन के किले में"

(१)

अपनी मुहिम पर इस प्रकार असफल होने से पंडित गोपालशंकर को बड़ा ही अफसोस हुआ। सब से बड़ा अफसोस उन्हें उस हवाई जहाज के उन यंत्रों के जाने का हुआ जिन्हें बड़ी मुश्किल से उन्होंने बरसों में तैयार किया था और जिनकी मदद से वे बहुत कुछ क रने की उम्मीद रखते थे। फिर भी वे सहज ही में हिम्मत हारने वाले आदमी न थे। एडवर्ड की सलाह थी कि इस समय लौट चला जाय और फिर दूसरी दफे और मजबूत दल बल के साथ वापस आया जाय मगर गोपालशंकर कुछ और ही सोच रहे थे। उन्होंने एडवर्ड को हुक्म दिया कि वह सभों को ले कर वापस जाय और खुद अकेले ही कहीं जाने की तैयारी करने लगे। कुछ खास खास जरूरी सामानों की उन्होंने एक गठड़ी बनाई और दो तमंचे तथा बहुत से कारतूस भी साथ ले लिये। इसके बाद जो दो दो चार लोग होश में आ चुके थे उन्हें बुला कर उनसे बेहोश होने के बारे में उन्होंने कई तरह के सवाल किये पर सिवाय इसके और कुछ न जान सके कि यकायक उन लोगों को। बहुत गर्मी मालूम पड़ी जो दम के दम में इतनी बढ़ी कि बरदाश्त के बाहर हो गई और उसी के असर से वे बेहोश हो गये थे।

इससे कुछ भी मतलब निकलना संभव न था अस्तु उन लोगों को बिदा कर के उन्होंने एडवर्ड को ताकीद कर दी कि जहां तक हो उनके चले जाने का हाल लश्कर वालों को मालूम न होने पावे। कुछ और भी गुप्त बातें बताने और समझाने के बाद वे पैदल ही एक तरफ को रवाने हो गये।

लगभग दो कोस के जाने बाद गोपालशंकर एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहां दो पहाड़ों की जड़ें मिली थीं जिनके बीच में एक छोटा झरना बह रहा था। दोनों तरफ साल और दूसरे कई तरह के बड़े बड़े जंगली पेड़ों ने घनी छाया की हुई थी जिससे वह स्थान ऐसा हो गया था कि इधर उधर से आने वाले इक्के दुक्के मुसाफिर की आंख भी उन पर नहीं पड़ सकती थी। यह जगह अपने काम की समझ गोपाल शंकर उसी जगह ठहर गये। और अपना सब सामान उतार कर एक पत्थर की चट्टान पर रखने बाद कपड़े भी उतार डाले। यद्यपि हिमालय की बर्फीली हवा शरीर को कंपा रही थी फिर भी उन्होंने अपना बदन एक दम नंगा कर डाला और तब अपने साथ लाए हुए सामानों में से एक शीशी निकाली जिस में किसी तरह का तेल था। यह तेल उन्होंने अपने तमाम बदन मुंह हाथ पांव और एक कपड़े की सहायता से अपनी पीठ में भी अच्छी तरह मला और तब पेड़ों की आड़ में से निकल कर बाहर आ गये जहां एक ऊंची चोटी की आड़ छोड़ कर निकलते हुए सूर्यदेव की किरणें अभी

अभी आ कर गिरी थीं। ताज्जुब की बात थी कि ज्यों ज्यों धूप उनके बदन में लगती थी वह काला होता जा रहा था यहां तक कि देखते देखते ही उनका तमाम बदन इस तरह काला हो गया मानों वे अफ्रिका के कोई हबशी हों। केवल रंग बदल कर ही नहीं रह गया बल्कि उनके बदन का चमड़ा भी जगह जगह से विचित्र प्रकार से सिकुड़ने लग गया और थोड़ी ही देर में तमाम बदन में इस प्रकार झुर्रियें पड़ गईं मानो वे नौजवान न हो कर पचास साठ वर्ष के अधेड़ या बूढ़े हों। अब उनको देख कर उनका बड़े से बड़ा दोस्त भी अचानक उन्हें पहिचान नहीं सकता। तेल लगाने के घंटे भर बाद जब उनकी हालत एक दम बदल गई तब उन्होंने एक मोटा कपड़ा ले कर समूचे बदन को खूब रगड़ रगड़ कर पोंछ डाला और तब कपड़े पहिन लिये। वे कपड़े नहीं जिन्हें पहिन कर वे लश्कर के बाहर हुए थे बल्कि एक दूसरेही ढंग के कपड़े जो उन सिपाहियों के कपड़ों से बहुत कुछ मिलते जुलते थे, जो अक्सर इस प्रान्त में आते जाते दिखाई पड़ते थे और जिनका निवासस्थान तिब्बत या भूटान की सरहद थी। न जाने उन्होंने ये कपड़े कहां से पाये थे या किस लिये साथ ले रक्खे थे।

कपड़े पहिनने बाद उन्होंने एक छोटा शीशा निकाला और उसमें अपना मुंह अच्छी तरह देखा। खूब गौर से देखने बाद उन्होंने सिर हिलाया, मानों उन्हें इस रूप परिवर्तन पर प्रस-

ज्ञात नहीं हुई थी। अब उन्होंने एक छुरा निकाला और अपनी मोंछ और सिर को एक दम सफा कर डाला। इन स्थानों पर भी वही तेल मला जिससे ये भी काले हो गये और तब कपड़े से पोंछ कर उस तरह की गोल टोपी सिर पर पहनी जैसी पहाड़ी पहिनते हैं। अब ये ठीक पहाड़ी मालूम होने लगे थे।

एक बार फिर शीशा ले कर गोपालशंकर ने अपनी शकल देखी। इस समय उन्हें देख कर उनका सगा भाई भी उन्हें पहिचान न सकता था मगर गोपालशंकर को अब भी पूरा संतोष न हुआ। उन्होंने अपने सामान से ढूंढ़ कर दो लम्बे और मैले तथा पीले बनावटी दांतों की पंक्तियां निकालीं जो बड़ी ही पतली कमानी के साथ लगे हुए थे और इन्हें अपने दांतों पर लगाया। ये बनावटी दांत कुछ इस तरह बने हुए थे कि उनके असली दांतों के साथ ऐसा चिपक गये कि नजदीक से देख कर भी यह जानना कठिन था कि ये असली नहीं नकली हैं। इन दांतोंने उनकी शकल इतनी बदल दी कि उन की मां भी अब उन्हें देख कर पहिचान नहीं सकती थी। अब फिर उन्होंने शीशा उठाया और बड़े गौर से अपना चेहरा देख कर प्रसन्नता के साथ गरदन हिला कर बोले, "अब रक्तमण्डल का होशियार से होशियार जासूस भी मुझे पकड़ नहीं सकता मैं बेखटके........." यकायक वे रुक गये। उन्हें ख्याल आया कि उनकी बोली अब भी बदली नहीं है।

इल

शंकर ने अपनी सूरत एक पहाड़ी की सी बनाई और दो पंक्ति नकली दांतों की भी लगा ली।

पृष्ठ—१६०.

गोपालशंकर कच्चे खिलाड़ी नहीं थे। वे जिस काम को करते थे पूरी तरह से करते थे यही उनकी विशेषता थी। उन्होंने पुनः अपना सामान उलटा पुलटा और उस में से एक दूसरी शीशी निकाली जिसमें छोटी छोटी बहुत सी चमकीली गोलियां थीं। इनमें से कई गोलियां निकाल कर उन्होंने मुंह में रख लीं और तब दूसरे काम में लगे। अपने सामने से कागज और कलम निकाल कर खूब सोच सोच कर वे एक चीठी लिखने लगे।

इस चीठी का मजमून क्या था यह हम नहीं कह सकते पर इतना जानते हैं कि इसके लिखने में गोपालशंकर ने बड़ी मेहनत की और कई तरह की कलमों और स्याहियों का प्रयोग किया। लगभग आधे घंटे में जब वह चीठी खतम हुई तो उन्होंने उसे कई बार पढ़ा और तब इस प्रकार सिर हिलाया मानों वे उसे पढ़ कर सन्तुष्ट हो गये हों।

इन सब कामों में उन्हें दो घंटे से ऊपर लग गये और सूर्य अब ऊंचे हो कर मध्याह्न की तरफ आ रहे थे। यह देख उन्होंने जल्दी करनी शुरू की। अपने सामानों में से कुछ बहुत ही जरूरी चीजें उन्होंने कमर में खोंसीं और कुछ कपड़ों में छिपाईं और बाकी सामान को मय कपड़ों के एक गठड़ी बांधी जिसे उन्होंने दो चट्टानों के बीच की एक दरार में छिपा कर उसका मुंह पत्थर के छोटे छोटे ढोंकों से बन्द कर दिया वह चीठी जो अभी अभी लिखी थी अपनी जेब में डाली और

तब एक डंडा हाथ में ले उठ खड़े हुए। पहाड़ियों की तरह लम्बे लम्बे डग मारते हुए शीघ्र ही वे पुनः अपने रास्ते पर आ पहुँचे और तेजी के साथ उधर को रवाना हुए जिधर वह जमीदोज किला था जो उनकी उस विफल मुहिम का लक्ष्य था।

(२)

संध्या का समय है। सूर्यदेव अस्ताचलगामी हुआ ही चाहते हैं और उनकी लाल किरणें हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियों पर पड़ कर उन्हें खून से नहला रही हैं। ऐसे समय में उस जमीदोज किले की एक सफील के ऊपर हम एक नौजवान को कुछ चिन्तित भाव से सर झुकाये टहलते हुए देख रहे हैं।

पाठक इस नौजवान को बखूबी पहिचानते हैं क्योंकि ऊपर वे इनसे मिल चुके हैं। इनका नाम नगेन्द्रनरसिंह है और इस किले के इस समय ये ही सबसे बड़े अफसर हैं। इस समय ये किसी गहरे तरद्दुद में पड़े हुए मालूम होते हैं क्योंकि इनके माथे पर की सिकुड़नें यह बतला रही हैं कि इन्होंने कोई फिक्र पैदा करने वाली खबर सुनी है।

यकायक एक लंबी साँस लेकर उन्होंने सिर उठाया और गरदन घुमा कर किसी को बुलाना या कुछ कहना ही चाहते थे कि अचानक उनकी निगाह सामने के मैदान पर पड़ी। उनकी तेज निगाहों को कोई नई बात तुरत दिखाई पड़ी और

उन्होंने तुरत बगल से लटकती हुई दूरबीन को आंख से लगाया।

उन्होंने देखा कि कुछ दूर के एक मैदान में एक लांबे कद का पहाड़ी अकेला चला आ रहा है। उसकी चाल और आकृति से मालूम होता था कि वह बेतरह थक गया है। थोड़ी दूर चल चल कर वह रुकता और किसी चट्टान का हासना ले कर खड़ा हो जाता था, इसके बाद फिर एक निगाह इस किले की तरफ डाल कर आगे बढ़ना शुरू कर देता था। कुछ देर तक गौर के साथ देखते ही नगेन्द्रनरसिंह समझ गये कि वह पहाड़ी न केवल थकावट ही से चूर हो रहा है बल्कि कुछ चुटीला या बीमार भी है, और यह बात ठीक भी निकली क्योंकि यकायक उस पहाड़ी को एक चक्कर आया जिससे वह लड़खड़ा गया और तब अपने हाथ फैला कर अपने को सम्हालने की चेष्टा करते करते ही वह जमीनपर गिर पड़ा।

नगेन्द्रनरसिंह कुछ देर तक उस तरफ देखते रहे इसके बाद न जाने उनके मन में क्या आया कि वे घूमे और जोर से उन्होंने ताली बजाई। ताली की आवाज के साथ ही एक फौजी जवान उनके सामने आ खड़ा हुआ। नगेन्द्र ने उससे कहा, "वह देखो वहां पर एक पहाड़ी पड़ा हुआ है, उसे जल्दी उठा कर मेरे पास लाओ।"

"जो हुक्म" कह उसने एक फौजी सलाम किया और वहां से चला गया। नगेन्द्रनरसिंह थोड़ी देर तक उस

जगह और टहलते रहे इसके बाद वहां से हटे और अपने बैठने के कमरे में चले आए। जहां एक बड़े टेबुल के ऊपर उत्तरी भारत का एक बहुत बड़ा नकशा फैला हुआ था। नगेन्द्रनरसिंह उसी नकशे के पास खड़े हो कर उसमें कुछ देखने लगे। कुछ देर तक देख भाल कर वह नक्शा लपेट कर रख दिया और एक कुरसी पर बैठ सिर पर हाथ रख कुछ सोचने लगे।

न जाने कितनी देर तक वे इसी तरह बैठे रहे। संध्या हो गई और नौकरों ने वहां आ कर रोशनी कर दी। समूचा किला अंधकार से ढक गया क्योंकि सिवाय इनके, कमरे के और उस मशीन रूम के जो जमीन के अंदर बना हुआ था और जहां वह भयानक मृत्यु किरण तैयार की जाती थी, और उस किले भर में कहीं भी रोशनी करने की इजाजत न थी। चारो तरफ निस्तब्धता का साम्राज्य छा गया जिसके बीच में कभी कभी संतरियों या पहरा देने वालों की आहट के सिवाय और किसी तरह की आवाज सुनाई नहीं पड़ती थी।

यकायक दर्वाजे पर से ताली बजने की आवाज सुन कर नगेन्द्रनरसिंह चौंके और बोले, "कौन है भीतर आओ।" जिसके साथ ही दर्वाजा खुला और दो सिपाही उसी बेहोश पहाड़ी को उठाये हुए अंदर आए जिसे नगेन्द्रनरसिंह ने दूर से देखा था। नगेन्द्र का इशारा पा कर सिपाहियों ने उस पहाड़ी को उसी जगह जमीन पर लेटा दिया। नगेन्द्र उठ कर उस पहाड़ी के पास आए। सूरत शक्ल का वह एक दम काला और

चाल ढाल से भूटानी या तिब्बती पहाड़ी मालूम होता था। नगेन्द्र कुछ देर तक बड़े गौर से उसे देखते रहे इसके बाद उन सिपाहियों से बोले, "यह क्या बिल्कुल बेहोश है?" सिपाहियों ने जवाब दिया, "जी नहीं, मगर रह रह कर इसे होश आ जाता है, मालूम होता है कि कहीं बहुत दूर से आ रहा है और साथ ही गिर कर चुटीला भी हो गया है।"

इसी समय उस पहाड़ी ने करवट बदली और उसके मुंह से कुछ अस्पष्ट बातें निकलीं। नगेन्द्र के इशारे से एक सिपाही ने उसे सहारा देकर उठाया और दूसरे ने उसके मुंह पर पानी के छींटे देने शुरू किये, पानी पड़ते ही उसने आंखें खोल दीं और तब अपने चारो तरफ विचित्र निगाह से देख कर पहाड़ी बोली और भारी आवाज में न जाने क्या क्या कह गया जो नगेन्द्र की समझ में कुछ भी न आया। उन्होंने उससे पूछा, "तुम कहां से आते हो और यहां तुम्हारा क्या काम है?"

न मालूम उस पहाड़ी ने नगेन्द्र की बात समझी या नहीं मगर वह फिर पहिले की तरह एक विचित्र जंगली भाषा में कुछ कह गया। एक सिपाही ने यह देख नगेन्द्रनरसिंह से कहा, "इसकी बात कुछ समझ में नहीं आती, रास्ते में भी इसी तरह न जाने क्या क्या रह रह कर बक उठता था।"

नगेन्द्र ने उस पहाड़ी से कहा, "तुम न जाने क्या कहते हो हमारी समझ में कुछ नहीं आता! क्या तुम हिन्दी नहीं बोल सकते हो?"

यह सुन उस पहाड़ी ने बड़े गौर से नगेन्द्र की तरफ देखा और तब मानों उनका मतलब समझ गया हो इस तरह पर हंसा जिससे उसके मैले पीले दांत दिखाई पड़ने लगे। इसके बाद उसने अपने जेब से एक चीठी निकाली और दूसरे हाथ से एक अशर्फी दिखाता हुआ फिर उसी तरह अस्पष्ट भाषा में कुछ कह गया। मगर इस बार उसकी बात कुछ कुछ समझ में आती थी। मालूम होता था कि वह अपना आशय समझाने के लिये हिन्दी बोलने की कोशिश कर रहा है मगर वह भाषा न जानने के कारण कृतकार्य नहीं हो रहा है।

आखिर बहुत देर तक माथा पच्ची करने के बाद नगेन्द्रनरसिंह ने उसकी बातों का मतलब निकाल ही लिया और समझ गये कि यह पहाड़ी घर जा रहा था जब किसी ने इसे वह अशर्फी और यह चीठी देकर कहा कि इस चीठी को यहां पहुँचा दो तो यह अशर्फी ले सकते हो। यह समझ कर नगेन्द्र ने हाथ बढ़ा कर पहाड़ी से वह चीठी ले ली और उसे खोल कर पढ़ा। उधर वह चीठी नगेन्द्र के हाथ में देते ही वह पहाड़ी फिर गश में आ कर गिर पड़ा।

न जाने उस चीठी में क्या लिखा था कि पढ़ते ही नगेन्द्र-नरसिंह चौंक पड़े !! उनके माथे पर चिन्ता की रेखाएं पड़ गईं और कुछ सायत के लिये वे किसी सोच में पड़ गये। इसके बाद वे कुछ पूछने के लिये फिर उस पहाड़ी की तरफ झुके मगर देखा कि उसे फिर गश आ गया है और दानों

सिपाही उसे पुनः होश में लाने का उद्योग कर रहे हैं। यह देख उन्होंने कहा, "इसे यहां से ले जाओ, होश में ला कर कोई ताकत देने वाली चीज दो, [illegible] कहीं चोट चपेट लगी हो तो इलाज करो और खाने को दो, जब इसकी तबीयत ठीक हो जाय तो इसे फिर हमारे पास लाना। देखो इसे किसी तरह की तकलीफ न होने पावे और होशियार! यह यहां से भागने भी न पावे। अभी इससे मैंने बहुत कुछ पूछना है।

हुक्म सुन दोनों सिपाहियों ने उस पहाड़ी को उठाया और बाहर ले चले। यह क्या केवल हमारा भ्रम है या सचमुच उस समय पहाड़ी के होठों पर एक हंसी की रेखा दिखाई पड़ कर तुरत गायब हो गई!!

(३)

लगभग घंटे भर के दिन चढ़ चुका होगा। नगेन्द्रसिंह स्नान ध्यान आदि से छुट्टी पा कर अपने कमरे में बैठे हुए हैं और कुछ जरूरी कागजात देख रहे हैं। उसी समय पहरेदार ने उनके हाथ में एक बंद लिफाफा ला कर दिया। उन्होंने खोला, भीतर एक कागज निकला जिसपर यह लिखा हुआ था:—

"एक— किला— नै०

नई घटनाएं-मुलाकात जरूरी पूरा मंडल- कमेटी-आज रात- इन्तजाम—"

(चार)

कागज लेते ही नगेन्द्रनरसिंह समझ गये कि यह किले की बेतार की तार द्वारा मिला हुआ एक तार है जिसे रक्त मंडल के भयानक बार ने उनके पास भेजा है और कहा है कि कुछ नई घटनाओं के सबब से उनका इनसे मिलना जरूरी हो गया है और इस लिये आज रात को पूरे मंडल की एक कमेटी होगी जिसके लिये वे मुनासिब इन्तजाम करें।

तार पढ़ कर नगेन्द्रनरसिंह के माथे पर कुछ सिकुड़नें पड़ गई। वे कुछ देर तक कुछ सोचते रहे और इसके बाद एक कागज पर कुछ लिख कर उन्होंने उस आदमी को दिया जो चीठी लाया था। जब वह कागज ले सलाम कर जाने लगा तो उन्होंने कहा, "बाहर से किसी सिपाही को भेजते जाओ। यह आदमी चला गया और उसी समय एक सिपाही ने कमरे में पैर रक्खा। नगेन्द्रनरसिंह ने उससे कहा, "कल जो पहाड़ी मिला है उसे मेरे पास लाओ।"

वह सिपाही चला गया मगर थोड़ी ही देर बाद लौट आ कर बोला, "उस पहाड़ी की हालत तो बहुत खराब है, उसे रात भर बेहोशी रही और आज सुबह से बहुत तेज बुखार चढ़ा हुआ है जिसमें वह बक झक कर रहा है, कभी कभी उठ कर दौड़ता भागता भी है। उसके साथ बातचीत करना एक दम असंभव है।"

सुन कर नगेन्द्रनरसिंह ने अफसोस के साथ कहा, "खैर उसकी पूरी खबरदारी की जाय और इलाज में किसी तरह

की त्रुटि न होने पावे। जैसे ही उसकी हालत ठीक हो मुझे खबर दी जाय।"

"जो हुक्म" कह सलाम करता हुआ वह सिपाही चला गया। उसके जाने के बाद कुछ देर तक नगेन्द्रनरसिंह वहीं बैठे रहे और तब उठ खड़े हुए। अपने कमरे से बाहर आ कर सीढ़ियां उतरते हुए नीचे के मैदान में पहुंचे और वहां से उस तरफ रवाना हुए जहां जमीन के अन्दर बना हुआ मशीन रूम था। यह कैसे गुप्त स्थान में था और यहां का रास्ता कैसा सुरक्षित था यह सब हम पहिले लिख आये हैं अस्तु यहां वह सब पुनः लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है।

मशीन रूम के दर्वाजे पर ही इन्हें 'केशव जी मिले जो इनके आने की खबर पा कर उन्हें लेने आ गये थे। नगेन्द्रनरसिंह केशव जी को लिये उनके प्राइवेट आफिस में चले गये और दोनों में बातें होने लगीं।

नगेन्द्र०। मैंने जो संदेसा भेजवाया था वह आपने भेज दिया ?

केशव०। जी हां, मगर अभी तक उसका कोई जवाब नहीं आया है।

नगेन्द्र०। आज "भयानक चार"की बैठक होगी।

केशव०। जी हां यह तो सांकेतिक शब्दों के अनुवाद के समय मुझे मालूम हुआ। जान पड़ता है कोई बहुत जरूरी बात है जो पूरा मंडल हो आ रहा है।

नगेन्द्र० । जरूर कोई ऐसी ही बात है, परन्तु मेरा विचार अब यहां का प्रबंध इस "भयानक चार" पर डाल कुछ दिनों लिये नैपाल जाने का है।

केशव०। (चौंक कर) सो क्यों ? आपके जाने से तो सभी गड़बड़ हो जायगा ।

नगेन्द्र०। आखिर यह बोझा तो भयानक चार का ही है।

केशव०। मगर एक तरह पर वे आपकी शरण में आ गये हैं और आपने उनकी सहायता करना स्वीकार कर लिया है।

नगेन्द्र०। हां सो तो ठीक है, मगर इधर मैंने कुछ समाचार ऐसे सुने हैं जिससे मेरा मन एक दम व्यग्र हो गया है। यहां भी फिलहाल कोई ऐसा काम नहीं है, जितने रुपयों की जरूरत थी वह करीब करीब इकट्ठा हो ही गया है, गोपालशंकर वाला लश्कर लौट ही गया है, नैपाल सरकार का खतरा कम से कम कुछ समय के लिये टल गया है और भारत सरकार के किसी नये हमले की खबर नहीं है अस्तु कुछ समय के लिये मेरे चले जाने से कुछ हानि का भी संभावना नहीं है।

केशव०। आप बुद्धिमान हैं जो कुछ करेंगे समझ बूझ कर ही करेंगे परंतु मेरी समझ में यह शान्ति तूफान आने के पहिले की शान्ति है और उतनी ही खतरनाक है जितनी

क तूफान स्वयम होता है। हमें युद्धारंभ के पहिले के इस थोड़े से मौके का पूरा लाभ उठा लेना चाहिये और अपने को इतना मजबूत कर लेना चाहिये कि बड़ी से बड़ी शक्ति भी हमारा कुछ बिगाड़ न सके।

नगेन्द्र०। हां सो तो आप ठीक कहते हैं...मगर......

केशव०। क्या मैं जान सकता हूं कि वह काम क्या है जिसने आपको इतना व्यग्र कर दिया है।

नगेन्द्र०। कई हैं, एक तो...आप शायद उस नरेन्द्रसिंह को भूले न होंगे जिसे मैं उस दिन यहां लाया था?

केशव०। हां हां, नैपाली फौज के अफसर!

नगेन्द्र०। हां वेही उनकी! उस दिन एक चीठी आई है कि उनकी बहिन बहुत सख्त बीमार है, बचने की उम्मीद नहीं है, उसे देखने को तबीयत चाहती है दूसरे......

इसी समय सामने की दीवार पर लगी एक घंटी जोर से बज उठी जिसे सुनते ही केशव जी उठ खड़े हुए और कमरे का दोहरा दरवाजा खोल बाहर चले गये। थोड़ी देर बाद जब वे लौटे तो उनके हाथ में एक कागज था जिसे उन्होंने नगेन्द्र-नरसिंह को दिखाते हुए कहा, "मालूम होता है आपके सवाल का जवाब आया है, इसे भयानक चार ने ही भेजा है, मैं अभी इसे साफ करता हूं तो ठीक पता लगेगा।"

वेतार की तार से आया हुआ वह तार सांकेतिक भाषा में था। केशव जी ने अपने पास की ताली से लोहे की मजबूत

आलमारी खोली जो कमरे की दीवार में बनी हुई थी और उसमें से एक मोटी किताब निकाल कर उसकी सहायता से उन सांकेतिक शब्दों का अर्थ निकालना शुरू किया। थोड़ी देर में यह काम समाप्त हो गया और एक दूसरे कागज पर कुछ लिख कर केशव जी ने नगेन्द्रनरसिंह के हाथ में दिया, उन्होंने एक सरसरी निगाह उस पर डाली और साथ ही चौंक कर पुनः गौर से पढ़ने लगे, इसके बाद केशव जी की तरफ देख कर बोले, "यह मामला तो बड़ा गहरा होता दिखाई पड़ता है!"

केशव जी ने कहा, "बेशक!" और तब दोनों में धीरे धीरे कुछ बातें होने लगीं।

(४)

आधी रात का समय है, उस किले में सब तरफ सन्नाटा है, कहीं कोई चलता फिरता दिखाई नहीं देता, न कहीं से किसी तरह की आहट ही आ रही है।

एक छोटे कमरे में जो किले के किसी गुप्त स्थान में है, हम एक छोटी कुमेटी होते हुए देख रहे हैं। कमरा जो मुश्किल से दस हाथ चौड़ा और लंबा होगा सिर्फ एक दीवारगीर की रोशनी पा रहा है जिसके शीशे के चारों तरफ पतला लाल कपड़ा लपेट कर रोशनी और भी कम कर दी गई है जिससे वहां एक प्रकार से अंधकार ही है और बैठे हुए आदमियों की सूरत शक्ल देखना कठिन हो रहा है। बीच में एक गोल टेबुल है जिसके ऊपर लाल कपड़ा बिछा है। टेबुल

पर एक मनुष्य की खोपड़ी रक्खी हुई है जिसके नीचे दो हड्डियां रक्खी हुई हैं और दोनों तरफ दो भैंसों के ताजे कटे और खून से सने सिर रक्खे हुए हैं। सब कुर्सियों पर भी लाल कपड़ा बिछा हुआ है और उन पर लाल ही कपड़ा पहिने तथा लाल नकाब से अपना चेहरा ढांके हुए कई आदमी बैठे हैं जो गिनती में पांच हैं। कमरे में आने का सिर्फ एक ही दर्वाजा है, जो इस समय भीतर से बन्द है और उसके आगे भी लाल पर्दा पड़ा हुआ है। सन्नाटे और अन्धेरे में वे भीषण महिषमुण्ड और नर कपाल बड़े ही भयानक मालूम हो रहे हैं और उनके चारो तरफ बैठे हुए वे पांचों निस्तब्ध आदमी पिशाचों की तरह दिखाई पड़ते हैं।

यकायक दूर से किसी जगह शङ्ख बजने की एक हलकी आवाज उस कोठड़ी में पहुंची। आवाज आते ही वे पांचों आदमी उठ खड़े हुए। किसी अज्ञात शक्ति को उन सभों ने माथा नवाया और तब पुनः एक को छोड़ सब के सब बैठ गये। उस एक ने धीमी मगर गम्भीर आवाज में कहना शुरू किया :—

"आज बहुत दिनों के बाद हम लोग पुनः इकट्ठे हुए हैं।"

"बड़ी प्रसन्नता की बात है कि इस समय वे महाशय भी हमारे बीच में मौजूद हैं जिनके हाथ में एक तरह से हम लोगों ने अपने मण्डल की बागडोर दे दी है। उन्होंने पिछले दिनों में और आज कल भी जिस प्रकार हमें सहायता पहुंचाई है उन

से हम किसी प्रकार भी उऋण नहीं हो सकते पर उसका वर्णन करने को यह समय और स्थान उपयुक्त नहीं है। हमारा केवल यही कहना है कि वे अब भी इस भयानक चार के सिर बने रहें और इसका काम चलाते रहें।

"पिछली बैठक में जो आज से छः महीना पहिले हुई थी यह तय हुआ था कि हम चारों में से एक तो यहां रह कर उन यन्त्रों और आविष्कारों को पूर्ण करे और बाकी तीन समूचे देश में घूम घूम कर उस आग को फिर से जलाने की कोशिश करें जो कई बरस पहिले बुझ चुकी थी। वैसा ही किया गया और उस महाशक्ति को धन्यवाद देना चाहिये कि इसमें पूरी सफलता मिली। यद्यपि ऊपर से वह आग बुझी दिखती थी पर भीतर भीतर इतनी चिनगारियां मौजूद थीं और इस तेजी से दहक रही थीं कि हम लोगों के जरा सा हवा देते ही राख उड़ गई और भयानक अग्नि जलने लग गई। छः महीने से कम के ही उद्योग में एक लाख से अधिक व्यक्ति हमारे झण्डे के नीचे आ गये जिनमें से प्रत्येक ने हमारी शपथ खाई है और जिनमें से हर एक मनुष्य इस देश के लिये जान दे देना अपना सौभाग्य समझेगा।

"अवश्य ही इतने बड़े दल में कुछ काली भेड़ों का भी आ मिलना स्वाभाविक था, बल्कि उसे हमलोग रोक ही नहीं सकते थे, सरकार को हमारे उद्योग का पता लग गया और हमें पुनः चूर्ण करने की तैयारी होने लगी और सब जगहों

में तो जो कुछ हुआ सो हुआ ही, हमारे दुश्मन को किसी तरह यह पता लग गया कि हमारा हेडक्वार्टर यह किला है और इस पर हमला करने की तैयारी की गई। एक तरफ से नैपाल राज्य पर दबाव डाला गया, दूसरी तरफ से एक दल यहां की खुली तरह से जांच करने भेजा गया और तीसरी तरफ से एक बड़ी पलटन यहां से दो तीन दिन की मुहिम के फासले पर इकट्ठी की गई जिसका उद्देश्य अवश्य इस किले पर हमला करना है। इधर सरकार और नैपाल मन्त्री के बीच में भी मुलाकात का प्रबन्ध किया गया है और कुछ ही समय की देरी के बाद अवश्य ही ये बादल फट पड़ेंगे। आज की बैठक इसी लिये की गई है कि जिसमें यह निश्चय हो जाय कि अब क्या करना चाहिये।

"यहां आने के पहिले हम लोगों ने प्रान्तीय मुखियाओं के साथ मिल कर जो कुछ तय किया है उसका सार भी बैठने के पहिले मैं बता देना चाहता हूं। इस समय यहां के दो बड़े और स्वतंत्र देशी राज्यों से सरकार की जिस प्रकार खचखच चल रही है वह सभी जानते हैं और एक विदेशी राज्य के हमले का मुकाबिला करने के लिये भी जो फौजी तैयारी हो रही है उससे सब परिचित हैं। इसके सिवाय देश में गुप्त रूप से जो कुछ आन्दोलन हम लोग कर सके हैं उसका भी प्रभाव आशाजनक हुआ है अस्तु इस समय हम लोगों की राय में खुला विद्रोह कर देने का बड़ा सुन्दर

मौका आ गया है जिसे कभी हाथ से जाने नहीं देना चाहिये। जैसा कि रिपोर्टों से मालूम हुआ है। जो शक्ति हमारे हाथ में "मृत्यु किरण" के आविष्कार ने दे दी है वह अमोघ है और इससे हम इस देश क्या संसार पर विजय पा सकते हैं अस्तु हम लोगों की राय में यह ऐसा मौका है जब कम से कम खून खराबा कर के हम यहां का शासन सूत्र अपने हाथ में ले सकते हैं अस्तु इस समय हमें चोट कर देनी चाहिये, यही हम लोगों की राय है। हम अपनी यह राय उन महादेय के सामने पेश करते हैं जिन्होंने बड़े आड़े हमारी सहायता की, कर कर रहे हैं, और करते रहेंगे, उनके हाथ में हमने अपने को पूरी तरह पर दे दिया है, अब वे जैसी आज्ञा दें हम लोग वही करें।"

इतना कह वह आदमी बैठ गया और कमरे में सन्नाटा छा गया।

कुछ देर तक सन्नाटा रहा। इसके बाद एक दूसरा आदमी खड़ा हुआ। खड़े होते ही उसने अपने चेहरे की नकाब उलट दी और तब हमने पहिचाना कि यह नगेन्द्रनरसिंह हैं। नगेन्द्रनरसिंह खड़े हो कर धीमी, मगर मजबूत आवाज में कहने लगेः—

"जिस समय आज से बहुत दिन पहिले आप लोग, या आप में से कुछ, क्योंकि समय और महाकाल ने कुछ को आप से अलग कर दिया है, मेरे पास आये थे और मैंने एक

करोड़ रूपया आपको देना स्वीकार किया था। उस समय आपकी मदद करने का कारण यह नहीं था कि आप उसी भूमि के रहने वाले थे जिसके एक कोने में मेरा भी देश है। मैंने जो आपकी सहायता की वह केवल इसी लिये कि आप एक पतित और पददलित जाति के उत्थान का प्रयत्न कर रहे थे। आज जो जाति आपको अपने नीचे दबाये हुए है वही यदि कल उस अवस्था में हो जाय जिसमें आज आप हैं तो मैं वैसी ही प्रसन्नता के साथ उसकी भी सहायता करूंगा। खैर, मतलब यह कि संसार की प्रत्येक पददलित पराधीन जाति से मेरी सहानुभूति है और मैं सभी जातियों को स्वतंत्र और बराबरी के दर्जे पर देखना चाहता हूं, इसी से मैंने आपकी सहायता करना स्वीकार किया। आपको किसी प्रकार, जिस प्रकार कि मुझसे हो सका, बटोर बटार या लूट मार कर मैंने एक करोड़ रूपया दिया और आपने उसे खर्च भी कर दिया। यद्यपि कहना पड़ेगा कि उसका कोई सुफल देखने में नहीं आया बल्कि एक ऐसी चोट खानी पड़ी कि इतने दिनों का किया कराया चौपट हो गया।

"मैं उसी समय इस बात को जानता था और शायद आप को याद हो या न हो मैंने रूपया देती समय ही अपना संदेह प्रगट कर दिया था कि आप जिस रीति का अवलंबन कर रहे हैं उससे मुझे सहानुभूति नहीं है और वह शायद सफलता का मार्ग भी नहीं है। छिपी हत्याओं और पीछे से किये हुए

खूनों ने आज तक किसी देश को स्वतंत्र नहीं किया और न एकान्त निरीहता और शान्तिप्रियता ही किसी देश को पराधीनता से छुड़ा सकी है। पाशविक शक्ति का सामना पाशविक शक्ति ही कर सकती है। आग के भयंकर उत्ताप को आप नहीं रोक सकते उसके लिये आपको वायु, पत्थर की दीवार या पानी की धार चाहिये। जिस शक्ति ने पाशविक बल की सहायता से आपको दबा रक्खा है उसको हटाने के लिये पाशविक शक्ति की ही आवश्यकता है यही मेरा विश्वास था और है। अस्तु उस समय जब आपकी असफलता का हाल मैंने सुना तो मुझे दुःख होते हुए भी आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि आपके पीछे कोई मजबूत पाशविक शक्ति नहीं थी।

"यही सबब है कि दूसरी बार जब एक दूसरे प्रकार का प्रस्ताव ले कर आप लोग मेरे पास आए तो मैंने उसे खुशी के साथ सुना। आपने अपने ही एक प्रख्यात वैज्ञानिक द्वारा आविष्कृत "मृत्यु किरण" का हाल मुझसे कहा और मेरे दिल ने उसी समय मुझसे कह दिया कि यह सफलता का मार्ग है। मैंने खुशी से उस आविष्कार का पूरा अनुसंधान करने और उसका एक काम करने लायक माडल बनाने के लिये एक करोड़ रुपया फिर दिया। महामाया की कृपा से आप का आविष्कार सफल हुआ। मैंने भी उसकी जांच की और उसकी शक्ति की सम्भावना ही से मैं प्रसन्न हो गया। उसे खड़ा करने के लिये मैंने आपको अपना गढ़ किला दिया जो यद्यपि अब

नैपाल राज्य का कहलाता है परंतु वास्तव में मेरे पूर्वजों की ही संपत्ति है। आपने यंत्र खड़े किये और उसकी अपार शक्ति देख कर मैं इतना प्रसन्न हुआ कि तब से मैं यहां ही हूं।

"अब काम करने का वक्त आ गया ऐसा आप लोग कहते हैं, मैं इस के बारे में कुछ नहीं जानता क्योंकि मुझे आपके देश की भीतरी हालत से कुछ बहुत जानकारी नहीं है और न उसकी गति विधिही पर मैंने लक्ष्य रक्खा है। अस्तु इसके सब से उत्तम परीक्षक आप ही हैं। मैं तो सिर्फ एक सिपाही हूं मेरा जन्म जिस वंश में हुआ वह मशहूर लड़ाका था और मेरी शिक्षा भी वैसी ही हुई, परिस्थितियों से अब तक बराबर मैं लड़ता ही आया हूं; अस्तु लड़ाई के नाम से मुझे प्रसन्नता होती है। अगर आप समझते हैं कि इस समय खुला विद्रोह करने का समय आ गया है तो बहुत अच्छा है, जरूर युद्ध आरंभ कर दीजिये, मेरा दिल आपके साथ है, मेरी तलवार आपके साथ रहेगी। हां यह आपको अच्छी तरह सोच लेना चाहिये कि लड़ाई शुरू करने का वक्त आ गया कि नहीं। इसके बारे में मैं आपको कोई सलाह नहीं दे सकता।"

नगेन्द्रनरसिंह बैठ गये। उनके बैठते ही एक तीसरा आदमी उठा और बोला, "इस संबंध में मैं आपको यह कह देना चाहता हूं कि इस 'भयानक चार' की राय में युद्ध छेड़ने का मुनासिब मौका आ गया। अगर केवल इतने ही से आपका मतलब हो तो यह जिम्मेदारी हम लोग अपने पर लेने को तैयार हैं कि

कि जैसा मौका इस समय है वैसा पिछले डेढ़ सौ वर्षों में कभी नहीं आया था।"

नगेन्द्रनरसिंह यह सुन बोले, "बस यह आप लोग जानिये, युद्ध घोषणा करना आपका काम है।"

जिस आदमी ने सब से पहिले कहा था वह नगेन्द्रनरसिंह की बात सुन बोला, "युद्ध घोषणा करने को हम लोग तैयार हैं परंतु हमें अफसोस यही है कि हमारे पास सेनापति कोई नहीं। युद्ध संचालन एक वास्तविक चीज़ है जो योद्धा ही कर सकता है। हमारे देश में इस समय नेता लाखों हैं और फिलासफर करोड़ों परंतु योद्धा एक भी नहीं है। शताब्दियों की हमारी पराधीनता का यह परिणाम है। इसी अभाव के कारण हम लोग युद्ध घोषणा करते डरते हैं। आज मुख्यतः हम आप से यही प्रार्थना करने आए थे कि आप हमारे सेनापति का काम लीजिये।"

नगेन्द्र यह सुन कुछ सोच में पड़ गये, थोड़ी देर के लिये उनकी आंखें बंद हो गईं। इसके बाद वे बोले,' मैं आप लोगों की जरूरत समझता हूं इस लिये और विशेष कर इस लिये कि युद्ध का नाम सुन मेरी भुजाएं फड़कने लगी हैं मैं आपका सेनापतित्व ग्रहण करने को तैयार हूँ परन्तु एक शर्त पर।"

सब बोल उठे—'क्या ? क्या ?" नगेन्द्र ने कहा, "मुझे किसी निजी काम के लिये काठमाण्डू जाना आवश्यक है, वहां—

मुझे पंद्रह दिन के लगभग लगेंगे। वहां से लौट कर मैं आप का सेनापतित्व ले सकता हूं।"

भयानक चार एक स्वर से बोले, "हमें मंजूर है परन्तु युद्ध के लिये पहिले बहुत कुछ तैयारी करनी पड़ती है, अपनी सेना रसद और गोला बारूद के डिपो बनाने पड़ते हैं, छोटे सेनापति और अफसर नियुक्त करने पड़ते हैं और साधारणतया युद्ध का एक क्रम तैयार कर लेना पड़ता है। क्या आप यह कर के और हम लोगों के सपुर्द भिन्न भिन्न काम कर के तब एक महीने की छुट्टी नहीं ले सकते ?"

नगेन्द्रनरसिंह हंस पड़े पर फिर तुरंत ही गंभीर हो कर बोले, "हां यह सब मैं कर सकता हूँ। इसमें कोई विशेष समय की आवश्यकता नहीं, बल्कि सच तो यह है कि मैं आज कई दिनों से यही सोच रहा था कि जब युद्ध आरंभ होगा तो किस किस तरह से क्या क्या करना पड़ेगा और कैसी लड़ाई लड़नी होगी। यदि आप चाहें तो मैं अभी अपना इरादा आप पर जाहिर कर सकता हूं।"

भयानक चार की इच्छा जान नगेन्द्रनरसिंह उठ खड़े हुए और एक आलमारी खोल एक बड़ा सा नकशा निकाल लाए। नकशा दीवार पर एक तरफ टांग दिया गया और रोशनी कुछ तेज कर दी गई। नगेन्द्रनरसिंह अपना युद्ध का क्रम "भयानक चार" को समझाने लगे।

लगभग घंटे भर के इस काम में लग गया और इसके बाद

सब पुनः उस टेबुल पर लौट आए। नगेन्द्रनरसिंह ने कहा, "मैंने अपना विचार आप पर प्रगट कर दिया, अगर आप लोगों को यह स्वीकार हो तो इसके अनुसार काम कल ही से शुरू कर दिया जा सकता है।"

सब बोल उठे, "हां यह हमें स्वीकार है इससे अच्छा युद्ध क्रम हो हा नहीं सकता। अब आप इसी समय हम लोगों के सपुर्द काम कर दीजिये जिसमें कल ही से काम जारी हो जाय।"

"बहुत अच्छा" कह कर नगेन्द्रनरसिंह ने कुछ देर के लिये आँखें बन्द कीं और तब पुनः कहना आरंभ किया। इस समय उनकी आवाज पहिले से गंभीर हो गई थी और उसमें एक विचित्र मजबूती आ गई थी।

नगेन्द्र०। मेरी इच्छा है कि इस युद्ध में जहां तक कम खून खराबा हो उतना ही अच्छा है क्योंकि इससे हमारे ही देश के मनुष्यों की अधिक संख्या मरेगी। युद्ध के दो बहुत बड़े अस्त्र हैं—अपने केन्द्र को मजबूत रखना और दुश्मन का नैतिक अधःपतन कर देना। इस युद्ध का केन्द्र यह किला ही रहेगा। इस समय यहां जो बेतार की तार का यन्त्र मौजूद है वह इस देश क्या समूचे एशिया की खबरें लेने और देने के योग्य है, मृत्यु किरण का यह उत्पत्ति स्थान ही ठहरा और कम से कम स्वाभाविक रक्षा यहां खूब है। यहां से हमारी पीठ और दोनों बगल सुरक्षित हैं या रहेंगी अगर हम नैपाल

का प्रबंध रख सकें—और मुझे विश्वास है कि वह मैं रख सकूंगा—तो दुश्मन हमारे सिर्फ एक दिशा में रहेगा और उस पर हम बखूबी वार कर सकेंगे। पहाड़ी स्थान और चारों तरफ से ऊंचे पहाड़ों से घिरा होने से फौजें भी जल्दी और सफलतापूर्वक इस किले पर हमला नहीं कर सकतीं। अस्तु केन्द्र बनाने के लिये यही किला सब से उपयुक्त है।

अब दूसरी बात रही दुश्मन का नैतिक अधःपतन। इसके लिये मैं यह सोचता हूं कि आपके एजेन्ट या आप लोग स्वयं ऐसा प्रबंध करें कि जहां जहां दुश्मन की फौज रहने के अड्डे अर्थात् कैन्टोनमेन्ट्स हैं वहां वहां आप की भी फौज रहे जो उनको इस प्रकार संत्रस्त रक्खे कि वे न तो दूसरी जगह कहीं मदद को ही जा सकें और न अपना ही सिर उठा सकें और जब ऐसा करने का प्रबंध पूरा हो जाय तो सरकारी केन्द्रों पर हमला शुरू कर दिया जाय।

हमारे केशव जी ने मेरी राय से अपनी मृत्यु किरण के बड़े ही सुन्दर फलप्रद गोले बनाए हैं। यद्यपि वे बम की तरह ही हैं परन्तु उनमें उससे कहीं ज्यादा ताकत है। ये गोले जहां फूटें उसके दस गज के भीतर कोई भी चीज रहने नहीं पाती, उसका अस्तित्व ही लोप हो जाता है। इस समय इम्तिहानन थोड़े से गोले मैंने बनवाए थे पर जाँच से वे बड़े ही अच्छे सिद्ध हुए हैं अस्तु उनमें के बहुत से तैयार कर के दल के दल में बांट दिये जायँ और वे ही युद्ध के हमारे मुख्य

शस्त्र होंगे। कल जब आप लोग उन्हें देखेंगे तो स्वयम् जान जायंगे कि वे कैसे अच्छे अस्त्र हैं। अवश्य ही उनका उचित प्रयोग और अपने दल का उचित संचालन मेरी आज्ञानुसार एक दम ठीक और फौजी कड़े कायदों के साथ ही इसका प्रबन्ध आपको रखना होगा।

आप लोग चार आदमियों के सपुर्द मैं चार काम कर देना चाहता हूँ नम्बर एक केशवजी का यहां रहना जरूरी है। नंबर दो को मैं इस किले के चारो तरफ सौ सौ मील का क्षेत्र सपुर्द कर देना चाहता हूं। नंबर तीन के सपुर्द देश का उत्तरी समूचा भाग और नंबर चार के जिम्मे सारा दक्षिणी भाग रहेगा। अपने मातहत अफसर आप लोग स्वयम् चुन लें। आप के कर्त्तव्य और मेरी आज्ञाएं किस प्रकार आप के पास पहुंचेंगी और कैसे इन्हें पालन करना होगा यह मैं कल आप लोगों को बताऊंगा, आज सिर्फ एक बात और कह के मैं मीटिंग समाप्त करना चाहता हूं।

भारत सरकार के भेजे हुए जिस दल के नष्ट भ्रष्ट करने का हाल आप लोग जान चुके हैं उसके सामानों में से दो चीजें बहुत ही काम की हमारे हाथ लगी हैं। एक तो एक वायुयान और दूसरा बेतार की तार लेने और भेजने का एक बहुत ही छोटा परंतु बड़ा ही शक्तिशाली यंत्र। ये दोनों ही चीजें मुझे प्रसिद्ध वैज्ञानिक पंडित गोपालशंकर की कृति मालूम होती हैं जो दुनियां में अकेले आदमी हैं जिनसे मैं भी

भय खाता हूं। वायुयान की विशेषता यह है कि उसके चलने में आवाज बिल्कुल नहीं होती। आप जानते ही हैं कि वायुयान का सब से भारी शत्रु उसकी भयानक आवाज ही है—और उस बेतार के यंत्र की विशेषता यह है कि एक ही यंत्र भेजने और लेने दोनों का काम करता है और एक हजार मील तक की शक्ति रखता हुआ भी इतना छोटा है कि उसे दो घोड़ों पर पूरे सामान सहित खुशी से लादा जा सकता है। एक तारीफ उसकी यह भी है कि उससे काम लेने के लिये बिजली के बड़े यंत्रों की आवश्यकता नहीं है बल्कि मामूली कुछ बैटरियों ही से वह बहुत ठीक काम कर सकता है। वैसे वैसे और उसी माडल के बल्कि उससे छोटे यंत्र तैयार करने के लिये केशव जी तैयार हैं और उनका कहना है कि एक महीने के बाद वे दोनों ही चीजें वायुयान और बेतार का यंत्र, अवश्य ही परिमित संख्या में दे सकते हैं। इन दोनों चीजों की सहायता से हमें अपने युद्ध में जितनी सहायता मिल सकती है वह आप लोग खुद सोच सकते हैं।

नरेन्द्रनरसिंह की इस बात ने "भयानक चार" को एक दम प्रसन्न कर दिया और वे लोग उसके बारे में तरह तरह के सवाल करने लगे। नरेन्द्रनरसिंह से और उनसे लगभग एक घंटे तक और बातें होती रहीं जिनमें और भी बहुत कुछ तय हुआ और तब मीटिंग बर्खास्त हुई।

* * * * *

जिस समय ये लोग उस कमरे के बाहर आ रहे थे उस समय एक मैले और फटे कपड़ों वाला लांबे कद का काला पहाड़ी उस कमरे की छत से उतर कर एक तरफ जा रहा था। रात के तीन बज गये थे और चारो तरफ की निस्तब्धता पूर्ण शान्ति और पिछली रात की सर्दी ने पहरेदारों को भी आंखें झपकानी शुरू कर दी थीं जिससे उस पहाड़ी को अपने ठिकाने पहुँच जाने में कुछ भी तरद्दुद न हुआ और वह बेरोक टोक अपनी जगह पहुँच कर लेट गया। दो ही मिनट के बाद उसकी नाक इस तरह बजने लगी मानों वह कई रात का जागा हुआ हो।

(५)

दूसरे दिन सुबह ही से उस जमींदोज किले में कुछ विचित्र प्रकार की जागृति दिखाई पड़ने लगी। सिपाही और अफसर इधर उधर घूमने और मोरचे कायम करने लगे और इञ्जीनियर लोग चारो तरफ दूर दूर तक घूम घूम कर जहां जहां से इस किले पर हमला हो सकता था अथवा जहां जहां से उस जंगली मैदान में आने का रास्ता बनाया जा सकता था उन जगहों को बारूद से उड़ा कर दूसरी तर्कीबों से मजबूत करने की फिक्र करने लगे। यों तो वैसे ही वह स्थान बड़ा ही सुरक्षित था दूसरे जहां जहां कमजोरी की संभावना थी वहां मजबूती करने की पूरी चेष्टा होने लगी। किले के बीच में एक छोटा मैदान पेड़ पौधों से साफ किया

जाने लगा और अन्दाज से मालूम पड़ा कि यह उस वायुयान के उतरने चढ़ने के लिये बनाया जा रहा है। उसी जगह एक तरफ ऊंचे पेड़ों की झुरमुट के अन्दर वह वायुयान भी खड़ा दिखाई पड़ने से यह संदेह और भी पुष्ट होता था।

इन सब इन्तजामों और तरद्दुदों में पड़े हुए नगेन्द्र नरसिंह और उन भयानक चार का वह समूचा दिन दौड़ धूप में ही बीत गया और शाम को जब करीब सभी बातों का सिलसिला दुरुस्त हो गया तो भयानक चार में से तीन तो नगेन्द्रनरसिंह से आखिरी हुक्म ले कर वहां से चले गये, और चौथे अर्थात् केशव जो अपने मशीन रूम में चले गये। उस समय नगेन्द्रनरसिंह को इतनी मोहलत मिली कि अपने कमरे में जा कर थोड़ी देर विश्राम कर सकें। उसी समय उन्हें उस पहाड़ी की भी याद आई और उन्होंने उसे तलब किया।

थोड़ी ही देर बाद वह पहाड़ी उनके सामने लाया गया। अब उसका बुखार छूट गया था और दर्द में भी बहुत कुछ कमी हो गई थी फिर भी वह बड़ा ही दुर्बल और घबड़ाया हुआ सा मालूम होता था। जो लोग उसे लाये थे उन्हीं की जुबानी मालूम हुआ कि वह अपने घर जाने के लिये घबड़ा रहा है बल्कि उठ उठ कर भागता है और बड़ी मुश्किल से धर पकड़ कर वे लोग उसे रोके हुए हैं। नगेन्द्र ने यह सुन सिर हिलाया और इशारे से सिपाहियों को वहां से चले जाने

को कहा। जब निराला हो गया तो वे उस पहाड़ी से बातें करने लगे।

दो तीन दिन तक वहां रहने और सिपाहियों के लगातार उससे कुछ न कुछ बात करते ही रहने के कारण वह जंगली अब कुछ कुछ बातें करने के लायक हो गया था। फिर भी वह इतना बड़ा उजड्ड और बेवकूफ था कि बहुत देर तक माथा पच्ची करने के बाद उसकी एक बात समझ में आती थी। जो कुछ टूटे फूटे शब्दों में और बड़ी खींचातानी के बाद नगेन्द्र-सिंह को मालूम हो सका उसका सारांश यही था कि वह काठमान्डू होता हुआ अपने देश को जा रहा था जब काठमान्डू में एक दिन एक औरत ने उसे यह चीठी और एक अशर्फी दे कर इस किले का पता बताया। और कहा कि अगर यह चीठी वहां के अफसर को देकर इसका जवाब ला सको तो दो अशर्फी और इनाम मे मिलेंगी। इन्हीं अशर्फियों की लालच में वह अपने देश जाता छोड़ जंगल पहाड़ छानता गिरता पड़ता यहां तक पहुंचा। रास्ते में वह एक जगह गार में गिर कर बहुत चुटीला भी हो गया था वारे किसी तरह जीता जागता पहुँच गया। अगर यह चीठी आप की ही हो तो आप इसका जवाब मुझे दे दें ताकि मैं दो अशर्फी और पा जाऊं और अगर आप की न हो तो यह चीठी ही वापस कर दें।

बड़ी माथापच्ची के बाद उस बेवकूफ की बातों से ऊपर कहा हुआ मतलब नगेन्द्रनरसिंह निकाल सके, मगर इससे

उनका काम बखूबी बन गया। उन्होंने उसी समय उस चीठी के जवाब में एक चीठी लिखी और उसे लिफाफे में बंद कर मुहर करने के बाद उसे उस पहाड़ी को देते हुए बोले, "यह चीठी का जवाब है इसे उसी को दे देना जिसने तुम्हें वह चीठ दी थी और यह लो इसका इनाम!" कह कर उन्होंने चार अशर्फी उस जंगली के हाथ पर रख दी।

चार अशर्फी पाते ही वह जंगली खुशी के मारे नाचने लग गया। अपनी विचित्र भाषा में न जाने क्या कहते हुए उसने नगेन्द्रनरसिंह को कई दर्जन सलाम बजा दिये और उनके पैरों की धूल माथे से लगाई। इसके बाद वह जाने को तैयार हुआ और शायद उसी समय रात के वक्त और रास्ते की भीषणता का कुछ भी खयाल न कर के वह चल पड़ता मगर नगेन्द्र-नरसिंह ने उसे समझाया कि रास्ता बहुत खतरनाक है और आज सिपाहियों का पहरा दूर २ तक पड़ रहा है जो जरा भी शक होते ही उसे गोली मार देंगे। अस्तु वह सुबह अपनी मुहिम पर रवाना हो। नगेन्द्र की बात से वह देहाती खुश नहीं हुआ फिर भी उसने उनका कहा मान लिया। नगेन्द्र ने उसी समय एक सिपाही बुला कर उसके सपुर्द जंगली को कर दिया और कह दिया कि कल खूब सवेरे ही इसे खुद साथ ले कर अपनी हद के बाहर कर देना देखना कोई इसके जाने में छेड़ छाड़ न करे और न कोई रात को किसी तरह इसे तंग करे।

सुबह होने में कुछ ही देर थी, नगेन्द्रनरसिंह अपने कमरे

को कहा। जब निराला हो गया तो वे उस पहाड़ी से बातें करने लगे।

दो तीन दिन तक वहां रहने और सिपाहियों के लगातार उससे कुछ न कुछ बात करते ही रहने के कारण वह जंगली अब कुछ कुछ बातें करने के लायक हो गया था। फिर भी वह इतना बड़ा उजड्ड और बेवकूफ था कि बहुत देर तक माथा पच्ची करने के बाद उसकी एक बात समझ में आती थी। जो कुछ टूटे फूटे शब्दों में और बड़ी खींचातानी के बाद नगेन्द्र-सिंह को मालूम हो सका उसका सारांश यही था कि वह काठमान्डू होता हुआ अपने देश को जा रहा था जब काठमान्डू में एक दिन एक औरत ने उसे यह चीठी और एक अशर्फी दे कर इस किले का पता बताया। और कहा कि अगर यह चीठी वहां के अफसर को देकर इसका जवाब ला सको तो दो अशर्फी और इनाम मे मिलेंगी। इन्हीं अशर्फियों की लालच में वह अपने देश जाता छोड़ जंगल पहाड़ छानता गिरता पड़ता वहां तक पहुंचा। रास्ते में वह एक जगह गार में गिर कर बहुत चुटीला भी हो गया था सारे किसी तरह जीता जागता पहुँच गया। अगर वह चीठी आप की ही हो तो आप इसका जवाब मुझे दे दे ताकि मैं दो अशर्फी और पा जाऊं और अगर आप की न हो तो वह चीठी ही वापस कर दें।

बड़ी माथापच्ची के बाद उस बेवकूफ की बातों से ऊपर कहा हुआ मतलब नगेन्द्रनरसिंह निकाल सके, मगर इससे

उनका काम बखूबी बन गया। उन्होंने उसी समय उस चीठी के जवाब में एक चीठी लिखी और उसे लिफाफे में बंद कर मुहर करने के बाद उसे उस पहाड़ी को देते हुए बोले, "यह चीठी का जवाब है इसे उसी को दे देना जिसने तुम्हें यह चीठ दी थी और यह लो इसका इनाम!" कह कर उन्होंने चार अशर्फी उस जंगली के हाथ पर रख दी।

चार अशर्फी पाते ही वह जंगली खुशी के मारे नाचने लग गया। अपनी विचित्र भाषा में न जाने क्या कहते हुए उसने नगेन्द्रनरसिंह को कई दर्जन सलाम बजा दिये और उनके पैरों की धूल माथे से लगाई। इसके बाद वह जाने को तैयार हुआ और शायद उसी समय रात के वक्त और रास्ते की भीषणता का कुछ भी खयाल न कर के वह चल पड़ता मगर नगेन्द्र-नरसिंह ने उसे समझाया कि रास्ता बहुत खतरनाक है और आज सिपाहियों का पहरा दूर २ तक पड़ रहा है जो जरा भी शक होते ही उसे गोली मार देंगे। अस्तु वह सुबह अपनी मुहिम पर रवाना हो। नगेन्द्र की बात से वह देहाती खुश नहीं हुआ फिर भी उसने उनका कहा मान लिया। नगेन्द्र ने उसी समय एक सिपाही बुला कर उसके सपुर्द जंगली को कर दिया और कह दिया कि कल खूब सवेरे ही इसे खुद साथ ले कर अपनी हद के बाहर कर देना देखना कोई इसके जाने में छेड़ छाड़ न करे औरान कोई रात को किसी तरह इसे तंग करे।

सुबह होने में कुछ ही देर थी, नगेन्द्रनरसिंह अपने कमरे

में पलंग पर सोए कोई सुन्दर स्वप्न देख रहे थे क्योंकि उनके होंठों पर हंसी थी, यकायक किसी ने उन्हें जोर जोर से झोंके दे दे कर जगाना शुरू किया। वे चौंक कर उठ बैठे और आंखें मलते हुए बोले, "कौन है ? हैं केशव जी ! आप इतनी सुबह यहां कहां ?"

केशव जी बोले, "उठिये, बड़ा गजब हो गया !! रात को कोई मेरे प्राइवेट आफिस में घुस कर बहुत से कागज पत्र मृत्युकिरण संबन्धी मेरे आविष्कार के सब नोट, उसके बनाने वाले यंत्र का छोटा माडेल और बहुत सी और चीजें निकाल ले गया !!

नगेन्द्रनरसिंह केशव जी की बात सुन एक दम उछल पड़े और बोले, " हैं, आपके आफिस में और चोरी ! उस जमींदोज और इतनी मजबूत और सुरक्षित जगह में चोरी !!" केशव जी बोले "जी हां, वहीं चोरी ! किसी बड़े जिगरे वाले चोर का यह काम मालूम होता है।"

नगेन्द्र खिड़की खोल कर जोर से एक सीटी बजाते हुए बोले, "चोरी हुई किस तरह ? आपका मशीन रूम जमीन से कई सौ फीट नीचे है, और वहां जाने के रास्तों में कई लोहे के दर्वाजे हैं जो सब भीतर से बंद होते हैं क्या हमारे ही किसी आदमी का यह काम है ?"

केशव०। नहीं हमारे तो सब आदमी अब तक बेहोश पड़े हुए हैं। चोर, चाहे वह कोई भी हो, बड़ा चालाक और जीवट का

आदमी मालूम होता है। वह उस बड़े पेरिस्कोप (दूर की चीज देखने वाले शीशे) की राह भीतर घुसा। जो मैंने हाल ही में खड़ा किया है। आपको मालूम ही होगा कि उसके ट्यूब की सब से तंग जगह की मोटाई भी अढ़ाई फिट है। उसके सब शीशे टूट कर नीचे गिरे हुए हैं इससे मैं यह गुमान करता हूं कि चोर उसी रास्ते आया और उसी रास्ते सब चीजें ले कर निकल गया। साथ ही साथ कुछ ऐसी भी कार्रवाई कर गया जिससे वहां के सब आदमी और पहरेदार भी बेहोश हो गये।

नगेन्द्रनरसिंह की सीटी के साथ ही किले भर में चारो सैकड़ों आदमी दिखाई पड़ने लगे। कई सिपाही इस कमरे में भी आ गये जिन्हें देख नगेन्द्र ने कहा, "कोई आदमी केशवजी के कमरे में से कई जरूरी चीजें ले कर भागा है, चारों तरफ के पहरेदारों को खबर कर दो कि कोई भी आदमी किले के बाहर न जाने पावे, दूर पर भी अगर कोई आदमी जाता दिखाई पड़े तो उसे फौरन गिरफ़ार कर लो और दस दस आदमियों की चार टुकड़ी चारो तरफ पता लगाने को भेजो कि वह चोर किधर गया।

देखते देखते लोग चारो तरफ फैल गये। नगेन्द्र ने केशव जी से कहा, "आप जा कर उस हवाई जहाज को ठीक करें जो गोपालशंकर के लश्कर में से पाया गया है। उसमें पूरा पेट्रोल भरिये और कुछ "मृत्यु किरण" के बम भी रख दीजिये, उस पर चढ़ कर हम लोग जल्दी ही चोर का पता लगा

सकेंगे। वह अभी बहुत दूर नहीं गया होगा।"

केशव जी बोले, "उसमें सब सामान तैयार है, मैंने आज स्वयम् उसमें उड़ने का विचार किया था और कल ही उसे सब तरह से जांचा और दुरुस्त कर डाला था।" नगेन्द्र यह सुन उन का हाथ पकड़ कर तेजी के साथ कमरे के बाहर निकलते हुए बोले,"तब चलिये,अभी उस पर हमलोग चलें।"

दस ही मिनट में ये दोनों उस जगह पहुंच गये जहां वह वायुयान रक्खा गया था, मगर यह देख दोनों ही पैर के नीचे की मिट्टी खसक गई कि वह वायुयान वहां नहीं है और उसके दोनों पहरेदार बेहोश पड़े हुए हैं!! यह देख नगेन्द्रनरसिंह के सिर में चक्कर आ गया और वह अपना सिर थाम कर उसी जगह बैठ गये।

कुछ देर बाद एकायक उन्हें कुछ याद आया और वे उठ कर लपकते हुए उस जगह पहुंचे जहां वह पहाड़ी जंगली रक्खा गया था। आस पास के लोगों से उन्होंने पूछा, "वह पहाड़ी कहां गया?" लोगों ने जवाब दिया,"हम लोग खुद ही बहुत देर से उसे ढूंढ़ रहे हैं कि आपके हुक्म के मुताबिक उसे किले के बाहर पहुंचा दें मगर उसका कहीं पता ही नहीं लगता है। जिस बिछौने पर वह सोया था वह खाली पड़ा है, केवल यह चीठी उस जगह मिली है।"

नगेन्द्र ने कांपते हाथों से वह लिफाफा खोला और भीतर की चीठी निकाल कर पढ़ी यह लिखा हुआ:—

"नगेन्द्रनरसिंह !"

जिसने एक बार पहिले तुम्हें परास्त किया था वह फिर तुम्हारी खोपड़ी पर आ मौजूद हुआ है ! होशियार हो जाओ और अपनी कुशल चाहते हो तो यह सब प्रबन्ध छोड़ अपने देश को चले जाओ। अपने दोस्त उस भयानक चोर को भी समझा दो कि सरकार के विरुद्ध हथियार उठाना हंसी खेल नहीं है। अब भी वे सब्हल जांय और फजूल का खून खराबा न करें तो मैं वचन देता हूं कि उनका पिछला सब कसूर माफ कर दिया जायगा नहीं तो वे कहां के भी न रहेंगे और उनकी लाशों का भी पता न रहेगा। बस खबरदार !!"

तुम्हें होशियार करने वाला

गो० शं०

चीठी पढ़ कर नगेन्द्रनरसिंह ने गुस्से से दांत पीसा और वह चीठी केशव जी की तरफ बढ़ाते हुए गुस्से से भरे स्वर में कहा, "अफसोस मेरा जानी दुश्मन और मेरे ही किले में आ कर अछूता निकल जाय ! खैर कोई हर्ज नहीं, समझ लूंगा ! वह वन का गीदड़ जायगा किधर !!"

इसी समय दौड़ते हुए दो आदमी उस जगह आ पहुंचे। नरेन्द्रनरसिंह और केशव जी ने पहिचाना कि ये उनके मातहत इन्जीनियर थे। इन्होंने घबड़ाहट से भरे हुए स्वर में कहा, "मृत्युकिरण" के बम बनाने के लिये जो नई मशीन बनाई गई

थी उसे न जाने किसने इस तरह तोड़ दिया है कि वह बिल्कुल बेकार हो गई है और वह नया पाया गया बेतार की तार का यंत्र भी जिसकी नकल का एक दूसरा तैयार करने का हुक्म हुआ था टूटा फूटा पड़ा है।"

नगेन्द्र ने केशव जी की तरफ देखा और केशव जी ने नगेन्द्र की तरफ! दोनों के चेहरों पर निराशा की कालिमा दौड़ गई थी।

"दांव पेंच"

(१)

अपने आलीशान बंगले की लेबोरेटरी में पंडित गोपालशंकर एक टेबुल के सामने खड़े हैं जिस पर किसी मशीन का एक छोटा सा माडेल रक्खा हुआ है जिसके पचासों कल पुर्जे और पहिये बड़ी तेजी से घूम रहे हैं। मशीन के बाईं तरफ दो काले रंग के डंडे लगे हुए हैं जिनके सिरों पर दो गोले हैं जो एक दूसरे से लगभग तीन इञ्च के फासले पर हैं। इन दोनों गोलों के बीच में बिजली की अविराम धारा बह रही है और रह रह कर चट चट पट पट शब्द के साथ बिजली की किरणें दोनों गोलों के बीच में चमक उठती हैं पर आश्चर्य की बात है कि इन किरणों का रंग लाल या सुफेद नहीं है बल्कि हरा है। गोपालशंकर बड़े गौर से इन डंडों पर झुके हुए उन बिजली की लपटों को देख रहे हैं और साथ ही साथ कुछ सोचते भी जा रहे हैं।

इसी समय उनके नौकर ने कमरे का दर्वाजा खटखटाया और उनकी आज्ञा पा भीतर आया। उसके हाथ में दो विजिटिंग कार्ड थे जिन्हें इसने पंडित जी के सामने बढ़ा दिया। बिना इन्हें हाथ लगाए ही गोपालशंकर ने दूर से उन पर के नामों

को पढ़ा। एक पर लिखा था—"मैकडोनल्ड स्लाई" दूसरे पर लिखा था—"वाहिद अली खां"।

वाहिदअली खाँ इस प्रान्त के खूफिया विभाग के सब से बड़े अफसर थे और इधर थोड़े दिनों से गोपालशंकर से इन की गहरी जान पहिचान हो गई थी। दूसरे महाशय इनसे बहुत बड़े और ऊंचे दर्जे के थे अर्थात् स्वयम् इस प्रान्त के गवर्नर सर ब्रूहम मैकडोनल्ड स्लाई फर्गूसन थे। जब ये गुप्त रूप से अकेले कहीं जाते थे और अपना सरकारीपन दूर रखना चाहते थे तो केवल मैकडोनल्ड स्लाई के नाम से अपना परिचय देते थे और इस बात को गोपालशंकर अच्छी तरह जानते थे।

यकायक लाट साहब के इस प्रकार आने ने गोपालशंकर को कुछ ताज्जुब में डाल दिया परंतु उन्होंने नौकर से कहा, "दोनों साहबों को यहीं ले आओ।" नौकर ने "जो हुक्म" कह कर एक तरफ से दो कुरसियें ला कर गोपालशंकर के पास रख दीं और बाहर चला गया। थोड़ी ही देर बाद दोनों आदमियों ने कमरे में प्रवेश किया। गोपालशंकर ने आदर के साथ दोनों से हाथ मिलाया और मिजाजपुर्सी की, इसके बाद लाट साहब एक कुर्सी पर बैठ गये मगर वाहिदअली खां खड़े ही रहे। लाट साहब के आग्रह से पंडित गोपालशंकर दूसरी कुर्सी पर बैठ गये। सभों में अंगरेजी में बातचीत होने लगी।

गोपाल०। आपके इस तरह आने से मैं बड़ा कृतज्ञ हुआ मगर साथ ही आश्चर्य कर रहा हूं कि आपके स्वयम् कष्ट

करने की क्या जरूरत पड़ी। आपकी आज्ञा पाते ही मैं स्वयम् सेवा में हाजिर हो आता।

लाट सा०। आपने नैपाल के सफर और वहां से वापस आने का कुल हाल लिख कर जो खलीता भेजा था वह मुझे देहली में मिला जहां इसी "भयानक चार" के संबंध में कुछ बात करने के बड़े लाट ने मुझे बुलाया था। उस खलीते में आपने इनकी "मृत्यु किरण" के बारे में जो हाल लिखा था उसे पढ़ मैं एक दम घबड़ा गया। अगर आपका कहना सही है तो दुनियां का सबसे भयानक हथियार उन लोगों के कब्जे में आ गया है जिसका मुकाबला हमारा विज्ञान किसी प्रकार भी नहीं कर सकता और जिसकी मदद से वे लोग जो चाहें कर सकते हैं। मैंने यह हाल बड़े लाट से सुनाया जिसे सुन उन्हें भी बहुत अंदेशा हुआ और उन्होंने इसके बारे में पूरा हाल जानना चाहा। पहिले तो आपको बुलाने के लिये अपने प्राइवेट सेक्रेटरी को वे भेजना चाहते थे फिर यह सोच कर रुक गये कि आपने अपने पत्र के अंतिम अंश में लिखा था कि 'मैं उस मशीन का एक छोटा माडल और तत्संबंधी अन्य कागज भी लेता आया हूं जिनकी सहायता से मैं स्वयम् जांच कर देखना चाहता हूँ कि "मृत्यु किरण" वास्तव में क्या बला है। वह मशीन अपनी लेबोरेटरी में मैं खड़ा कर रहा हूं और उसकी अच्छी तरह जांच करने के बाद ही मैं स्वयम् किसी से मिलने का समय पाऊंगा।" इन शब्दों ने उन्हें रोक दिया

को पढ़ा। एक पर लिखा था—"मैकडोनल्ड स्लाई" दूसरे पर लिखा था—"वाहिद अली खां"।

वाहिद्अली खाँ इस प्रान्त के खूफिया विभाग के सब से बड़े अफसर थे और इधर थोड़े दिनों से गोपालशंकर से इन की गहरी जान पहिचान हो गई थी। दूसरे महाशय इनसे बहुत बड़े और ऊंचे दर्जे के थे अर्थात् स्वयम् इस प्रान्त के गवर्नर सर ब्रूहम मैकडोनल्ड स्लाई फर्गूसन थे। जब ये गुप्त रूप से अकेले कहीं जाते थे और अपना सरकारीपन दूर रखना चाहते थे तो केवल मैकडोनल्ड स्लाई के नाम से अपना परिचय देते थे और इस बात को गोपालशंकर अच्छी तरह जानते थे।

यकायक लाट साहब के इस प्रकार आने ने गोपालशंकर को कुछ ताज्जुब में डाल दिया परंतु उन्होंने नौकर से कहा, "दोनों साहबों को यहीं ले आओ।" नौकर ने "जो हुक्म" कह कर एक तरफ से दो कुरसियें ला कर गोपालशंकर के पास रख दीं और बाहर चला गया। थोड़ी ही देर बाद दोनों आदमियों ने कमरे में प्रवेश किया। गोपालशंकर ने आदर के साथ दोनों से हाथ मिलाया और मिजाजपुर्सी की, इसके बाद लाट साहब एक कुर्सी पर बैठ गये मगर वाहिद्अली खां खड़े ही रहे। लाट साहब के आग्रह से पंडित गोपालशंकर दूसरी कुर्सी पर बैठ गये। सभों में अंगरेजी में बातचीत होने लगी।

गोपाल०। आपके इस तरह आने से मैं बड़ा कृतज्ञ हुआ मगर साथ ही आश्चर्य कर रहा हूं कि आपके स्वयम् कष्ट

करने की क्या जरूरत पड़ी। आपकी आज्ञा पाते ही मैं स्वयम् सेवा में हाजिर हो जाता।

लाट सा०। आपने नैपाल के सफर और वहां से वापस आने का कुल हाल लिख कर जो खलीता भेजा था वह मुझे दिल्ली में मिला जहां इसी "भयानक चार" के संबंध में कुछ बात करने के बड़े लाट ने मुझे बुलाया था। उस खलीते में आपने उनकी "मृत्यु किरण" के बारे में जो हाल लिखा था उसे पढ़ मैं एक दम घबड़ा गया। अगर आपका कहना सही है तो दुनियां का सबसे भयानक हथियार उन लोगों के कब्जे में आ गया है जिसका मुकाबला हमारा विज्ञान किसी प्रकार भी नहीं कर सकता और जिसकी मदद से वे लोग जो चाहें कर सकते हैं। मैंने यह हाल बड़े लाट से सुनाया जिसे सुन उन्हें भी बहुत अंदेशा हुआ और उन्होंने इसके बारे में पूरा हाल जानना चाहा। पहिले तो आपको बुलाने के लिये अपने प्राइवेट सेक्रेटरी को वे भेजना चाहते थे फिर यह सोच कर रुक गये कि आपने अपने पत्र के अंतिम अंश में लिखा था कि "मैं उस मशीन का एक छोटा माडल और तत्संबंधी अन्य कागज भी लेता आया हूं जिनकी सहायता से मैं स्वयम् जांच कर देखना चाहता हूँ कि "मृत्यु किरण" वास्तव में क्या बला है। वह मशीन अपनी लेबोरेटरी में मैं खड़ा कर रहा हूं और उसकी अच्छी तरह जांच करने के बाद ही मैं स्वयम् किसी से मिलने का समय पाऊंगा।" इन शब्दों ने उन्हें रोक दिया

और उन्होंने मुझसे कहा कि बेहतर होगा कि आगरे जाने प
तुम पंडित जी से मिलो और सब बातों का ठीक ठीक हाल
मुझे लिखो। यहां लौटने के समय से ही मैं वह मशीन देखने
को व्याकुल हो गया और आखिर कौतूहल ने यहां तक द गाया
कि खां साहब को साथ लेकर मुझे खुद ही आज आना पड़ा।

गोपाल०। आपके आने से मैं बड़ा ही अनुगृहीत हुआ।
अगर पहिले से पता लगता तो मैं आपकी अगवानी का
उचित प्रबन्ध कर रखता और इस तरह वे सरो सामान
आपको......

लाट सा०। (हंस कर) पंडितजी! आप शायद यह बात
भूल गये कि आप प्रान्त के लाट से बातें नहीं कर रहे
हैं बल्कि एक मामूली अंगरेज मेकडोनल्ड स्लार्ड से बातें कर
रहे हैं जो आपकी अद्भुत प्रतिभा का हाल सुन आप से मिलने
आया है।

गोपालशंकर ने भी यह सुन हंस दिया और तब कहा,
"अच्छी बात है परन्तु इस समय हम दोनों ही का समय बड़ा
बहुमूल्य है अस्तु मैं सीधा मतलब पर आ जाता हूं। यह
देखिये इस टेबुल वाली मशीन को, यही वह माडेल है जो मैं
भयानक चार के किले से लाया हूँ। कितनी छोटी चीज है
और एक दम खिलौना मालूम होती है मगर इसकी भयानक
ताकत को देख कर मैं भी डर गया हूं। यह देखिये एसबेस्टस
की यह एक रस्सी है, आप जानते ही होंगे कि यह पदार्थ तेज

से तेज आंच में भी नहीं जलता मगर इस मृत्यु किरण में पड़ते ही देखिये उसकी क्या दशा होती है।"

छत के साथ एक रबर और रेशम से बनी रस्सी टंगी हुई थी जो उन डंडों के ठीक ऊपर थी जिसमें से मृत्यु किरण की भयानक लपटें निकल रही थीं। गोपालशंकर ने इस रस्सी से बांध कर वह एसबेस्टस की रस्सी लटका दी जो ठीक उन दोनों गोलों के बीच में लटकने लगी। गोलों के बीच की हरी किरणों ने उसे लपेट लिया और दूसरे ही क्षण में वह एक मामूली रस्सी की तरह जल उठी, केवल उसमें से लपट किसी तरह की निकलती न थी। बात की बात में उसका वह अंश जो मृत्यु किरण में पड़ा जल कर राख हो गया।"

सब लोग ताज्जुब करने लगे। गोपालशंकर ने कहा, "इन नीचे पड़ी राखों से पता लगेगा कि करीब करीब संसार की सभी चीजें इस किरण में पड़ कर भस्म हो जाती हैं। मैंने लोहा, बालू, अबरक आदि सभी पर इसका प्रयोग किया और सभी भस्म हो गये। न जानें इन किरणों में कितनी शक्ति है!"

लाट साहब ने कहा, "सचमुच यह भयानक चीज है, अभी तक इतनी गर्म आंच मैंने कहीं देखी न थी जो एसबेस्टस को जला दे पर इन मृत्यु किरणों ने वह भी कर दिया। मगर यह बात मेरी समझ में नहीं आती कि इन किरणों से युद्ध का काम कैसे लिया जा सकता है?"

गोपाल०। मशीन के साथ जो कागज मैं लाया हूं उनसे

मालूम होता है कि इनके तीन भाग हैं, अभाग्यवश मैं सिर्फ पहिले भाग का ही माडल ला सका। यह अंश केवल मृत्यु किरणों को पैदा करता है, दूसरी मशीन (जैसा कि कागजों से प्रगट होता है) उन्हें इकट्ठा कर के किसी विशेष प्रकार के बरतनों में संग्रह करती है और तीसरी मशीन इन किरणों को इच्छानुसार जहां पर जिस परिमाण में चाहे भेजती है। वही काम सब से भयानक है। उस से एक ही जगह बैठ कर सैकड़ों कोस की चीजें छार खार की जा सकती हैं।

लाट०। और इन्हीं किरणों के उन लोगों ने बम भी बनाए हैं? देखिये मोरलैंड वाली टुकड़ी की थोड़े से बमों ने कैसी दुर्दशा कर दी!

गोपाल०। जी हां, और वैसे वैसे कितने ही बम तैयार कर के मुल्क के दूर दूर के हिस्सों में भेजे जा चुके हैं जिनकी याद कर कर के मेरा कलेजा दहलता है क्योंकि दुनिया की कोई भी शक्ति उन्हें रोक नहीं सकती।

लाट०। (चौंक कर) वैसे वैसे बम तमाम मुल्क में भेजे जा चुके हैं!! आप ठीक जानते हैं?

गोपाल०। हां, मैं बहुत अच्छी तरह जानता हूं।

लाट०। तब तो इस किले और इन यंत्रों का जहां तक जल्दी हो नामोनिशान मिटा देना चाहिये। देर होने से न जाने वे सब क्या कर गुजरेंगे!!

गोपाल०। (हंस कर) क्या आप इसको मामूली बात

समझते हैं ! अगर मैं गलती नहीं कर रहा हूं तो इस समय उस किले के चारो तरफ सौ सौ कोस तक उनका एकछत्र साम्राज्य है जिसके अन्दर वे जो चाहें कर सकते हैं। एक परिन्दे की भी मजाल नहीं कि बिना उनकी मरजी के वहां पर मार सके। क्या आप भूल गये कि हमारा लश्कर किले से कम से कम तीस पैंतीस मील दूर था जब वह नाश कर दिया गया ! वहां उन लोगों ने जो यंत्र खड़े किये हैं वे इस माडेल से सैकड़ों गुना बड़े और भयानक हैं और उनका मुकाबला दुनिया की कोई भी ताकत नहीं कर सकती, वे अगर चाहें तो पहाड़ों के टुकड़े उड़ा सकते हैं ?

लाट०। क्या हम आस्मान से बम गिरा कर उस जगह को वर्बाद नहीं कर सकते !

गोपाल०। हरगिज नहीं ! एक तो जिस जगह उन्होंने इन मशीनों को खड़ा किया है वह जमीन की सतह से पांच सौ फीट से भी नीचे है और आपके बड़े से बड़े बम भी उतने नीचे कुछ नुकसान पहुँचा नहीं सकते, दूसरे आपके बड़े से बड़े हवाई जहाज को भी यह ताब नहीं है कि उनके किले के ऊपर से बिना उनकी मर्जी के उड़ जा सकें। मृत्यु किरण की एक हलकी सी लपट हवाई जहाज को मय उड़ाकों के इस तरह जला सकती है कि जमीन पर गिरने के लिये भी कुछ न बच जायगा !

लाट०। यह तो आप विचित्र बात कह रहे हैं। क्या आप का मतलब है कि ये थोड़े से शैतान इतने मजबूत हो गये हैं कि

ब्रिटिश गवर्नमेन्ट इनका कुछ बिगाड़ नहीं सकती?

लाट साहेब के चेहरे पर व्याकुलता और क्रोध के साथ अविश्वास भी झलक मार रहा था जिससे उनके दिल के भाव का पता लगता था। वास्तव में यह अनुमान करना भी कि थोड़े से आदमियों का एक दल अपने सामने सरकार की पूरी ताकत को बेकार कर देगा असंभव मालूम होता था पर चतुर वैज्ञानिक और दूरदर्शी गोपालशंकर "मृत्युकिरणों" की शक्ति जान गये थे और समझ गये थे कि उसका मुकाबला करना हंसी खेल नहीं है। अस्तु लाट साहब की बात के जवाब में उन्होंने शान्ति और गंभीरता के साथ सिर्फ इतना ही कहा, "बेशक! ब्रिटिश सरकार का सेनाबल उन्हें पराजित नहीं कर सकता!।"

(२)

कुछ देर तक सन्नाटा रहा। लाट साहब की सूरत से जान पड़ता था कि वे समझ नहीं सकते थे कि गोपालशंकर को पागल कहें या अपने को! आखिर कुछ देर बाद उन्होंने कहा, "तब क्या किसी तरह भी वे दुष्ट हराए नहीं जा सकते?"

गोपालशंकर चुप रहे। मालूम पड़ता था मानों वे कोई बड़ी ही गंभीर बात सोच रहे हैं। लाटसाहब इस तरह उनका मुंह देख रहे थे जसे कोई रोगी वैद्य का मुंह देखता हो। अंत में कुछ देर बाद उन्होंने कहा, "विज्ञान का जवाब विज्ञान ही

दे सकता है। मृत्यु किरण को मृत्यु किरण ही दबा सकती है।
अगर आप लोग कोशिश कर के इसी माडेल के आधार पर
कुछ बहुत ही बड़े और शक्ति शाली मृत्यु किरण पैदा करने
वाले यंत्र बना सकें तो संभव है कि वे दुष्ट वस में किये जा
सकें। जब तक ये यंत्र बन न जांय तब तक इन लोगों की कार्र-
वाई को रोकना (खां साहब की तरफ देख कर) आपके
जासूस विभाग का काम होना चाहिये और उतने समय तक
इस बात का खयाल करना कि उस किले में नया सामान
मशीन या रसद अथवा सिपाही न पहुँच सकें यह आपकी
फौज का काम होना चाहिये जो इस किले की मृत्यु किरणों
की मार के बाहर रह कर एक ऐसा घेरा डाले रहे कि किले
में न कोई जा सके और न आ सके। इस काम में आप के हवाई
जहाज भी बहुत मदद दे सकते हैं।"

लार्ट०। हां यह तो आप का कहना ठीक है मगर आपने
खुद ही कहा कि मृत्यु किरणों से काम लेने के लिये तीन
प्रकार के यंत्र चाहियें जिनमें से केवल एक ही का माडेल
आपके पास है, बाकी दोनों मशीनों के बने बिना कैसे काम
चल सकता है?

गोपाल०। उन्हें उन कागजों की मदद से बनाना पड़ेगा
जिन्हें मैं किले से ले आया हूं।

लार्ट०। उनमें पूरा हाल दिया है?

गोपाल०। मैंने सभों को पढ़ा तो नहीं है मगर सरसरी

निगाह से देखा जरूर था जिससे पता लगता है कि उनकी मदद से बाकी दोनों मशीनें भी बन सकेंगी। अवश्य ही मैं मेकैनिक या इञ्जीनियर नहीं हूं और इस विषय में सब से पक्की राय आपके इन्जीनियर लोग दे सकेंगे।

लाट०। ठीक है। अच्छा तो मेरी यह राय है कि कल किसी समय आप मेरे यहां आने का कष्ट करें। मैं और मेरे मिलिटरी सेक्रेटरी तो मौजूद रहेंहीगे इसके इलावा खां साहब कैप्टैन रूस्वी, मि० टेम्पेस्ट और गवर्नमेन्ट इन्जीनियर भी रहेंगे। आप अपने फ्रैन्ड्स भी लेते आवें और वहीं सब कुछ अच्छी तरह तय कर लिया जाय। अगर आपकी राय हो तो मैं गवर्नमेन्ट आर्म्स फैक्टरी के सुपरिंटेन्डेन्ट को भी बुला लूंगा।

गोपाल०। अच्छी बात है मैं तैयार हूं आप वक्त ठीक कर के मुझे इत्तला दे दें।

लाट०। रात को रखिये।

गोपाल०। अच्छी बात है। तो आप दो पहर को किसी को भेज दें जो यह माडेल और अन्य कागजात ले जावे क्योंकि वहां मौजूद सभी आदमी इन चीजों को देख लें तो उत्तम है।

लाट साहब०। हां यह ठीक है (पीछे घूम कर) खां साहब आप कल इन चीजों को पंडित जी के यहां से मेरे रूम में भेजने का प्रबंध कीजियेगा।

खां साहब ने—"जो हुक्म, हजूर!" कहा और मुलाकात

खतम हुई। लाट साहब और शाहिद अली खां को गोपालशंकर बंगले के फाटक तक छोड़ आए और जब उनकी मोटर चली गई तो कुछ सोचते हुए पुनः अपनी लेबोरेटरी को लौट गये।

(३)

दोपहर का समय है। पं० गोपालशंकर ने आज सुबह ही से अपनी लेबोरेटरी में किसी वैज्ञानिक प्रयोग में व्यस्त रहने के कारण देर से भोजन किया है और अभी आ कर आराम कुर्सी पर लेटे हैं। सामने के टेबुल पर कई अखबार पड़े हैं जिनमें से एक उनके हाथ में है।

समाचारों के शीर्षकों पर सरसरी की निगाह डालते हुए एक जगह आ कर अचानक गोपालशंकर रुक गये। समाचार यह था:—

सिकन्दराबाद छावनी में धड़ाका

मेगजीन में आग

पचासों सिपाहियों की मौत! कारण अज्ञात!!

दक्षिण हैदराबाद शहर के पास की सिकन्दराबाद की छावनी में कल यकायक एक धड़ाका होने से भयानक आग लग गई जिससे फौज तथा मेगजीन का बहुत सा अंश उड़ गया और बहुत से सिपाही भी साथ ही उड़ गये। घायलों की संख्या कई सौ बताई जाती है। धड़ाके का कारण अज्ञात है।

• गोपालशंकर ने इस समाचार को दुबारा पढ़ा। और तब

अखबार हाथ से रख कर कुछ सोचने लगे। कुछ देर बाद उनके मुंह से निकला, "मालूम होता है रक्तमण्डल की कार्रवाई शुरू हो गई। यह उन्हीं के आदमियों की करतूत मालूम होती है। मृत्यु किरण के बमों की बदौलत ऐसी आग तो बात की बात में लगाई जा सकती है। अगर इन दुष्टों को अभी न रोका गया तो थोड़े ही दिनों में ये सब न जाने क्या कर डालेंगे।"

इसी समय टेबुल पर रक्खे टेलीफोन की घंटी जोर से बज उठी। गोपालशंकर कुर्सी से झुक कर चोंगा कान से लगा सुनने लगे, किसी ने पूछा, "क्या आप पंडित गोपालशंकर साहेब हैं?" गोपालशंकर ने कहा, "हां, आप कौन हैं!" जवाब मिला, "मैं हूं—वाहिद अली खां, आज शाम की मीटिंग के लिये आप तैयार हैं तो!" गोपालशंकर ने कहा, "क्यों क्या कोई गड़बड़ है?" जवाब आया, "नहीं कुछ नहीं, मैंने इस लिये दरियाफ्त किया कि क्या उस मशीन और कागजों के लिये मैं अपने आदमी भेजूं?" गोपालशंकर ने कहा, "जी हां, भेजिये, मगर आदमी विश्वासी हों, वे चीजें अगर हाथ से निकल गईं तो दुश्मनों का मुकाबला मुश्किल हो जायगा।" तार पर जवाब आया, "इस बात को मैं बखूबी समझता हूं। वे लोग मेरे खास आदमी होंगे। आप तैयारी करिये, वे लोग कुछ ही देर में पहुंच जांयगे।"

आवाज बन्द हो गई, गोपालशंकर ने चोंगा टांग दिया। कुछ

देर तक वे कुछ सोचते रहे, इसके बाद उठे और लेबोरेटरी में चले गये जहां उन्होंने वह मृत्यु किरण का माडल और उसके संबन्धी सब कागजात तथा अपने कुछ नोट्स भी काठ के एक मजबूत बक्स में बन्द कर दिये। इसके बाद लेबोरेटरी के बाहर निकले मगर फिर कुछ बात उनके खयाल में आई जिससे वे पुनः अन्दर चले गये और दरवाजा भीतर से बन्द कर कुछ करने लगे। लगभग आधे घंटे के बाद वे बाहर आए और अपने बैठने वाले कमरे में जा कर कुछ लिखने लगे।

इसी समय बाहर बरसाती में मोटर की आवाज सुनाई पड़ी और नौकर ने आ कर कहा, "दो आदमी आए हैं जो अपने को खां बहादुर वाहिद अली खां के आदमी बताते हैं, उनके साथ चार कांस्टेबल भी हैं। यह चीठी लाए हैं और कहते हैं कि जो चीज लाट साहबके यहां जायगी वह लेने आये हैं।"

गोपालशंकर ने वह चीठी खोल कर पढ़ी. सिर्फ इतना ही लिखा था, "आदमी भेजता हूँ, माडेल और कागज भेज दीजिये—वाहिद अली खां।" उन्होंने अपने नौकर से कहा, "उन दोनों आदमियों को यहीं बुला लाओ।"

थोड़ी ही देर में दो आदमियों ने उस कमरे में पैर रक्खा जिन्होंने गोपालशंकर को अदब से सलाम किया और खड़े हो गये। गोपालशंकर ने पूछा, "तुम लोगों को खां साहेब ने भेजा है?" उन्होंने कहा, "जी हां!" गोपालशंकर ने फिर पूछा, "जो चीज लेने आए हो कुछ मालूम है वह क्या चीज है?"

एक ने जवाब दिया, "जी यह तो नहीं मालूम मगर सुना है कि कोई बड़ी ही कीमती चीज है। इसी लिये हिफाजत के खयाल से कांस्टेबल भी साथ कर दिये गये हैं।" गोपालशंकर ने पूछा, "उसे ले कर कहां जाओगे? लां साहब के घर न?" उन्होंने कहा, "जी हां।"

जवाब सुन कर गोपालशंकर ने एक तेज निगाह उन पर डाली मगर तुरत ही हटा ली और तब बोले, "अच्छा तुम लोग बाहर चलो, मैं उसे भेजता हूं, मगर देखना बहुत ही होशियारी से ले जाना क्योंकि बड़ी ही कीमती चीज है अगर खोई गई तो तुम लोग बड़ी आफत में पड़ जाओगे।" "जी नहीं, आप बिल्कुल बेखतर रहें, उस चीज पर जरा भी आंच न आवेगी।" कह कर वे दोनों सलाम कर बाहर चले गये।

उनके जाने बाद गोपालशंकर ने अपने विश्वासी नौकर मुरारी को बुलाया और उसे ताली दे कर कहा, "लेबोरेटरी में बड़े टेबुल पर जो लाल रङ्ग का बक्स रक्खा हुआ है वह ला कर इन लोगों को दे दो, यह चीठी जो मैं लिख रहा हूं इसे भी ले जा कर उन्हें दे देना।" मुरारी चला गया और थोड़ी देर में लौटा गोपालशंकर ने चीठी खतम कर ली थी जिसे लिफाफे में बन्द कर मुहर लगा दी और उसे दे कर कहा, "यह चीठी भी दे देना और कह देना कि जिसने तुम्हें भेजा है उसे दे दें।" नौकर जाने लगा तो वे बोले, "चीठी और बक्स दे कर तुम फिर मेरे पास आओ।"

थोड़ी देर बाद मोटर की आवाज आई और उसी समय उनका नौकर भी वहां लौट आया, गोपालशंकर ने उससे पूछा "वे लोग गये ?" उसने जवाब दिया, "जी हां।" गोपालशंकर ने उसे इशारे से पास बुलाया और कान में कहा, "तुम अपनी शकल बदल लो और मेरी मोटरसाइकिल पर चढ़ कर उनका पीछा करो, देखो वे लोग कहां जाते हैं।" मुरारी जो "हुक्म" कह चला गया और कुछ ही देर बाद एक तेज मोटर साइकिल के "फट फट" ने गोपालशंकर को बता दिया कि वह रवाना हो गया।

इन लोगों को गये मुश्किल से पन्द्रह मिनट गुजरे होंगे कि बाहर पुनः किसी मोटर की आवाज आई। मोटर बरसाती में रुकी और उस पर से कई आदमी उतर कर बरामदे में आए। गोपालशंकर के कान में वाहिद अली खां के बोलने की आवाज आई जिसे सुन वे इसके पहिले कि नौकर उनके आने की इत्तला करे स्वयम् ही बाहर निकल आये। वाहिद अली खां और शहर के कोतवाल कई सिपाहियों के साथ खड़े हुए थे। मामूलीसाहब सलामतके बाद वाहिदअलीखां ने कहा, "मैंने सोचा कि आदमियों के जरिये वे चीजें मंगाने में शायद कोई खतरा हो जाय इससे मैं खुदही वह माडेल लेने आगया।" गोपालशंकर ने यह सुन ताज्जुब से कहा, "हैं! क्या आप वह माडेल मशीन लेने आये हैं?"

वाहिद०। जी हां, क्यों आपको ताज्जुब किस लिये हुआ?

गोपाल० । इस लिये कि अभी थोड़ी ही देर हुई आपके आदमी आ कर मुझसे वे सब चीजें ले गये।

वाहिद अली यह सुनते ही चौंक कर उछल पड़े और बोले, "पंडित जी ! यह आप क्या कह रहे हैं, मैंने तो किसी को नहीं भेजा !!"

गोपाल० । यह तो आप बड़े ताज्जुब की बात कह रहे हैं। अभी आधा घंटा भी नहीं हुआ था कि आपकी चीठी ले कर कुछ पुलिस कांस्टेबलों के साथ दो आदमी आए और सब चीजें ले गये।

वाहिदअली का चेहरा उड़ गया, वे कांपती आवाज से बोले, "नहीं नहीं मैंने तो कोई खत नहीं भेजा मालूम होता है आपको धोखा हुआ।"

वाहिदअली की घबराहट देख कर गोपालशंकर के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई, वे कुछ हंस कर बोले, "मुझे तो शायद धोखा नहीं हुआ मगर आप अपनी चीठी पहिले देख लीजिये।" कह कर उन्होंने उन सभों को बैठाया और कमरे से जा कर वह खत ले आये जो उन दोनों आदमियों ने उन्हे दिया था। लिफाफे में से चीठी निकाल कर वाहिद अलीखां के हाथ में दी और कहा, "लीजिये देखिये आपही की लिखावट है या नहीं।"

चीठी का मजमुन पढ़ कर वाहिदअली के माथे पर पसीना आ गया। उन्होंने कांपती आवाज में कहा, "हरूफ

तो हूबहू मेरे ही जैसे है और दस्तखत भी ठीक वैसा ही है जैसा मैं करता हूं, मगर मैं आपको कसम खा कर कह सकता हूं कि यह मजमून मेरा लिखा कभी नहीं है! अफसोस दुश्मन बड़ी चालाकी खेल गये!!"

वाहिदअली खां ने सिर झुका लिया और लम्बी लम्बी सांसें लेने लगे। गोपालशंकर ने यह देख कहा, "खां साहब, अगर आपकी यह चीठी पा कर मैंने चीजें उन लोगों के हवाले कर दीं तो बताइये मेरी क्या गलती है?"

वाहिद अली बोले, "जी बेशक आपकी कोई गलती नहीं है, मगर मैं बेमौत मारा गया, लाट साहब के कान में जब यह बात पहुँचेगी तो मेरे बारे में वे क्या सोचेंगे! मालूम नहीं मेरी नौकरी भी रहेगी या जायगी!!"

वाहिद अली खां माथे पर हाथ रख कर बैठे गये और उनके साथी भी अफसोफ करते हुए उन्हें घेर कर खड़े हो गये। कमरे में थोड़ी देर के लिये सन्नाटा छा गया।

थोड़ी देर बाद गोपालशंकर ने कहा, "खां साहब! अब आपको मालूम हो गया होगा कि आपके दुश्मन कितने निडर, साहसी और भयानक आदमी हैं और उनकी पहुँच कहां तक है!!"

(४)

आगरे के बाहर शहर से लगभग दो कोस जाने बाद आम की एक घनी बाड़ी है जो कई बिगहे में फैली हुई है और जिसके

एक तरफ से सड़क और दूसरी तरफ से साँप की तरह बल खाती हुई बहने वाली जमुना बह रही है। वह बाड़ी इतनी घनी और गुञ्जान है कि इस दोपहर के समय भी उसमें धूप का नाम निशान नहीं है और वहां बहुत ही ठंढा और निर्जन है। कई जगहें तो ऐसी भी हैं जहां छोटी मोटी झाड़ियों ने घेर कर कुञ्ज सा बना रक्खा है जिसमें बहुत से आदमी इस प्रकार छिप कर बैठ सकते हैं कि किसी को जरा भी पता नहीं लग सकता।

इसी तरह के एक कुञ्ज में हम एक नौजवान को टहलते हुए देख रहे हैं। नौजवान की उम्र लगभग तीस पैंतीस वर्ष के होगी, गोरा रंग, लांबा कद, चौड़ा माथा, सीधी नाक और मजबूत कलाइयां उसे किसी ऊंचे खानदान का होनहार बता रही हैं। उसके माथे पर हलके रंग का साफा है और पौशाक उस तरह की है जैसी ऊंचे दर्जे के अङ्गरेज फौजी अफसर पहिनते हैं। पाठकों को ज्यादा तरद्दुद में न डाल कर हम बता देते हैं कि ये उनके पूर्वपरिचित और "भयानक चार" के मुखिया नगेन्द्रनरसिंह हैं।

नगेन्द्रनरसिंह घबड़ाहट के साथ इधर से उधर टहल रहे हैं। उनके चेहरे से परेशानी और बेचैनी जाहिर हो रही है और बार बार उनके घड़ी देखने से यह भी प्रगट होता है कि वे जल्दी में हैं। उनके मन में तरह तरह की बातें घूम रही हैं जिनका पता उन टूटे शब्दों से बखूबी लगता है जो अनजाने में उनके मुंह से निकल पड़ते हैं—"अफसोस...कंबख्त गोपालशंकर

ले बक्स में से गधा निकलता देख नगेन्द्र नरसिंह की आंखों
ा उतर आया और उन्होंने उस आदमी से डपट कर
कहा—"क्या यही चीज लाने तुम गये थे ?"

सब चौपट कर गया......देख कर मृत्यु किरण का भेद सर-
कार पर अगर प्रगट होगया......वैसी ही मशीनें बना कर
मुकाबला किया तो हम लोग.........कंबख्त माडल तो ले ही
गया साथ में सब प्लैन्स भी लेता गया......बम बनाने की
मशीन टूटने से बड़ा नुकसान हुआ......अगर वे चीजें वापस
न मिलीं तो हम लोगों की सब आशाएं नष्ट हो जायंगी...न
जाने वे लोग अभी तक क्यों नहीं आए !."

नगेन्द्रनरसिंह ने पुनः घड़ी देखी और झाड़ी के बाहर
निकल कर उधर देखने लगे जिधर से सड़क इस बाड़ी के
किनारे को छूती हुई निकल गई थी। अचानक उनके कानों में
तेजी के साथ आती हुई एक मोटर का शब्द पड़ा जिसे सुनतेही
चैतन्य हो गये और गौर से देखने लगे। कुछ ही देर बाद लाल
रंग की एक बड़ी सी मोटर उन्हें दिखाई पड़ी जो बेतहाशा
तेजी से चली आ रही थी। मोटर देखते ही नगेन्द्रनरसिंह के
चेहरे पर आशाकी झलक दिखाई पड़ी और वे सड़क की
तरफ बढ़े।

मोटर यकायक रुक गई। दो आदमी उसमें से उतरे और
एक बक्स उठाए हुए आम की बाड़ी में घुसे। नगेन्द्रनरसिंह
के चेहरे पर यह देखते ही खुशी की झलक दौड़ गई। उन्होंने
जेब से सीटी निकाली और किसी खास ढंग के इशारे के
साथ बजाई। सुनते ही वे लोग इनकी तरफ बढ़े और बात की
बात में पास पहुँच गये। नगेन्द्रनरसिंह को देख कर दोनों ने

सलाम किया और बक्स जमीन पर रख दिया। नगेन्द्र ने पूछा, "क्या वह चीज मिल गई?" उन्होंने जवाब दिया, "जी हां, इसी बक्स में है।" नगेन्द्रनरसिंह ने खुश हो कर कहा, "एक आदमी कोई चीज़ ला कर इसे खोलो और दूसरा वहां जा कर ड्राइवर से बोलो कि मोटर को बाड़ी के भीतर ले आवे। इसके बाद सब कोई मिल कर उसका रंग बदल डालो।"

एक आदमी एक हथौड़ी और रुखानी लाकर बक्स खोलने लगा, दूसरे ने जाकर मोटर को आड़ में लाने को कहा और जब वह आ गई तो कई आदमी मिल कर रंग के डब्बे और कूंचिएं ले ले कर उसके लाल रंग पर खाकी रंग करने लगे। काम इतनी फुर्ती से हुआ कि लगभग पंद्रह ही मिनट में समूची मोटर का लाल रङ्ग बदल कर खाकी रङ्ग हो गया। अब कोई भी आदमी इसे देख कर नहीं कह सकता था कि यह वही मोटर है जो आध घंटे पहिले गोपालशंकर के बंगले की बरसाती में खड़ी थी।

हथौड़ी और रुखानी की मदद से बक्स शीघ्र ही खोल डाला गया। उतावली के मारे नगेन्द्रनरसिंह ने खुद ही वे सब रद्दी कागज आदि हटाने शुरू कर दिये जिनसे उसका ऊपरी हिस्सा भरा हुआ था। जब वह साफ हो गया तो भीतर साफ कपड़े में लपेटी कोई चीज रक्खी दिखाई पड़ी। दोनोंने मिल कर उसे बाहर निकाला और जल्दी जल्दी कपड़ा हटाया मगर यह क्या? मृत्यु किरण पैदा करने वाले यंत्र को

जगह यह क्या चीज निकल पड़ी !

लगभग हाथ भर के लंबा और इससे कुछ कम ऊंचा र पेन्द मिट्टी का बना हुआ एक सुन्दर गधा उस कपड़े में बंधा हुआ था !!

देख कर नगेन्द्रनरसिंह की आंखों में खून उतर आया। उन्होंने कड़ी निगाह से इस आदमी की तरफ देख कर कहा, "यही चीज़ लाने तुम गये थे !"

आदमी कांप गया और डरती आवाज में बोला, "हुजूर यही बक्स पंडित गोपालशंकर ने मुझे दिया !! मुझे कुछ नहीं मालूम कि इसके भीतर क्या चीज है, मैं तो यही समझता था कि वह माडेल ही लिये जा रहा हूं !! मेरा कोई कसूर नहीं है। (जेब से एक चीठी निकाल कर) यह चीठी भी उन्होंने दी और कहा था कि जिसने तुम्हें भेजा है उसी को दे देना, शायद इसके पढ़ने से कुछ मालूम हो !"

गुस्से से कांपते हुए नगेन्द्रनरसिंह ने वह लिफाफा ले लिया। लिफाफे पर किसी का नाम या पता लिखा हुआ न था मगर जोड़ पर मुहर जरूर की हुई थी. बेचैनी के साथ नगेन्द्र ने लिफाफा फाड़ डाला। भीतर एक कागज निकला जिस पर कुछ लिखा हुआ था। नगेन्द्रनरसिंह पढ़ने लगे:—

"जो लोग देश को विद्रोह और विप्लव के गढ़े में ढकेल देना चाहते हैं और यह नहीं सोच सकते कि ऐसा करने का, आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक फल क्या होगा उनकी

बुद्धि को कुछ शिक्षा देने के लिये मैं यह उपहार भेजता हूं।"

गो० शं०

चीठी पढ़ कर नगेन्द्रनरसिंह का चेहरा लाल हो गया। उन्होंने इस जोर की एक लात उस बर्ध्रे को मारी कि वह चूर चूर हो गया। चीठी को फाड़ कर टुकड़े टुकड़े कर दिया और गुस्से से दांत पीस खाते हुए मोटर की तरफ बढ़े। डर से कांपता हुआ वह आदमी भी उनके पीछे पीछे चला। थोड़ी देर बाद वह खाकी मोटर एक तरफ को तेजी से रवाना हो गई।

× × × ×

न जाने कब से एक आदमी पेड़ों की आड़ में छिपा हुआ यह सब दृश्य देख रहा था। उन लोगों के जाते ही वह भी उस आम की बारी के बाहर हुआ। सड़क के किनारे ही एक झोंके की आड़ में एक मोटर साइकिल रक्खी हुई थी जिसे उसने उठा लिया और सड़क पर ला सवार हो तेजी से शहर की तरफ रवाना हो गया। बताना नहीं होगा कि वह गोपालशंकर का विश्वासी नौकर मुरारी था जिसे उन्होंने उस मोटर का पीछा करने को भेजा था।

(५)

यकायक गोपालशंकर हंस पड़े, बाहिद अली की बेचैनी और घबड़ाहट देख उन्हें दया आ गई, उन्होंने मुसकराते हुए

कहा, "खां साहब! आप इतना बेचैन न होइये। आपकी चीज़ गई नहीं है, सुरक्षित है!!"

खां साहब पर से मानों मनों बोझ उतर गया, वे खुश हो कर बोले, "हां सचमुच? क्या वह माडेल और कागजात आपके पास अभी तक मौजूद हैं?"

गोपालशंकर ने कहा "जी हां, मुझे उन आदमियोंकी बात से कुछ शक हो गया जिससे मैंने असल चीजें उन लोगों के हवाले न कर के कुछ दूसरी ही चीजें दे दीं जिन्हें जब वे लोग देखेंगे तो जरूर खुश होंगे।"

वाहिद अली खां के चेहरे से अफसोस और रंज एक दम दूर हो गया, वे खुशी खुशी बोले, "वाह पंडित जी आपने तो कमाल किया, बेशक आपकी जो तारीफ मैं सुनता था बिल्कुल वाजिब थी अगर आपने इन शैतानों के फेर में पड़ कर वे चीजें दे दी होतीं तो गजब हो जाता।"

गोपाल शंकर बोले, "ईश्वर की कृपा थी कि मुझे समय पर बात सूझ गई नहीं तो जरूर मुश्किल होजाता, खैर अब आप उन चीजों को ले कर लाट साहब तक पहुँचाइये मैं भी ठीक समय पर आ जाऊंगा।"

गोपालशंकर उठ कर लेबोरेटरीमें गये और थोड़ी ही देर में एक काठ का बकस लिये हुए वापस आए। ढकना खोल कर उन्होंने खां साहब को उसके भीतर रक्खा हुआ वह यंत्र और साथ के कागज दिखला दिये और कहा, "लीजिये यह अपनी

धरोहर सम्हालिये, अब अगर ये भी हाथ से गुम हुई तो आप जिम्मेदार होंगे।"

वाहिद अली बोले, "आप खातिर जमा रखिये अब ये चीजें कहीं जा नहीं सकतीं।"

वह बक्स मोटर पर रख दिया गया और सब लोग गोपालशंकर से बिदा हुए। उसी समय मुरारी भी मोटर साइकिल पर आ मौजूद हुआ। आंख के इशारे से गोपालशंकर ने उसे अन्दर कमरे में आने को कहा और जब इन लोगों की मोटर रवाना हो गई तो खुद भी भीतर चले गये। मुरारी ने सब हाल खुलासा कह सुनाया। जो हुलिया उसने बताया उससे गोपालशंकर समझ गये कि स्वयम् नगेन्द्रनरसिंह ही इस माडेल को वापस लेने आए हैं। इससे उन्हें कुछ चिन्ता भी हुई क्योंकि मन ही मन वे नगेन्द्र की चालाकी होशियारी और हिम्मत का लोहा मानते थे, पर जब संदूक के अन्दर से उसके गधा पाने पर गुस्से का हाल सुना, तो वे खिल खिला कर हंस पड़े। मुरारी से उन्होंने और भी कई सवाल किये और तब बिदा किया। घड़ी की तरफ देखा तो अभी तीन नहीं बजा था। लाट साहब के यहां जाने में अभी देर थी। वे पुनः अपनी लेबोरेटरी में चले गये और दरवाजा बंद कर कुछ करने लगे।

॥ इति ॥

"कपास का फूल"

(१)

आगरे शहर के उस बाहिरी हिस्से में जिधर सरकारी अफसरों के बंगले हैं तथा वह आलीशान इमारत भी है जिसमें इस प्रांत के लाट इस शहर में आने पर ठहरते हैं एक बड़ी मोटर तेजी से जा रही है।

इस मोटर में पीछे की तरफ शहर के कोतवाल और असिस्टेन्ट पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट कमाल हुसेन हैं तथा उनकी बगल में प्रांत के खुफिया विभाग के सब से बड़े अफसर वाहिद अली खां बैठे हैं और आगे की तरफ ड्राइवर के इलावे दो हथियार बंद पुलिस के सिपाही हैं। वाहीद अली खां और कमाल हुसैन के बीच में लकड़ी का एक मजबूत बक्स रक्खा हुआ है जिस पर वाहिद अली खां एक हाथ इस तरह पर रक्खे हुए हैं मानो वह कोई बड़ी ही कीमती चीज है। मोटर तेजी से लाट साहब की कोठी की तरफ जा रही है जो यहां से बहुत दूर नहीं है।

इनकी मोटर के आगे आगे खाकी रंग की एक दूसरी मोटर जा रही है जिसमें कई आदमी बैठे हुए हैं। रंग ढंग और पोशाक से ये लोग भी फौजी अफसर मालूम होते हैं मगर

किसी तरह के हथियार जाहिरा इनके पास दिखाई नहीं पड़ते। पीछे की तरफ की सीट पर बैठे एक नौजवान के हाथ में बहुत छोटी एक दूरबीन है जिससे वह गाड़ीकी छाया में पीछे लगे हुए शीशे की राह पीछे का हाल देखता हुआ जा रहा है। यकायक उसने अपने साथी को इशारा कर के कहा, "देखो तो क्या यही बाहिदअली की मोटर है?" उसने पीछे देखा और तब कहा, "जी हां यही है।"

ड्राइवर को कुछ इशारा किया गया और मोटर की चाल बहुत कम हो गई, पीछे वाली मोटर धीरे धीरे पास आने लगी, कुछ ही देर में दोनों के बीच का फासला दस फीट के लगभग रह गया। जिस स्थान पर इस समय दोनों मोटरें थीं वह एक निराला स्थान था, दोनों तरफ बड़े बड़े बागीचों की दीवारों के सिवाय किसी तरह के मकान दिखाई नहीं पड़ते थे और न इस ढलती दोपहरिया की गर्मी में कोई मुसाफिर ही दिखाई पड़ रहा था।

यकायक एक आदमी ने झुक कर नीचे से काठ का एक छोटा बक्स उठाया और उसमें से एक शीशे का गोला बाहर निकाला, मगर उसी समय उस नौजवान ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, "ठहरो अभी इसकी जरूरत नहीं है।" वह आदमी रुक गया मगर बोला, "यह जगह निराली है, फिर ऐसा मौका शायद न मिले?" नौजवान ने कहा, "तो क्या तुम इन सभों को मोटर सहित उड़ा देना चाहते हो?

ऐसा करने से वह माडेल और वे कागजात भी नष्ट हो जांयगे।" वह आदमी बोला, "दुश्मन के हाथ पड़ जाने से उनका नष्ट हो जाना ही अच्छा है!!" नौजवान बोला, "यह ठीक है मगर यह समझ लो कि मृत्यु किरण के बम बनाने की मशीन नष्ट हो चुकी है, नई मशीन महीनों तैयार नहीं हो सकेगी और इन बमों का स्टाक बहुत ही थोड़ा है।" वह आदमी बोला, "इससे बढ़ कर जरूरी मौका और क्या आ सकता है, फिर भी अगर आपने कोई और तर्कीब सोची हो तो कहिये।" नौजवान ने कहा, "हां मुझे सूझी है, बम रख दो और मेरी बात सुनो।"

(२)

पं० गोपालशंकर कपड़े पहिन कर कहीं जाने को तैयार थे कि उसी समय तारघ्यून ने एक तार ला कर उनके हाथ में दिया, उन्होंने खोल कर उसे पढ़ा, तार बनारस से आया था और भेजने वाले वहां के ;सुपरटेन्डेन्ट मि० कैमिल थे। तार का मजमून यह था:—

"रोज गायब है ? कहीं पता नहीं लगता, उसकी जान का खतरा मालूम होता है, कृपा कर तार देखते आइये और मदद कीजिये—कैमिल।"

तार पढ़ कर गोपालशंकर बेचैन हो गये। मिस्टर कैमिल की लड़की मिस रोज से उनकी बहुत ही घनिष्टता था और कुछ दिनों से वह घनिष्टता प्रेम के रूप में परिणत हो गई

थी पर यह प्रेम दोनों दिलों के अत्यन्त गहरे पर्दे के भीतर छिपा हुआ था और किसी पर यहां तक कि एक दूसरे पर भी प्रगट नहीं किया गया था। फिर भी वह एक ऐसा पदार्थ है कि चाहे कितना ही गुप्त और कितने ही प्रयत्न से छिपा कर रक्खा गया क्यों न हो प्रेमी पर आने वाली मुसीबत को सुन कर लगने वाला जबर्दस्त धक्का उसे प्रकट कर ही देता है। तार वाला तो तार दे कर चला गया मगर गोपालशंकर तार का मजमून पढ़ कर उसी जगह एक कुर्सी पर बैठ गये और कुछ सोचने लगे।

न जाने कब तक वह इसी तरह बैठे रहते मगर घड़ी के पांच बजने ने उन्हें चैतन्य किया और उन्हें ख्याल हुआ कि लाट साहब से उनके मिलने जाने का समय हो गया बल्कि बीत रहा है। उन्हें कोशिश कर के अपने को चिन्ता सागर से निकाला और मुरारी को आवाज दी।

थोड़ी देर में मुरारी वहां आ मौजूद हुआ। गोपालशंकर ने कहा "मैं लाट साहब से मिलने जा रहा हूं और वहां से आते ही बनारस के लिये रवाना हो जाऊंगा। तुम मेरा संदूक तैयार कर रक्खो और सब सामान दुरुस्त कर डालो, शायद तुम्हें भी मेरे साथ चलना पड़ेगा।"

कुछ जरूरी चीजें जो गोपालशंकर अपने साथ ले जाना चाहते थे मुरारी को बता कर गोपालशंकर उठे और जाने को तैयार हुए। उसी समय टेलीफोन की घंटी बजी और सुनने

पर मालूम हुआ कि लार्ट साहब के प्राइवेट सेक्रेटरी दरियाफ्त कर रहे हैं कि "क्या पंडित गोपालशंकर घर से रवाना हो चुके हैं ?" गोपालशंकर ने जवाब दिया, "एक जरूरी तार आ जाने के सबबसे मुझे कुछ मिनटोंकी देर हो गई, मैं अभी आता हूँ।" जवाब आया, "जहां तक हो जल्दी आइये यहां एक विचित्र घटना हो गई है।"

गोपालशंकर ने उत्सुकता से पूछा, "क्या हुआ ?" सेक्रेटरी ने जवाब दिया, "मि० वाहिदअली और कोतवाल अभी यहां पहुंचे हैं। आप से वह माडेल ले कर रवाना होने के बाद वे लोग अब तक कहां रहे या क्या करते रहे यह इन सभों को कुछ भी याद नहीं है और न वह माडेल ही इनके साथ है।"

सुन कर गोपाल शंकर ने जोर से एक हाथ टेबुल पर मारा और कहा, "ओफ़ ये मूर्ख अफसर !" पर यकायक रुक गये। सेक्रेटरी से फिर कुछ बातें कीं और तब चोंगा टांग दिया, इसके बाद अपनी लेबोरेटरी में गये और वहां से कोई सामान ले कर बाहर आ गये। दरवाजे में दोहरा ताला बंद किया और अपनी मोटर साइकिल पर सवार हो कर रवाना हो गये।

(२)

रात के कोई पौने दस बजे होंगे। गोपालशंकर अभी तक लौट कर नहीं आए हैं अस्तु मुरारी ड्राइंग रूम के सामने बरामदे में बैठा उनकी राह देख रहा है। सिर्फ दो चार नौकर इधर उधर काम पर दिखाई पड़ रहे हैं बाकी के सब काम

समाप्त कर बाग की चहार दीवारी के साथ बनी हुई उस इमारत में चले गये हैं जो खास अपने नौकरों ही के लिये गोपालशंकर ने बनवा दी है। बाग के फाटक पर दो पहरेदार मौजूद हैं और चार आदमी उस बड़े बाग और इमारत में इधर उधर घूम कर चौकसी कर रहे हैं। जब से रक्त मंडल का उत्पात शुरू हुआ है गोपालशंकर ने पहरेदार बढ़ा दिये हैं और बंगले की हिफाजत का बहुत ख्याल रक्खा जाता है।

मुरारी गोपालशंकर का सिर्फ नौकर ही नहीं है बल्कि बहुतसे कामों में उनका चालाक और होशियार जासूस भी है। विज्ञान से भी इसे बहुत शौक है और यह गोपालशंकर के वैज्ञानिक आविष्कारों से पूरी दिलचस्पी रखता तथा उनसे काम लेना बखूबी जानता है। गोपालशंकर भी इससे बहुत प्रेम रखते हैं। यह लड़कपन से उनके साथ है और जब कभी वे हिन्दुस्तान के बाहर के मुल्कों की सैर करने जाते हैं तो इसे जरूर अपने साथ रखते हैं। थोड़ा बहुत सभी भाषाओं में मुरारी को दखल भी है।

इस समय मुरारी के हाथ में कोई उपन्यास या किस्से की किताब नहीं है जिसे वह बड़े शौक से बिजली की रोशनी में दीवार के साथ उठंगा हुआ पढ़ रहा है। यह एक वैज्ञानिक पुस्तक है जिसमें बिजली द्वारा होने वाले आश्चर्य जनक कामों और उनके अद्भुत यंत्रों का हाल दिया गया है।

अचानक मुरारी के तेज कानों को किसी प्रकार की

आहट मिली, आवाज किस प्रकार की थी इसे तो वह समझ न सका पर रुख पर ध्यान देने से इतना जान गया कि ऊपर की मंजिल से आ रही है। पहिले तो उसने समझा कि कोई नौकर उठा होगा और कुछ कर रहा होगा पर फिर उसका मन न माना और वह जांच करने के लिये उठ खड़ा हुआ। हाथ की किताब उसी जगह रख दी, और धीरे धीरे पांव दबाता हुआ सीढ़ियां तय कर ऊपर की मंजिल पर पहुंचा। सीढ़ी के मुहाने पर पहुँच वह रुक गया, यहां भी नीचेकी मंजिल की तरह सामने बरामदा और इसके बाद कई कमरे थे। साधारण रीति से रात को दस बजे के बाद इस बरामदे में सिर्फ एक बिजली की बत्ती बलती रहा करती थी परन्तु इस समय वह भी बुझी हुई थी और वहां घोर अंधकार था। इस बात ने मुरारी को आश्चर्य में डाल दिया और वह वहीं रुक गया। जो आहट मुरारी के कानों तक पहुँची थी वह इस समय बंद हो गई थी और वहां एक दम सन्नाटा था। मगर कुछ ही देर बाद वह आवाज फिर शुरू हो गई और इस बार मुरारी को मालूम हो गया कि यह उस तरफ से आ रही है जिधर लेबोरेटरी है। यह मालूम होते ही मुरारी चौकन्ना हो गया, उसे दुश्मनों का खयाल आया और सन्देह हो गया कि शायद बदमाश लोग उसके मालिक की लेबोरेटरी में घुसकर कुछ कर रहे हैं। अब वह एक सायत भी वहां रुक न सका, दबे पांव आगे की तरफ बढ़ा और उस तरफ चला जिधर लेबोरेटरी थी।

इस तरफ भी अंधेरा था मगर नित्य का परिचित होने के कारण मुरारी को यहां आने में कोई तरद्दुद न हुआ। कुछ ही देर में वह लेबोरेटरी के दर्वाजे के पास जा पहुंचा और कपड़ा टांगने के एक स्टैन्ड की आड़ में खड़ा हो गौर से चारों तरफ देखने लगा। पहिले तो अंधेरे के सबब कुछ मालूम न हुआ पर जब निगाह जमी तो थोड़ा थोड़ा दिखने लगा और मालूम हो गया कि लेबोरेटरी के दर्वाजे के सामने घुटना टेके हुए बैठा कोई आदमी कुछ कर रहा है। मुरारी यद्यपि बहुत ही पांव दबा कर और आहिस्ते से आया था फिर भी इस आदमी को कुछ आहट लग ही गई थी और वह अपना काम बन्द कर के पीछे की तरफ मुंह कर चारो तरफ देख रहा था। या तो उसने मुरारी को आते देख लिया था या उसे किसी और बात का शक हो गया था, उसने अपना काम छोड़ दिया और जमीन पर से कोई चीज उठा जो शायद एक बेग था, मकान के पिछली तरफ लपका।

मुरारी ने देखा कि शिकार भागा जा रहा है, उस के सिर के पीछे ही बिजली की बत्ती का बटन था, उसने हाथ बढ़ा कर उसे दबाया जिसके साथ ही बरामदे में तेज रोशनी फैल गई और तब उसने आड़ से निकल कड़क कर कहा, "कौन जा रहा है खड़ा रह !!

जाने वाले ने एक दफे पीछे घूम कर देखा और तब अपनी चाल तेज की। एक क्षण के लिये उसका हाथ कपड़ों

के अन्दर गया और तब एक चमकदार चीज उस हाथ में दिखाई देने लगी जिसे देखते ही मुरारी ने समझ लिया कि कोई हथियार है पर वह ऐसा कमहिम्मत न था कि कोई मामूली हथियार दिखा कर उसे डरा लेता। वह अपनी जगह से झपटा और दौड़ कर उसके पास पहुंचा साथही उसने जेब से एक सीटी निकाल जोर से बजाई। भागने वाले ने दौड़ कर निकल जाना चाहा पर फिर न जाने क्या सोच कर वह रुका और घूम गया। उसके हाथ में एक खुखड़ी थी जिसे दिखा कर उसने कहा, "बस खबरदार जो एक कदम भी आगे रक्खा है !!"

इस आदमी के चेहरे पर नकाब पड़ी हुई थी और आवाज पर गौर करने से मालूम पड़ता था मानों वह आवाज बदल कर बातें कर रहा हो। उसके हाथ का शस्त्र भयानक था मगर मुरारी ने उसे कुछ करने का मौका देना उचित न समझा और एक दम झपट कर उससे गुथ गया। एक हाथ से उसने वह कलाई पकड़ ली जिसमें खुखड़ी थी और दूसरा कमर में डाल दिया। वह आदमी भी उससे गुथ गया और दोनों में जबर्दस्त कुश्ती होने लगी।

मुरारी का बदन मजबूत था और उसे अपनी ताकत पर घमंड भी था मगर उसने अपने प्रतिद्वंदी को अपने से बहुत मजबूत पाया। दो ही चार मिनट के बाद मुरारी ने अपने को जमीन पर गिरा हुआ पाया और उसके दुश्मन का खुखड़ी वाला हाथ ऊंचा हुआ। करीब ही था कि वह भयानक हथियार

मुरारी की गरदन अलग कर देता या उसकी छाती में खुप जाता कि ऊपर उठी हुई कलाई को पीछे से किसी मजबूत हाथ ने पकड़ लिया। चौंक कर उस आदमी ने अपने पीछे की तरफ देखा और गोपालशङ्कर को खड़ा पाया जो न जाने कब और किधर से उसके पीछे आ पहुँचे थे। उसने झटका दे कर हाथ छुड़ा लेना चाहा मगर उसे ऐसा मालूम हुआ मानो किसी लोहे के पंजे ने उसका हाथ पकड़ लिया हो जो जरा भी रुकना या मुड़ना नहीं जानता था। अब गोपाल शंकर ने धीरे धीरे उस हाथ को ऐंठना शुरू किया, यहाँ तक कि वह दर्द के मारे चिल्ला कर मुरारी पर से उठ खड़ा हुआ, उसी समय मुरारी भी उठ खड़ा हुआ और दोनों ने मिल कर बहुत जल्द ही उसे बेकाबू कर दिया। मुरारी कहीं से एक रस्सी ले आया जिसमें उसके हाथ पैर कस कर बांध दिये गये।

नकाब उठा कर गोपालशंकर ने बड़े गौर से उसकी सूरत देखी पर उसे पहिचान न सके, आखिर बोले, "तुम कौन हो और मेरे घर में क्या करने आये थे?" उस आदमी ने जवाब दिया, "मैं चोर हूँ और चोरी करने आया था!!" गोपालशंकर ने यह सुन सिर हिलाया और कहा, "तुम मामूली चोर नहीं मालूम होते! सच सच बताओ तुम कौन हो?" वह बोला, "आपको अख्तियार है जो चाहे समझें!"

उसी समय गोपालशंकर की निगाह एक चमड़े के बेग पर पड़ी जो उसी जगह पड़ा हुआ था। उन्होंने उसे उठा लिया

और खोला, तरह तरह के ताले खोलने, सेफ तोड़ने, शीशा और लोहा काटने और छेद करने के वैज्ञानिक यंत्र उसमें पड़े हुए थे जिनमें से कई बिजली से काम करने वाले थे। उन्हीं के साथ एक पुर्जा भी पड़ा था जिसे गोपालशंकर ने निकाल लिया और पढ़ा, यह लिखा हुआ था:—

" ६७. ए. जी.-गोपालशंकर के लेबोरेटरी के सेफ में कुछ फोटो के प्लेट हैं! उन्हें आज ही लाना होगा। आज बारह बजे रात के पहिले वे घर लौटने न पावेंगे। उसके पहिले ही उन प्लेटों को कब्जे में करो और ठिकाने पहुँचाओ।"

उसके नीचे रक्तमंडल का प्रसिद्ध निशान खून का लाल दाग और उसके बीच में चार उंगलियों का निशान बना हुआ था जिसे देखते ही गोपालशंकर सब मामला समझ गये। जेब से तालियों का एक गुच्छा निकाल कर उन्होंने मुरारी को दिया और कहा," इसे तेंतीस नंबर कोठड़ी में बंद कर दो और एक पहरेदार वहां मुकर्रर कर दो जिसमें भागने न पावे, बिजली का कनेक्शन लोहे के छड़ों के साथ कर देना, यह बहुत भयानक आदमी है!!"

मुरारी ताली का गुच्छा और उस आदमी को साथ लिये नीचे चला गया और गोपालशंकर अपनी लेबोरेटरी के पास पहुंचे, उस समय उन्हें मालूम हुआ कि किसी तेज औजार से दर्वाजे का वह हिस्सा जिसमें दोहरा ताला बंद किया जाता था, काट डाला गया है, तीन तरफ से कट चुका और सिर्फ

एक जगह थोड़ा लगा था जिसके कटते ही दर्वाजा खुल जाता। वे समझ गये कि वह आदमी इसी काम में लगा था जब मुरारी ने उसके काम में बाधा डाली थी। उन्होंने उसी समय उसकी मजबूती का इन्तजाम किया बल्कि रात उसी कमरे में काटी और दूसरे दिन सवेरे ही कारीगरों को बुला कर लाबोरेटरी के सब दर्वाजों और खिड़कियों में लोहे के मोटे छड़ों वाले दो दो दर्वाजों का इन्तजाम किया।

(४)

सूर्योदय से लगभग एक घंटे पहिले का समय है। सरकार के मेकैनिकल एडवाइजर और बेतार की तार के एक्सपर्ट कप्तान रूबी गहरी नींद में मस्त हैं और उनकी नाक से खुर्राटों की बारीक आवाज आ रही है। न जाने कब तक ये पड़े रहते मगर एक खानसामा ने डरते डरते उनके पलंग के पास जाकर उन्हें जगाया और कहा, "हुजूर हुजूर! उठिये, जरूरी टेली-फोन आया है!"

एक करवट बदल कर कप्तान रूबी ने आंख खोली और पूछा, "क्या है?" खानसामा ने फिर कहा "जरूरी टेलीफोन आया है!" उन्होंने पूछा, "कौन बुलाता है!" खानसामा बोला, "पं० गोपालशंकर!" गोपालशंकर का नाम सुनतेही वे चौंक पड़े और उठ बैठे, रात का कपड़ा बदलने की परवाह किये बिना ही वे उस कमरे में पहुंचे जिसमें टेलीफोन था। खान-सामा दरवाजे पर खड़ा था उसे इशारे से दूर जाने को कहा

और तब टेलीफोन में बोले, "कौन है?" जवाब आया, "मैं हूं गोपालशंकर! आप क्या कप्तान रूबी हैं?" उन्होंने जवाब दिया, "जी हां, कहिये क्या है?" दोनों में टेलीफोन पर बात होने लगी।

गोपाल०। कल जो शक मैंने किया था वह ठीक निकला!

रूबी०। क्या?

गोपाल०। रक्तमंडल को पता लग गया कि मैंने उस माडेल और उन कागजों के फोटो उतार कर रख लिये हैं जिन्हें वाहिद अली खां को धोखा देके वे ले गये हैं!

रूबी०। (चौंक कर) हैं मालूम हो गया? क्या उन्होंने कोई कार्रवाई की?

गोपाल०। हां उनका एक आदमी मेरी लेबोरेटरी का दर्वाजा तोड़ता हुआ पकड़ा गया जिसके पास एक कागज भी था जिसमें इस बात का जिक्र था!

रूबी०। वह आदमी कहां है?

गोपाल०। मेरे कब्जे में है।

रूबी०। उसे मार पीट कर उससे कुछ हाल दरियाफ्त करना चाहिये!

गोपाल०। क्या आप समझते हैं कि रक्तमण्डल के जासूस मार पीट, धमकी या सजा से डर कर कुछ भेद बतावेंगे? कभी नहीं! मैंने इस के लिये दूसरी ही तर्कीब सोची है।

रूबी०। सो क्या?

गोपाल०। आपसे कल मैंने अपने उस यंत्र का जिक्र किया था जो मनुष्य के मनोभावों का चित्र उतारता है। मैं उसी को काम में लाऊंगा और देखूंगा कि इसमें कहां तक सफलता होती है।

रूबी०। हां ठीक है, मुझे खयाल आ गया, तो आप जिस समय उस यंत्र का इम्तिहान इस आदमी पर करें उस समय मुझे भी जरूर बुला लें, मुझे आपकी बात सुन कर बड़ा कौतूहल हुआ है और मैं देखना चाहता हूं कि आपका यंत्र क्या कर सकता है।

गोपाल०। यही नहीं बल्कि मैं चाहता हूं कि आप खुद ही उस यंत्र का इम्तिहान लें। मुझे दो घंटे के भीतर ही बनारस के लिये रवाना हो जाना है जहां मेरे दोस्त मिस्टर कैमिल बड़े तरद्दुद में पड़ गये हैं। अस्तु मुझे उस यंत्र से काम लेने का मौका नहीं मिलेगा और यह भी ठीक नहीं कि मैं कब तक लौटूं। देर होने से न जाने क्या हो जाय अस्तु मैं चाहता हूं कि मेरी गैरहाजिरी में आप ही उस यंत्र से काम लें और देखें कि कहां तक सफलता होती है।

रूबी०। मैं खुशी से यह काम करने को तैयार हूं मगर यह आपने क्या कहा कि मि०कैमिल बड़ी मुसीबत में पड़ गये हैं! उन पर क्या आफत आई है?

गोपाल०। उनकी लड़की रोज कहीं गायब हो गई है। उसकी जान का अंदेशा किया जाता है! मुझे तो यह रक्तमंडल

की कार्रवाई मालूम पड़ती है मि०कै मिल की। कल एक तार मुझे मिला है जिसमें उन्होंने मुझसे तुरत आने को कहा है अस्तु मैं आज थोड़ी देर में बनारस के लिये रवाना होने वाला हूं।

रूबी०। हां जरूर जाइये, मुझे भी यह समाचार सुन बहुत अफसोस हुआ, अगर कोई मदद देने लायक होता तो मैं भी जरूर आपके साथ ही चलता, खैर वहां का हाल मुझे बराबर लिखते रहियेगा। अच्छा उस यंत्र के बारे में,—क्या मैं उससे काम ले सकूंगा?

गोपाल०। हां, यह कोई मुश्किल नहीं है, मैं उसके सब भेद आधे घंटे में आपको समझा दूंगा, आप अगर इसी समय आ जायं तो सब ठीक हो जाय।

रूबी०। मैं आधे घंटे के अंदर आप के बंगले पर पहुंचता हूं।

गोपाल०। अच्छी बात है, आती समय रास्ते में मिस्टर डगलस से मिल कर इस आदमी के पकड़े जाने का हाल कह यह भी निश्चय कर लीजियेगा कि वे कैदी को आप के पास रहने देंगे अथवा इस बात का प्रबंध कर देंगे कि वह जेल में बहुत ही होशियारी के साथ रक्खा जाय और आप जब चाहें उस पर प्रयोग कर सकें।

रूबी०। अच्छा, मैं कलेक्टर से मिल कर इस बात को भी तय करता आऊंगा।

बातचीत खतम हुई और टेलीफोन का चोंगा टांग कर

कप्तान उठ खड़े हुए, पर इस बात की उन्हें कुछ भी खबर न हुई कि उस कमरे की एक खिड़की के बाहर खड़े उनके खानसामा ने उनकी सब बातें अच्छी तरह सुन ली हैं।

जैसा कि उन्होंने वादा किया था, आधे घंटे के अंदर ही कप्तान रूथी गोपालशङ्कर के बंगले पर पहुंच गये। गोपालशंकर अपनी लेबोरेटरी के दरवाजे और खिड़कियां मजबूत करने का प्रबंध कर रहे थे जब इनके आने की उन्हें खबर मिली। वे नीचे आ कर आदर के साथ उनसे मिले और तब उन्हें अपनी लेबोरेटरी में ले गये जहां टेबुल के ऊपर विचित्र तरह का एक यंत्र रक्खा हुआ था। यही गोपालशंकर द्वारा आविष्कृत मनोभावों का चित्र उतारने वाला वह यंत्र था। गोपालशंकर उस यंत्र का भेद कप्तान रूथी को समझाने लगे।

लगभग पौन घंटे तक दोनों वैज्ञानिकों में बातचीत होती रही। सच तो यह है कि गुणी ही गुणी की कदर कर सकता है। जब कप्तान रूथी उस यंत्र के भेद को अच्छी तरह समझ गये तो उन्होंने प्रेम के साथ गोपालशंकर से हाथ मिलाया और कहा, " पंडित जी! मैं नहीं समझता था कि आपके इस दिमाग में इतनी विद्या और बुद्धि भरी हुई है। मैं करीब करीब सब मुल्कों में घूमा हूं और यूरोप और अमेरिका के प्रायः सभी प्रसिद्ध विद्वानों और वैज्ञानिकों से मेरा परिचय है पर मैं सच कहता हूं कि आप की टक्कर का आदमी मैंने कहीं नहीं देखा। मैं आपकी बुद्धि की तारीफ नहीं कर सकता। आपका यह

यंत्र ही बताता है कि आप वैज्ञानिक जगत में कितना ऊंचा स्थान ग्रहण किये हुए हैं। अफसोस कि आप ऐसे देश में पैदा हुए हैं जो पराधीन होने के साथ ही साथ अपनी मनोवृत्तियों में यहां तक पंगु हो गया है कि अपने गुणियों की आप ही कद्र नहीं करता नहीं तो अगर आप पश्चिम में पैदा हुए होते तो जगत के एक रत्न समझे जाते।"

दोनों आदमियों में कुछ देर तक और बातचीत होती रही। इसके बाद कप्तान रूबी बिदा हुए। उनके साथ एक आदमी वह यंत्र लिये हुए था और दो कान्सटेबुल हथकड़ी डाले उस आदमी को लिये हुए थे जिसे कल रात गोपालशंकर ने गिरफ्तार किया था।

कप्तान रूबी के जाने बाद गोपालशंकर ने मुरारी को बुलाया और कहा," मैं चाहता था कि तुम्हें भी अपने साथ बनारस ले जाता पर रक्तमंडल की कार्रवाइयों को देख मुझे ख्याल होता है कि मेरे पीछे किसी होशियार आदमी का यहां रहना जरूरी है जो बंगले की पूरी हिफाजत रक्खे, अस्तु तुम्हें यहीं छोड़े जाता हूं। तुम खूब चौकसी रखना और सब जगह की खास कर मेरी लेबोरेटरी की खूब हिफाजत करना। मुझे विश्वास है कि मेरे पीछे दुश्मन लोग जरूर कुछ न कुछ आफत करेंगे मगर तुम होशियार हो और उनसे पूरी तरह मुकाबला कर सकते हो अस्तु तुम्हारे यहां रहने से मैं निश्चिन्त रहूँगा। लेबोरेटरी की हिफाजत के लिये रात भर में मैंने कुछ और

सामान किये हैं उन्हें मैं तुम्हें समझा देता हूं,उनके रहते किसी की मजाल नहीं कि भीतर झांक सके, फिर भी अगर कोई तरद्दुद पड़े तो सीधे यहां के कलेक्टर मिस्टर डगलस के पास चले जाना, वह मुनासिब इन्तजाम कर देंगे।"

गोपालशंकर ने मुरारी को बहुत सी बातें समझाईं और इसके बाद बनारस जाने की तैयारी करने लगे। दो घंटे के बाद वे बनारस के लिये रवाना हो गये। उनके साथ बहुत ही मुख्तसर सा सामान था और आदमी या नौकर भी कोई न था।

(५)

मि० कैमिल को हमारे पाठक कदाचित् भूले न होंगे जिनका नाम इस पुस्तक के आरम्भ में आ चुका है। ये पहिले आगरे के पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट थे और अब बदल कर बनारस आ गये हैं। इनके पहिले सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० गिब्सन के समय में बनारस में रक्तमण्डल ने जो कार्रवाइयां कीं उनकी भीषणता और अपराधियों का कुछ भी पता न लगने के कारण ऊंचे अफसर मि० गिब्सन से कुछ असन्तुष्ट हो गये थे और सच तो यह है कि इसी सबब वे बनारस से एक छोटे और अपेक्षाकृत कम महत्व के शहर में भेज दिये गये थे। मि०कैमिल जब से यहां आए थे तब से ऐसी घटनाओं का होना बंद हो गया था पर यह नहीं कहा जा सकता कि इसका कारण उनकी होशियारी और चालाकी थी या रक्तमंडल की उदासीनता और उसका ध्यान दूसरी तरफ होना।

परन्तु यह शांति कुछ ही दिनों के लिये थी और अन्त में स्वयम् उन्हें ही कुचक्रियों के भीषण षड्यंत्र में पड़ना पड़ा।

संध्या का समय था, गर्मी की भीषणता से व्याकुल हो कर मि० केमिल, उनकी स्त्री और लड़की मोटर बोट पर चढ़ कर गंगा जी में सैर करने निकली थीं। पूर्णमासी का दिन था और जल पर पूर्ण चन्द्र की शोभा देखने की सभी को इच्छा थी अस्तु बोट तेजी के साथ छोड़ दिया गया था और इस समय वह रामनगर को पीछे छोड़ता चुनार की ओर बढ़ रहा था।

रोज के हाथ में एक दूरबीन थी जिससे वह चारो तरफ का दृश्य देखती और उन पर तरह तरह की टिप्पणियां करती जा रही थी। यकायक उसने कहा, "मां, देखिये आगे एक और मोटर बोट जा रही है! उसकी चाल हमारी नाव से तेज मालूम पड़ती है।" रोज ने मां के हाथ में दूरबीन दी और उसने देख कर कहा, "हां बहुत सुन्दर और तेज जाने वाली बोट है, मगर उसकी चाल कम हो रही है, जान पड़ता है इन्जिन में कुछ खराबी आ गई है।"

घूमती हुई दूरबीन मि० कैमिल के हाथ में गई और उन्होंने भी उस बोट को देखा जिसका इन्जिन अब बन्द हो गया था पर जो फिर भी तेजी से पानी को काटती हुई आगे बढ़ रही थी। यकायक कैमिल ने देखा कि बोट के पिछले हिस्से में एक तीन चार बरस का सुन्दर लड़का खड़ा हुआ और इनकी नाव की तरफ देखने लगा, उसी समय तेजी से अचानक उस

बोट का इंजिन जो न जाने क्यों रुक गया था, चल पड़ा और बोट तेजी से आगे बढ़ी। एक कड़ा झटका लगा और झोंके को बर्दाश्त न कर सकने के कारण वह छोटा लड़का पानी में गिर पड़ा। मि० कैमिल के मुंह से यकायक "अरे! लड़का गिरा!!" निकल गया, और उन्होंने दूरबीन रख जोर जोर से नाव का भोंपू बजाना शुरू किया जिसमें उस बोट वालों का ध्यान आकर्षित हो। पर वे बोट वाले न जाने किस काम में मग्न थे कि उन्होंने कुछ भी खयाल न किया और लड़के को उसी तरह पानी में छोड़ उनकी नाव आगे बढ़ गई।

मि० कैमिल की नाव उस नाव से लगभग पांच या छः फरलांग दूर होगी, जब यह घटना हुई। इसे देखतेही उन्होंने अपना इंजिन तेज किया और उस तरफ बढ़े जहां वह लड़का पानी में गिरा था। उनकी स्त्री दूरबीन हाथ में लिये हुए थी और उस लड़के पर निगाह किये थी जो एक बार डूब कर अब फिर उतरा आया था और पानी पर हाथ पैर मार रहा था।

अब उस अगली नाव वालों का ध्यान भी इस दुर्घटना की तरफ गया। एक आदमी पीछे की तरफ आया और झांक कर देखने लगा, नाव का मुंह घूमा और एक सायत के लिये ऐसा मालूम हुआ मानो वह लौटेगी और उस बेचारे लड़के को उठावेगी परंतु ऐसा न हुआ, क्या जाने कैमिल साहब की नाव देख कर या न जाने किस कारण उस नाव ने अपना मुंह फिर सीधा कर लिया और पहिले से भी ज्यादा तेजी से आगे की तरफ बढ़ी।

ड़का पीछे छूट गया। इसी समय मि० केमिल की नाव उस ड़के के पास पहुंच गई, मि० केमिल जल में कूद पड़े और ।ी के साथ उस लड़के के पास पहुँच कर उन्होंने उसे उठा ल्या जो अबकी शायद आखिरी दफे नीचे जा रहा था। नकी स्त्री मोटर बोट घुमा कर पास ले आई और सभों ने ।ल कर लड़के को और फिर मि० केमिल को सहारा दे नाव र चढ़ा लिया।

लड़का यद्यपि पानी पी गया था पर फिर भी होश में ।। मिसेज केमिल ने उसके कपड़े बदल कर अपना कोई पड़ा उसे उढ़ाया और हाथ पांव मल कर बदन गर्म किया ेर केमिल साहब ने भी गीले कपड़े उतारे, इस बीच में स अगले बोट पर से ध्यान हट गया था पर अब जो देखा । वह दूर जा पहुँचा था और फिर भी बढ़ा ही जा रहा ।। रोज यह देख बोली, "वे लोग कौन हैं जो लड़के को ानी में छोड़ इस तरह भागे जा रहे हैं, कैसी निष्ठुरता !" केमिल बोले, "मुझे भी इस पर ताज्जुब हो रहा है, ह आदमी आ कर देखता था इससे यह भी नहीं कहा जा ।कता कि उन लोगों को इस दुर्घटना की खबर नहीं है।" मसेज केमिल बोली, "शायद उस आदमी की निगाह लड़के र न पड़ी हो और उसने इसे डूब गया समझा हो।" इस र रोज़ बोली, "तो भी रुक कर पता लगाना उनका फर्ज था, तो इस तरह भागे मानों लड़का चोरी का हो!!"

बोट का इंजिन जो न जाने क्यों रुक गया था, चल पड़ा और बोट तेजी से आगे बढ़ी। एक कड़ा झटका लगा और झोंके को बर्दाश्त न कर सकने के कारण वह छोटा लड़का पानी में गिर पड़ा। मि० कैमिल के मुंह से यकायक "अरे! लड़का गिरा!!" निकल गया, और उन्होंने दूरबीन रख जोर जोर से नाव का भोंपू बजाना शुरू किया जिसमें उस बोट वालों का ध्यान आकर्षित हो। पर वे बोट वाले न जाने किस काम में मग्न थे कि उन्होंने कुछ भी खयाल न किया और लड़के को उसी तरह पानी में छोड़ उनकी नाव आगे बढ़ गई।

मि० कैमिल की नाव उस नाव से लगभग पांच या छः फरलांग दूर होगी, जब यह घटना हुई। इसे देखतेही उन्होंने अपना इंजिन तेज किया और उस तरफ बढ़े जहां वह लड़का पानी में गिरा था। उनकी स्त्री दूरबीन हाथ में लिये हुए थी और उस लड़के पर निगाह किये थी जो एक बार डूब कर अब फिर उतरा आया था और पानी पर हाथ पैर मार रहा था।

अब उस अगली नाव वालों का ध्यान भी इस दुर्घटना की तरफ गया। एक आदमी पीछे की तरफ आया और झांक कर देखने लगा, नाव का मुंह घूमा और एक सायत के लिये ऐसा मालूम हुआ मानो वह लौटेगी और उस बेचारे लड़के को उठावेगी परंतु ऐसा न हुआ, क्या जाने कैमिल साहब की नाव देख कर या न जाने किस कारण उस नाव ने अपना मुंह फिर सीधा कर लिया और पहिले से भी ज्यादा तेजी से आगे की तरफ बढ़ी।

लड़का पीछे छूट गया। इसी समय मि० केमिल की नाव उस लड़के के पास पहुंच गई, मि० केमिल जल में कूद पड़े और तेजी के साथ उस लड़के के पास पहुँच कर उन्होंने उसे उठा लिया जो अबकी शायद आखिरी दफे नीचे जा रहा था। उनकी स्त्री मोटर बोट घुमा कर पास ले आई और सभों ने मिल कर लड़के को और फिर मि० केमिल को सहारा दे नाव पर चढ़ा लिया।

लड़का यद्यपि पानी पी गया था पर फिर भी होश में था। मिसेज केमिल ने उसके कपड़े बदल कर अपना कोई कपड़ा उसे उढ़ाया और हाथ पांव मल कर बदन गर्म किया और केमिल साहब ने भी गीले कपड़े उतारे, इस बीच में उस अगले बोट पर से ध्यान हट गया था पर अब जो देखा तो वह दूर जा पहुँचा था और फिर भी बढ़ा ही जा रहा था। रोज यह देख बोली, "वे लोग कौन हैं जो लड़के को पानी में छोड़ इस तरह भागे जा रहे हैं, कैसी निष्ठुरता है!" केमिल बोले, "मुझे भी इस पर ताज्जुब हो रहा है, वह आदमी आ कर देखता था इससे यह भी नहीं कहा जा सकता कि उन लोगों को इन दुर्घटना की खबर नहीं है।" मिसेज केमिल बोली, "शायद उस आदमी की निगाह लड़के पर न पड़ी हो और उसने इसे डूब गया समझा हो!!" इस पर रोज़ बोली, "तो भी रुक कर पता लगाना उनका फर्ज था, वे तो इस तरह भागे मानों लड़का चोरी का हो!!"

अब तक दोनों नावों के बीच में कोई डेढ़ मील का फर्क पड़ चुका था। मि० केमिल ने अब अपनी नाव की चाल तेज की, चाहा कि उस नाव के पास पहुंच लड़का उनके हवाले कर दें और यह भी दरियाफ़ करें कि उसे बेदर्दी के साथ पानी में छोड़ भागने का क्या सबब था पर उनकी यह इच्छा भी पूरी न हुई। इनकी नाव की चाल तेज होने के साथही अगली नाव की चाल भी तेज दिखाई पड़ी और वह पहिले से भी ज्यादा तेजी से पानी काटने लगी। मि० केमिल ने यह देख कहा, "जरूर यह कुछ भेद की बात है, ये लोग या तो इस लड़के को नहीं चाहते और या हम लोगों से डरते हैं!!" यह बात मुंह से निकलने के साथही उनको कुछ और खयाल हुआ और वे एक दूसरी ही बात सोचने लगे। कुछ देर बाद उन्होंने मोटर का मुंह घुमाया और घर की तरफ लौटे। अब हम थोड़ी देर के लिये इनका साथ छोड़ते हैं और उस अगली मोटर बोट के साथ चलते हैं।

बोट में सिर्फ दो आदमी हैं जिनमें एक तो इञ्जिन के पास खड़ा है और दूसरा आगे के हिस्से में खड़ा चिन्ताकुल आंखों से कुछ देख रहा है। नाव में तरह तरह के सामान भरे हुए हैं, बहुत सी छोटी बड़ी गठड़ियां, कुछ चमड़े के बेग, कई ट्रंक और इसी तरह की और चीजें बतला रही हैं मानों किसी रईस का सामान जा रहा हो। इञ्जिन अपनी पूरी तेजीसे चल रहा है और नाव पानीको काटती हुई तीर की तरह जा रही है।

कुछ देर बाद आगे वाले आदमी ने यह कह कर सन्नाटे को तोड़ा—'मुकुन्द ! अब क्या होगा ? सरदार जब लड़के का हाल सुनेंगे तो क्या कहेंगे ?"

इञ्जिन के पास खड़ा आदमी बोला, "कहेंगे क्या, पूरी दुर्दशा होगी ! न जाने क्या समझ सोच कर उन्होंने यह सब सामान और उस लड़के को अपने पास मंगवाया था। लड़के के चले जाने से उनकी कार्रवाई में कितना बड़ा विघ्न पड़ जायगा कौन कह सकता है ? असल में रामू तुमने गलती की जो लौट कर उसे उठा लेने नहीं दिया !

रामू० । गलती क्या की, केमिल की बोट सिर पर आ पहुँची थी। हम लोग लौटते तो जरूर उनसे बातें होतीं, सवाल जवाब होते, किसका लड़का है यह पूछने पर हम क्या बताते ? उनसे और बटुकचंद से सुनते हैं दोस्ती है ! अगर उन्होंने पहिचान लिया कि बटुकचंद ही का खोया हुआ लड़का यह है तो क्या होता सोचो !

मुकुन्द ने इसका कुछ जवाब नहीं दिया क्योंकि इस जगह गंगा जी का रुख कुछ घूम गया था और तरखा बहुत तेज था जिससे वह नाव सम्हालने में लगा था। यकायक सामने की तरफ आकाश में एक हरे रंग की चमक दिखलाई पड़ी, मानों आकाश बान छोड़ा गया हो। देखते ही रामू चौंक पड़ा और बोला, "देखो, शायद सरदार बुला रहे हैं।" मुकुन्द ने कहा, "ऐसा ही मालूम होता है, तुम भी एक बान छोड़ो।"

जवाब में रामू ने भी एक बान छोड़ा और थोड़ी देर बाद सामने से दो बान छूटते दिखाई पड़े। बोट की चाल और तेज की गई और थोड़ी ही देर बाद बीच गंगा में खड़े एक बड़े बजड़े की धुन्धली शकल दिखाई देने लगी। थोड़ी देर में बोट बजड़े के पास पहुंच गई और उसके साथ जा लगी। बजड़े पर बहुत से मल्लाह दिखाई पड़ रहे थे जिन्होंने बोट को रस्सों से बांध दिया और कुछ उस बोट पर भी चले गये, रामू और मुकुन्द बजड़े पर चढ़े और कुछ ही देर बाद भीतर बुला लिये गये।

यह बजड़ा जितना बड़ा, ऊंचा, लंबा और आरामदेह था उतना ही तेज जाने वाला भी मालूम होता था, और इस पर तीन पालों के लगने के मस्तूल दिखाई पड़ रहे थे। अगला हिस्सा इस प्रकार का था कि लगभग चालीस मल्लाह वहां बैठ कर खे सकते थे और वक्त पर मदद करने के लिये पीछे की तरफ पंखी और एक छोटा इन्जिन भी लगा हुआ था। इसके भीतर मल्लाहों के रहने की जगह के इलावा और कई कमरे थे जो भिन्न भिन्न काम में लाए जाते थे और इन्हीं में से एक में बिछे पलंग पर गाव तकिये के सहारे लेटे और सिरहाने के टेबुल पर रक्खे लंप की रोशनी में कुछ पढ़ते हुए एक नौजवान के सामने रामू और मुकुन्द पहुँचाए गये जो उसे सलाम कर अदब से खड़े हो गये।

थोड़ी देर बाद नौजवान ने इन लोगों की तरफ सिर उठा

कर देखा और तब कहा, "तुम लोग आ गये ?" मुकुन्द ने जवाब दिया, "जी हां, मगर.........

नौजवान०। मगर क्या ?

मुकुन्द०। बटुकचन्द्र का लड़का रास्ते में हाथ से जाता रहा !

नौजवान०। (चौंक कर) सो कैसे ?

मुकुन्द ने यह सुन रास्ते में जो कुछ हुआ था सब पूरा पूरा हाल कह सुनाया और अंत में यह भी कहा, "केमिल साहब ने थोड़ी देर तक हम लोगों का पीछा किया मगर फिर पीछे लौट गये।"

मुकुन्द की बात सुन नौजवान कुछ देर के लिये चिन्ता में पड़ गया। मुकुन्द और रामू धड़कते हुए कलेजे के साथ सोच रहे थे कि देखें अब उन्हें क्या सजा मिलती है मगर ऐसा न हुआ और थोड़ी देर बाद नौजवान ने कहा, "तुम लोगों से गलती तो बड़ी भारी हो गई कि उसी समय लौट कर लड़के को उठा न लिया पर खैर अब जो हो गया सो हो गया। जो कुछ सामान उस मकान से लाए हो उसे बजड़े पर पहुंचा दो और इसके बाद इसी समय उस मोटर को बीच गंगा में डुबा दो। बजड़े को हुक्म दो ऊपर की तरफ चले, घंटा भर दिन चढ़ने से पहिले चुनार पहुँच जाना चाहिये। "अब मैं सोता हूँ। रात को कोई मुझे तंग न करे।"

"जो हुक्म" कह दोनों आदमी सामने से हट गये। नौज-

वान के हुक्म की पूरी तामील की गई। मोटर बोट का सब सामान बजड़े पर पहुंचाया गया और तब वह डुबा दी गई। इसके बाद बजड़ा खुल गया और दो बड़ी पालों की सहायता से तेजी के साथ ऊपर की तरफ चढ़ने लगा। नौजवान कुछ देर तक खिड़की से चांदनी रात की घटा देखता रहा इसके बाद उसने लैंप बुझा दिया और सो गया।

(६)

दूसरे ही रोज शायद केमिल साहब के इशारे से ही यह बात सारे शहर में फैल गई कि गंगाजी में बहता हुआ एक लड़का पाया गया है जो बड़ा ही सुन्दर है और शायद किसी बहुत ही ऊंचे खानदान का है। कई लोग उस लड़के को देखने के लिये आने लगे और बहुतों ने उसे ले कर पालने की भी दर्खास्त की मगर केमिल साहब को विश्वास था कि इस लड़के के साथ किसी विचित्र घटना का कुछ संबंध अवश्य है अस्तु उन्होंने किसी को वह लड़का देना स्वीकार न किया। रोज़ को उस लड़के से बहुत मुहब्बत हो गई थी और वही उसे रखना चाहती थी। इधर केमिल साहब इस तरफ से भी बेफिक्र नहीं थे कि जो लोग इस तरह से उस लड़के को जल में छोड़ कर चले गये वे लोग कौन थे इसका पता लगावें। उन्होंने पुलीस और जासूसों की मदद से इसकी कुछ छानबीन की और कुछ पता भी लगाया जिसका हाल आगे चल कर मालूम होगा।

*"चोट पर चोट" नामक कहानी दे खिये।

घूमती फिरती यह खबर पुत्रशोक से व्याकुल राय-साहब बटुकचंद*के कानों में भी पहुंची कि केमिल साहब को कहीं से एक तीन चार बरस का बहुत सुन्दर लड़का मिला है। यह सुनते ही उनके मन में एक अजीब तरह की धड़कन पैदा हो गई और वे किसी तरह अपने को रोक न सके। उन्होंने उसी समय अपनी मोटर मंगवाई और चढ़ कर केमिल साहब के बंगले पर पहुंचे। इत्तफाक से रोज उस समय उस लड़के को लिये बंगले के सामने के छोटे नजरबाग में टहला रही थी। फाटक के अन्दर घुसते ही बटुकचन्द की निगाह उस लड़के पर पड़ी, अपने दिल के टुकड़े को उसी दम उन्होंने पहिचान लिया। वे झपट कर उसके पास पहुँचे और उसे उठा कर छाती से लगा लिया, वह लड़का भी "बाबू जी" कह कर उनके गले से चिपक गया।

रोज ताज्जुब से यह हाल देख रही थी। वह असल मामला तुरत समझ गई क्योंकि उसे रक्तमंडल द्वारा बटुकचंद के लड़के के छीने जाने का हाल मालूम था। वह दौड़ी हुई जा कर केमिल साहब को बुला लाई। केमिल साहब से बटुकचंद का पहिले का कुछ मामूली परिचय था। इस समय उन्होंने उनसे बातचीत कर जब निश्चय कर लिया कि यह लड़का उन्हीं का है तो बहुत प्रसन्नता प्रगट की और लड़का सही सलामत पा जाने पर उन्हें मुबारकबादी दी। बातचीत करते हुए वे उन्हें बंगले में ले आये और चाय लाने का हुक्म दिया।

सब कोई चाय पानी के साथ साथ हंसी खुशी की बातें कर रहे थे कि चपरासी ने ला कर दो लिफाफे टेबुल पर रख दिये। लालरंग के एक ही नापके दोनों लिफाफों में से एक पर केमिल साहब का नाम लिखा हुआ था और दूसरे पर बटुक-चंद का। केमिल साहबके पूछने पर चपरासी ने जवाब दिया कि लाल कपड़ा पहिने एक आदमी दोनों चीठियां दे गया है और कह गया है कि बहुत जरूरी हैं। केमिल ने यह सुन बटुकचंद की चीठी उनकी तरफ बढ़ा दी और अपनी ले कर लिफाफा खोला। एक लाल कागज निकला जिस पर लाल ही स्याही में यह लिखा हुआ था:—

"मिस्टर केमिल !

हम आपको सूचना देते हैं कि जो लड़का परसों आपको मिला है वह हमारा है और कल सुबह हम उसे लेने आवेंगे। अगर आप हमारी मर्जी के खिलाफ उसे किसी गैर के हवाले कर देंगे तो तकलीफ उठावेंगे। कल सुबह या तो उसे ले कर अपने फाटक पर तैयार हमें मिलिये या अपने किसी रिश्तेदार का वियोग सहने के लिये तैयार हो जाइये।"

इस चीठी के नीचे रक्तमंडल का मशहूर निशान—खून के दाग के बीच में चार उंगलियें, बना हुआ था।

चीठी पढ़ कर केमिल साहब चौंक गये। उसी समय उन्होंने बटुकचंद की तरफ निगाह उठाई तो देखा कि उनका चेहरा पीला पड़ गया है। उनके हाथ में भी लाल कागज देख वे

समझ गये कि उन्हें भी रक्तमंडल ने कोई संदेसा भेजा है। बिना कुछ कहे उन्होंने अपनी चीठी उनकी तरफ बढ़ा दी और उनकी आप लेकर पढ़ना शुरू किया। उनकी चीठी का मजमून यह था:—

बटुकचंद!

"हमारे आदमियों की गलती से यह लड़का हमारे हाथ से निकल गया मगर फिर भी इतना समझ रक्खो कि जबतक हमारा दो लाख रुपया हमें मिल न जायगा तुम इसे कदापि रख न सकोगे। अगर तुम इसे रखना चाहते हो तो कल रात तक दो लाख रुपये राजघाट के पुराने किले के उत्तर वाले कूंए में डाल दो वरना याद रक्खो कि तुम किसी तरह जीते नहीं बचोगे और तुम्हारे बाद यह लड़का भी जिसे तुम अपना कहते हो उसी के पास पहुंचा दिया जायगा जिसका नाम लेने की भी हिम्मत तुम्हारी नहीं होगी।

"कपास के फूल" की बात याद करो, और जो हम कहते हैं, बिना सोचे विचारे कर डालो, नहीं अच्छा न होगा।"

इस चीठी के नीचे भी रक्तमंडल का खूनी निशान बना हुआ था।

केमिल साहब और बटुकचंद एक दूसरे की तरफ कुछ देर तक एक टक देखते रहे। बटुकचंद की आंखों से भय और लाचारी प्रगट हो रही थी, केमिल साहब की आंखें क्रोध और आत्मविश्वास बता रही थीं। कुछ देर बाद बटुकचंद ने प्रश्न

की निगाह केमिल साहब पर डाली और अपने लड़के की तरफ देखा, केमिल ने लापरवाही के साथ गरदन हिलाई और कहा, "रायसाहब ! आप अपने लड़के को लेजा सकते हैं मगर मैं राय दूंगा कि इसकी और अपनी जानकी यातो खूब हिफाजत कीजिये और या फिर इन शैतानों को दो लाख का घूस देने को तैयार रहिये।"

बटुकचंद ने दीनता के साथ कहा, "आप जैसा हुक्म करें वैसा ही मैं करने को तैयार हूं। मैं कोई बहुत बड़ा अमीर आदमी नहीं। दो लाख रुपया कहां से पाऊंगा जो इन्हें दूंगा, मगर यह लड़का भी मेरे जिगर का टुकड़ा है, इसे भी किसी तरह छोड़ नहीं सकता।"

केमिल साहब सिर हिला कर बोले, "अगर मैं आपकी जगह होता तो अपनी जान दे देता मगर इस तरह दब के रुपया तो न देता !!"

बटुकचंद लचारी और उदासी से रुकते रुकते बोले, "यही तो मेरी भी राय है मगर......आप मेरी मदद करने को...... मगर......"

केमिल बोले, "मैं सब तरह से पूरी मदद करने को तैयार हूं। मैं तो आप को राय दूंगा कि कुछ दिनों के लिये इस लड़के को ले कर अपने किसी गांव या दूर के किसी शहर में चले जाइये, तब तक मैं इन शैतानों को ठीक करता हूं।

बटुक०। (खुश होकर) हां यह बात तो आपने ठीक कही

ऐसा ही करूंगा, मेरा लखनऊ में एक बहुत बड़ा गांव है अगर आप कहिये तो मैं वहीं चला जाऊं।

केमिल०। हां ऐसाही करें, वहां के पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट और कलेक्टर भी मेरे बहुत बड़े दोस्त हैं, मैं उनके नाम की चीठियें भी दे दूँगा और कई दूसरे उपाय भी बताऊंगा जिस से आप बहुत सुरक्षित रह कर बेफिक्री के साथ कुछ वक्त काट सकेंगे।

केमिल साहब और बटुकचन्द्र में धीरे धीरे कुछ बातें होने लगीं। आधे घंटे के बाद जब बातों का सिलसिला टूटा तो बटुकचंद उठ कर टेलीफोन के पास गये और चोंगा उठा अपने मकान पर फोन किया। उनके खास नौकर ने जवाब दिया जिससे वे बोले, "मुझे एक बहुत ही जरूरी काम से इसी समय लखनऊ के लिये रवाना होना है। मैं यहां से सीधा स्टेशन जा रहा हूं। तुम मेरा सूटकेस और सफर का जरूरी सामान ले जल्द वहीं मुझसे मिलो।"

केमिल और बटुकचंद में कुछ और बातें होती रहीं इसके बाद मिस्टर केमिल ने कुछ लिख कर दो चीठियें बटुकचंद को दीं और उनके बारे में कुछ समझा कर उन्हें बिदा किया। अपने प्यारे लड़के को लिये हुए बटुकचंद अपनी मोटर में जा बैठे और ड्राइवर को स्टेशन चलने का हुक्म दिया। मगर उनका दिल धड़क रहा था और वे डरे हुओं की तरह चारों तरफ देख रहे थे कि कहीं रक्तमंडल का कोई आदमी उन्हें भागते देख तो नहीं रहा है।

यकायक उनकी निगाह मोटरकी छत की तरफ चली गई। उन्होंने देखा कि कपास का एक फूल एक लाल तागे से बंधा छत से लटक रहा है। न जाने इस सुन्दर फूल को देख क्यों वे कांप गये, उनके मुंह से एक हलकी चीख निकल गई और उन्होंने दोनों हाथों से अपने प्यारे लड़के को अपनी छाती से दबा लिया।

\+ + + × × +

दूसरा दिन केमिल साहब को तरह तरह का इन्तजाम करने में बीत गया, कहना नहीं होगा कि रक्तमंडल की चीठी के अनुसार वे सुबह फाटक पर बटुकचंद के लड़के को लिये मौजूद नहीं थे। उस चीठी की धमकी को उन्होंने एक दम अग्राह्य किया था। उस दिन आधी रात गये तक वह पुलिस के अफसरों और जासूसों को लिये न जाने क्या क्या सलाह मशविरा करते रहे।

दूसरे दिन बहुत सवेरे ही उनके नौकर ने उन्हें जगाया और जब वे आंख मलते हुए उठ बैठे तो एक तार और एक चीठी उन्हें दी। चौंक कर धड़कते हुए दिल से उन्होंने तार खोला—यह लिखा था:—

"बटुकचंद को रात को कोई जान से मार गया। उसका लड़का गायब है!!"

तार छूट कर उनके हाथ से गिर गया और वे यह भी देखने लायक न रहे कि उसका देने वाला कौन है। कांपते

हाथों से उन्होंने दूसरा लिफाफा खोला, लाल कागज पर लाल स्याही से सिर्फ इतना लिखा हुआ था:—

"आखिर अपनी बेवकूफी, झूठे घमंड और जिद्द से तुमने बटुकचंद की जान ली। अब अपनी जान बचाने की फिक्र करो। तुम्हारी लड़की को ले कर हम लोग जाते हैं।"

इसके नीचे रक्तमंडल का खूनी निशान था जिसे देखते ही मिस्टर केमिल चौंक कर उठ खड़े हुए और बोले, "रोज! रोज!! रोज कहां है? देखो और उसे अभी मेरे पास लाओ।"

मगर रोज का कहां पता लगना था! नौकर चाकर बंगले के कमरे, कोठरी और बाग का पत्ता पत्ता छान आये मगर वह कहीं न थी।

केमिल साहब ने सिर पर जोर से हाथ मारा और अपनी खाट पर गिर गये।

॥ पहिला भाग समाप्त ॥

राजस्थान का इतिहास

राजपूतों के संबंध की ऐतिहासिक पुस्तकों में टाड साहब के लिखे "ऐनल्स आफ राजस्थान" का जितना मान है उतना और किसी पुस्तक का नहीं, कारण यह कि जहां और लेखकों ने बिना जांचे अपने मन की अप्रामाणिक बातें लिख दी हैं वहां टाड साहब ने उस बात को खोज कर, उसका प्रमाण ढूंढ कर और उसके संबंध की सब बातें विचार कर तब उसे लिखा है। यह उन्हीं की बनाई अंग्रेजी पुस्तक का अनुवाद है। इसमें मेवाड़ तथा संलग्न राजपूत जातियों का इतिहास बड़ी जांच और खोज के साथ लिखा गया है। राजपूत रियासतों का राजनैतिक प्रबन्ध कैसा था, उनकी आर्थिक अवस्था क्या थी, भीतरी और बाहरी शत्रुओं से लड़ने में वे किस तरह का प्रबंध करते थे, गृह प्रबंध कैसा था आदि बातों को यदि आप यथार्थ रूप में पूरी पूरी तौर से जानना चाहते १ तो इस पुस्तक को पढ़ें, ५ भाग का मूल्य— २॥)

महेश्वर विलास

कवि लछिराम जी काव्य के अच्छे ज्ञाता हो गये हैं, उन्हीं का बनाया यह ग्रन्थ रत्न है। इसमें नव रसों तथा नायिका भेद आदि का सविस्तर वर्णन है तथा उनके उदाहरण स्वरूप उत्तम उत्तम कविताऐं भी दी गई हैं। जो लोग काव्य के विषय में पूरी जानकारी चाहते तथा उनके भेदों आदि से परिचित होना चाहते हैं वे इस पुस्तक को एक बार अवश्य देखें। प्रत्येक काव्य प्रेमी के लिये यह पुस्तक आवश्यक है और इसकी एक प्रति उसे अवश्य अपने पास रखनी चाहिये। काव्य के विषय की बातें बतलाने वाली ऐसी और कोई पुस्तक न होगी। यदि आप काव्य सागर में गोता लगाना चाहते हैं तो इस ग्रंथ रत्न को देखें— १)

कुसुमकुमारी

कुछ लोगों का कहना है कि बिना ऐयारी और तिलिस्मी हाल के उपन्यास रोचक हो ही नहीं सकता, लेकिन यह ख्याल गलत है और इसका सबूत है यह उपन्यास । यह बा० देवकीनंदन खत्री रचित है इसी से आप समझ सकते हैं कि यह कितना रोचक होगा । फिर भी हम अपनी ओर से इतना अवश्य कहेंगे कि यह रोचक से रोचक ऐयारी और तिलिस्मी उपन्यासों से बाजी मार सकता है इसका घटनाक्रम भी इतना अनूठा है कि पुस्तक समाप्त किये बिना आप उसे हाथ से रख न सकेंगे । इसमें मित्र की धोखेबाजी, कुमार का सच्चा प्रेम, वीर की वीरता, स्वार्थी की दगा, दर्शक का नायकपन, डाकुओं की भयानक लीला, सभी दिखाया गया है पर अन्त में ज्योतिष विद्या का ऐसा चमत्कार दिखाया है कि आप दङ्ग के दङ्ग हो जायेंगे । मूल्य— १)

चंद्रभागा

यों तो ऐयारी और तिलिस्मी उपन्यास रोचक होते ही हैं, पर अगर उसमें जादूगरी भी मिल जाय तो सोने में सुगंध का हाल होता है । इस पुस्तक में विचित्र तिलिस्म का हाल है, अनूठी ऐयारियों का वर्णन है और बीच बीच में ऐसी ऐसी जादूगरी की करामातें दिखाई गई हैं कि पुस्तक आरंभ करने पर आप मन्त्र मुग्ध की तरह इसे पढ़ते चले जायेंगे और बिना समाप्त किये रुक न सकेंगे । बहुत दिनों से यह पुस्तक अप्राप्य थी, अब मोटे एन्टीक कागज पर रंग बिरंगी कई तस्वीरें दे कर छापी गई है । यदि आप अद्भुत घटना-पूर्ण उपन्यासों के प्रेमी हैं तो इसे अभी मंगवा लें और पढ़के अपना दिल खुश करें । बड़े बड़े जादूगरों, दैत्यों और राक्षसों के आपस में युद्ध करने का हाल पढ़ आप को आश्चर्य होगा और आप अवश्य प्रसन्न होंगे । मूल्य— ॥)

किले की रानी

यदि आप उपन्यासों के शौकीन हैं तो आप ने प्रसिद्ध औपन्यासिक 'रेनाल्ड साहब' के अनूठे अंग्रेजी उपन्यास "दि यंग फिशरमैन" का नाम अवश्य सुना होगा। यह 'किले की रानी' उसी पुस्तक का अनुवाद है। इस में एक शराबी रईस का हाल लिखा है जो अपने रुपयों के जोर से एक सुन्दरी बालिका से विवाह करना चाहता था, पर वह बालिका उसे न चाह एक गरीब मछुये से प्रेम करती थी। उस शराबी रईस की दुर्दशा का हाल पढ़ हंसी आती है और बालिका का सरल सच्चा प्रेम पढ़ कर हृदय गद्गद् हो जाता है। अन्त में कई रोचक और विचित्र घटनाओं के बाद मछुये को एक डूबा हुआ बड़ा भारी खजाना मिल गया और उसकी मदद से उस शराबी रईस को हरा वह मछुआ अपने प्रेमिका से जा मिला और एक बड़े भारी किले का राजा हुआ। मूल्य— ।।।)

साहसी डाकू

हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध डाकूराज तांतिया भील का नाम प्रायः सभी जानते होंगे। जिस प्रकार यहां तांतिया भील हो गया है उसी प्रकार विलायत में डिक टर्पिन नाम का एक डाकू हो गया है। यह इतना वीर और निर्भय था कि दिन दहाड़े पुलिस के अफसरों को लूट लिया करता था, खुले आम अमीरों के यहां डाके डालता था और तिस पर भी पुलिस उसका कुछ कर नहीं सकती थी। यह इतना उद्दंड था कि बड़े बड़े चालाक जासूसों को इससे हार माननी पड़ी और देश भर की पुलिस एक साथ यत्न करने पर भी इसे न पकड़ सकी। अन्त में एक ऊंचे ओहदे के पुलिस अफसर ने इसे पकड़ने का बीड़ा उठाया। इस कोशिश में उसे कैसी कैसी जिल्लतें उठानी पड़ीं, कैसी आफतों में फंसना पड़ा, उसकी कैसी कैसी दुर्दशा हुई यह पढ़ के हंसी आती है १)

बलिदान

मनुष्य कितना नीच हो सकता है और पतिव्रता स्त्री अपने अधम, दुर्व्यसनी तथा पतित पति के लिये भी अपने प्राणों को किस प्रकार न्योछावर कर सकती है यही इस पुस्तक में दिखाया गया है। दुष्ट साधु महंत, रंगे कपड़ों में छिपे पतित, उनके लंपट चेले जो दुनिया में अपने गुरुओं से भी बढ़ चढ़ के होते हैं, वे सब किस तरह व्यभिचार की सृष्टि करते हैं, किस तरह स्त्रियों को चरित्र-हीन बना के अपनी काम पिपासा शान्त करना चाहते हैं, किस तरह धूर्तता कर के, मीठी बातें बोल के, लोभ दिखा के पतिव्रताओं को वश में करने की चेष्टा करते हैं और सतियें, स्वच्छहृदया, पुण्याचारिणी कुल-ललनायें किस तरह उनके फंदे से बचती हैं यदि यह सब बातें आप देखना चाहें तो इस पुस्तक को पढ़ें। यह जितनी रोचक है उतनी ही शिक्षाप्रद भी है। मूल्य— १)

गुप्तगोदना

बा० देवकीनंदन खत्री रचित प्रसिद्ध उपन्यास। इसमें कुटिल यवनराज औरंगजेब की चालें और उस समय के दिल्ली राज्य की घटनायें दिखाई गई हैं। उस समय मुसलमान दर्बार में कैसे कैसे गुप्त षड्यन्त्र चला करते थे, औरंगजेब और उसके भाइयों में दिल्ली के तख्त के लिये कैसी कैसी चालें हुईं, मुसलमान महल की उस समय कैसी अवस्था थी, बेगमें पहरेदारों से सुरक्षित, संतरियों से घिरे हुये, खोजों से भरे महल में भी कैसे मजे में अपनी कार्रवाइयें कर डालती थीं, आदि बातें आपको इस उपन्यास के पढ़ने से भली भांति मालूम हो जायंगी। इसका घटनाक्रम बड़ा ही रोचक है और चरित्र चित्रण भी बड़ा ही उत्तम है। यदि आप रोचकता के साथ ही साथ मुसलमानी जमाने के बारे में भी जानकारी चाहते हों तो इस उपन्यास को पढ़ें। आपको यह अवश्य पसन्द आवेगा और आप पढ़ के प्रसन्न होंगे। मूल्य— २)

सुरसुंदरी

जिस समय यवन गण निरंतर उदयपुर को अधिकार में लाने की चेष्टा में लग हुये थे और बहादुर राजपूत पुत्र, स्त्री और प्राणों की आहुति दे कर अपनी जन्मभूमि को बचाने की चेष्टा कर रहे थे उसी समय की ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर यह उपन्यास लिखा गया है। इसमें आपको सभी बातें देखने को मिलेंगी। वीर राजपूत योद्धा प्राणों का कितना मूल्य समझते हैं और किस तरह मरते हैं, वीरता किसे कहते हैं और सच्ची वीरता क्या है, राजपूत-कुमारियों में प्रेम की परिभाषा क्या थी और वे उसे किस तरह पालन करती थीं, निःस्वार्थ प्रेम कैसा होता है और उस में कितना हृदय बल, गांभीर्य आदि आवश्यक होता है, ये सभी बातें आप इस पुस्तक को पढ़ने से जान जायंगे। इसमें एक राजपूत युवती का अगाढ़ प्रेम और स्वार्थ शून्य स्नेह देख कर आप का हृदय गद्गद हो जायगा और अन्त में आप के मुंह से वाह वाह निकल पड़ेगा। रंगीन चित्रों सहित, मूल्य— १)

माहेश्वर विनोद

इस ग्रंथ में भांति भांति के मनोहर छन्दों में कृष्ण जी की लीला का वर्णन है। रुक्मिणी हरण, मथुरा गमन वियोग लीला आदि सभी प्रधान प्रधान बातें आ गई हैं। इन सब के बाद श्रीरामचन्द्र जी की वन गमन लीला का वर्णन है। सभी छन्द बड़ी ललित भाषा में लिखे गये हैं और ऐसे भावमग्न हैं कि पढ़ कर दृश्य नेत्रों के सामने घूम जाता है। सभी ईश्वर भक्तों के देखने योग्य है

मूल्य १)

मोतियों का खजाना

जैसे अंग्रेज औपन्यासिकों में 'रेनाल्ड साहब' का नाम प्रसिद्ध है वैसे ही फ्रांसीसी लेखकों में "एलेकजेण्डर ड्यूमास" मशहूर होगये हैं। दोनों में कौन बढ़ के हैं इसके विषय में मतभेद है पर फ्रांसीसी लेखक के भक्तों का कहना है कि "एलेक्जेण्डर ड्यूमस" अपनी लिखी पुस्तकों में जैसा अद्भुत घटना क्रम दिखाते हैं वैसा 'रेनाल्ड' की किताबों में नहीं पाया जाता। प्रस्तुत पुस्तक "एलेक्जेण्डर ड्यूमस" के सर्वोत्तम उपन्यास "दि कौंट आफ मान्ट क्रिस्टो" का अनुवाद है। प्रायः सभी भाषाओं में इस उपन्यास-रत्न का अनुवाद हो चुका था पर हिन्दी में अभी तक यह पुस्तक प्रकाशित न हुई थी। हिन्दी भाषा-भाषी भी इस रत्न से वंचित न रहें यह सोच के हमने इसका हिंदी अनुवाद प्रकाशित किया है जो चौदह बड़े साइज के भागों में समाप्त हुआ है। यह पुस्तक कैसी है इस के विषय में अधिक कहना व्यर्थ है पर इतना हम जरूर कहेंगे कि मानुषिक भावों का ऐसा अच्छा खाका, घटना-क्रम का ऐसा अद्भुत सिलसिला, चरित्र चित्रण का ऐसा सुन्दर और सफल प्रयत्न किसी पुस्तक में आप न पायेंगे। पुस्तक का प्लाट बड़ा ही मनमोहक है और लेखनशैली इतनी अच्छी है कि आप जितना ही पढ़ें, और पढ़ने की आप की इच्छा बनी ही रहेगी। मूल भाषा में इस उपन्यास के सैकड़ों संस्करण हो चुके हैं और हिन्दी प्रेमियों ने भी इसका अच्छा आदर किया है। यदि आप अच्छे उपन्यासों का कुछ भी शौक रखते हैं तो इस को पढ़ें, कम से कम एक ही दो हिस्सा मंगवा कर देखें। हमें विश्वास है कि शुरू कर के इस पुस्तक को आप फिर बिना पढ़े छोड़ न सकेंगे। १४ भाग एक साथ लेने से मूल्य ६), अलग अलग लेने से प्रति भाग— ॥)

नरेन्द्रमोहिनी

बा० देवकीनंदन जी खत्री कृत। कुछ लोगों को दुःखांत उपन्यास पसंद होता है और कुछ सुखान्त के प्रेमी होते हैं पर ऐसा होना बड़ाही कठिन है कि एक ही उपन्यास दुःखान्त और सुखान्त दोनों के प्रेमियों को सुख दे। इस पुस्तक की यही खूबी है कि यह दोनों प्रकार के लोगों को आनन्द देगी। इसमें चरित्र चित्रण बड़ा ही अनूठा हुआ है, पात्रों का चरित्र ऐसी सुन्दरता से खींचा गया है कि भावों का विचित्र उतार चढ़ाव उनमें बड़ी खूबी से दिखाई देता है। कुंवर नरेन्द्रसिंह की बहादुरी, रंभा का सच्चा प्रेम जगजीतसिंह का भ्रातृस्नेह, मोहिनी और गुलाब की कुटिलता, उनका धोखा दे के नरेन्द्रसिंह को जहर खिला देना और अन्त में विचित्र रीति से संखिया खा कर उनका अच्छा होना, बहादुरसिंह भंगेड़ी की मसखरी बातें, आदि ऐसे उत्तम रूप से लिखी गई हैं कि पढ़ कर आप अवश्य प्रसन्न होंगे। नया सचित्र संस्करण
मूल्य— १॥)

कुसुमलता

आज कल सामाजिक और ऐतिहासिक उपन्यासों की धूम है, पर यदि सच पूछा जाय तो ये उतने रोचक नहीं होते जितने ऐयारी और तिलिस्मी उपन्यास होते हैं। इस पुस्तक में आले दर्जे की ऐयारी और बड़े ही अनूठे तिलिस्म का वर्णन है और ऐसा अद्भुत घटना-क्रम है कि पढ़ने वाले को ताज्जुब पर ताज्जुब होता जाता है और एक घटना का भेद खुलता नहीं कि दूसरी विचित्र घटना फिर मन को अचंभे में डाल देती है। इस ऐयारी और तिलिस्मी उपन्यास की लोगों ने बड़ी ही प्रशंसा की है। यदि आप को इस किस्म के उपन्यासों का शौक हो तो इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि इसे पढ़ के आप अवश्य प्रसन्न होंगे।
मूल्य २)

किसान की बेटी

उपन्यास क्षेत्र में 'रेनाल्ड्स साहब' का नाम खूब अच्छी तरह प्रसिद्ध है। यह कहना अनुचित न होगा कि घटना वैचित्र्य और चरित्र चित्रण में उनका मुकाबला अब तक कोई औपन्यासिक नहीं कर सका है। यह 'किसान की बेटी' उनके बनाये एक प्रसिद्ध उपन्यास 'मेरी मिडिल्टन' का अनुवाद है। इसमें एक सरल हृदया बालिका का ऐसा अच्छा चरित्र खींचा गया है और साथ ही साथ बदमाशों की बदमाशी, जालियों का जाल और लंपटों की विचित्र लीलायें ऐसी अच्छी तरह दिखाई गई हैं कि आप पढ़ कर प्रसन्न हो जायंगे। इस पुस्तक को पढ़ने वाला कभी किसी के धोखे में न पड़ेगा और दिलचस्पी के साथ ही साथ उसे शिक्षा भी मिलेगी। मूल्य— १।)

स्वर्णलता

सुन्दर सोने का घर कलहकारिणी स्त्रियों के कारण किस तरह मट्टी हो जाता है, कर्कशा स्त्रियें भरी पूरी गृहस्थी को किस तरह चौपट कर देती हैं, स्त्री के वचन बाण किस तरह शान्त घर में द्वेष का बीज बोय देते हैं और भाई भाई किस तरह स्त्रियों की बातों में पड़ स्नेह, ममता, दया, सौहार्द्र से शून्य हो एक दूसरे की जान के प्यासे हो जाते हैं यह इस उपन्यास के पढ़ने वाले भली भाँति जान जायंगे। यही नहीं, सुशीला और पतिव्रता स्त्रियें उजड़े घर को भी किस तरह बसा देती हैं यह भी आप इस पुस्तक के पढ़ने से जान सकेंगे। आज कल हमारे समाज की दशा बड़ी शोचनीय हो रही है, घर घर कलह, अशान्ति, द्वेष फैला हुआ है, ऐसे समय में यह पुस्तक आप स्वयं पढ़िये और अपनी कुल ललनाओं को भी पढ़ाइये। मूल्य— १)

रामरसायन

कवि पद्माकर कृत यह ग्रंथरत्न एक अनूठी वस्तु है जो आज तक हिन्दी भाषा में कहीं नहीं छपा। कवि गुरु वाल्मीकि जी ने जिस रामायण की रचना की है वह जगत में पूज्य और प्रसिद्ध है परन्तु अभी तक उसका कोई उत्तम हिन्दी अनुवाद उपलब्ध नहीं है इस ग्रंथ के द्वारा कविश्रेष्ठ पद्माकर ने इस कमी को बड़ी खूबी से दूर कर दिया है। अर्थात् उन्होंने वाल्मीकि रामायण का केवल अनुवाद ही नहीं किया है बल्कि उसका ललित पद्यमय अनुवाद किया है। एक तो वाल्मीकि रामायण स्वयं ही ग्रंथों में रत्न और जगत् प्रसिद्ध है उस पर यह हिन्दी के सर्व पूज्य कवि द्वारा अनुवाद, सोने में सुगन्ध का काम हो गया है। जो लोग रामचरित्र के भक्त हैं और साथ ही साथ पद्माकर की काव्य सुधा भी पान किया चाहते हैं वे इसे अवश्य पढ़ें। यह एक पंथ दो काज है। मूल्य बालकांड १) अयोध्या कांड १) आरण्य कांड— ॥।)

भूतों का मकान

इसमें एक विचित्र मकान का हाल लिखा गया है जिसमें बड़ी बड़ी अद्भुत घटनायें हुआ करती थीं। इसके अतिरिक्त धन की लोभ मनुष्य से कैसे कैसे काम करवाता है, मित्र लालच में पड़ के मित्र के साथ कैसा वर्ताव करता है, सच्चा प्रेम करने वाली बालिका किस तरह सच्चे हृदय से अपना तन मन धन अपने प्रेमी को सौंप देती है और बड़े बड़े प्रलोभन भी अटल प्रेम धारा को किस तरह रोकने में असमर्थ होते हैं ये सब बातें आपको इस पुस्तक में देखने को मिलेंगी। पुस्तक का घटनाक्रम अच्छा तथा पात्रों का चरित्र चित्रण उत्तम है। कई रंगीन और सादे चित्रों सहित नवीन संस्करण का मूल्य केवल ॥)

समस्यापूर्ति

इस पुस्तक में बहुत से भिन्न भिन्न कविसभाओं और नवीन कवियों द्वारा रचित कवित्तों का समस्यापूर्ति के रूप में संग्रह किया गया है। आज कल कई तरह की नवीन ढङ्ग की कवितायें देखने में आती हैं जो सामयिक तो होती हैं पर उनमें वह ओज, वह लालित्य, वह अद्भुत शब्दों का चुनाव, वह माधुर्य और वह भाव पूर्णता नहीं रहती जो प्राचीन कविताओं में देखने में आती है यद्यपि नई रोशनी के युवक नवीन ढंग और शैली की कविता ही पसन्द करते हैं पर अब भी प्राचीन कविताओं का कम आदर नहीं है। आज कविता की ओर से लोगों की रुचि कम होती जा रही है, ऐसे समय में प्रत्येक का कर्त्तव्य है कि ऐसी पुस्तक की एक प्रति अपने पास रक्खे। इससे हजारों अनूठी कविताओं का ललित संग्रह तो आप के पास रहेहीगा इसके अतिरिक्त पुराने कवियों की लुप्त-प्राय कीर्ति को भी एक आश्रय मिलेगा। ४ भाग : प्रत्येक का मूल्य— |||,

महेश्वर वाटिका

डा० महेश्वरवक्स सिंह कृत इस ग्रंथ में व्रज निकुञ्ज विहारी भक्तभय हारी कंसारि श्रीकृष्णचन्द्र जी की लीला का वर्णन काव्य में किया गया है। कंस जन्म से ले कर भगवान की बाल लीला, गोकुल क्रीड़ा, पूतना, अघासुर, धेनुक आदि वध, फिर काली मर्दन, गोवर्धन धारण, इन्द्रमद भंजन, गोपी विरह वर्णन, मथुरा गमन, कंस वध, रुक्मिणी हरण, शिशुपाल वध, आदि वर्णन करते हुए अंत में कुरुक्षेत्र युद्ध, सुभद्रा विवाह, द्वारिका विहार, आदि का वर्णन किया है। यह पुस्तक प्रत्येक कृष्ण भक्त के देखने योग्य है। छन्द ऐसे ललित पद्यों में लिखे गये हैं कि पढ़ कर उस समय के दृश्य, आँखें के आगे घूम जाते हैं। बड़े साइज के ४१४ पृष्ठों की बड़ी पुस्तक का मूल्य केवल— १।।)

कथासरित—सागर

कथा सरित्सागर संस्कृत भाषा का प्रसिद्ध ग्रंथ है। इसमें प्रेम और भावपूर्ण हजारों ही कहानियां हैं। बड़े ही परिश्रम और व्यय से हमने इस विशाल ग्रन्थ का सरल हिन्दी अनुवाद प्रकाशित कराया है। यह ग्रंथ हिन्दी अलिफलैला कहा जा सकता है, बल्कि यह उससे भी बढ़ कर है क्योंकि इसमें अश्लीलता की गंध भी नहीं और सभी कोई स्त्री पुरुष या बच्चे इसे बिना संकोच के पढ़ सकते हैं। इसमें पांच सौ से अधिक किस्से हैं जिन में एक से एक अद्भुत कहानियां, विचित्र से विचित्र रहस्य, जादूगरों की जादूगरी, धूर्तों की धूर्तता, कपटियों का कपट, योगियों का योग, सती का सतीत्व, प्रेमी का प्रेम और तेजस्वी का तेज दिखाया गया है जिन्हें पढ़ कर आप एक दम मुग्ध हो जायेंगे। बड़े २ साइज़ सौ से अधिक पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल ८) चांदी नहीं के बराबर था फिर भी केवल थोड़े समय के लिये हमने इसको और भी घटा कर केवल ६) कर दिया है। शीघ्रता कीजिये और अभी इस पुस्तक की एक प्रति मंगा कर पढ़िये। देर होने से मूल्य बढ़ जायगा और फिर आपको पछताना पड़ेगा यह एक ही पुस्तक आपके लिये महीनों पढ़ने का मसाला होगी। मूल्य— ६)

काजल की कोठरी

यह बाबू देवकीनन्दन खत्री रचित प्रसिद्ध उपन्यास है। रंडियों और उनके आशिकों का जैसा सच्चा खाका इस उपन्यास में उतारा गया है वैसा और किसी जगह आपको नहीं मिलेगा। इसे पढ़ने से आप को यह भी मालूम होगा कि किस तरह धूर्त और होशियार लोग रंडियों के भी कान काटते हैं और उन्हें धोखा दे अपना काम चलाते हैं। मूल्य ।)

अज्ञातवास

सुप्रसिद्ध नाट्यकार बा० आनन्द प्रसाद कपूर रचित। अगर आप उत्तम श्रेणी के नाटकों के शौकीन हैं तो आप बा० आनन्द-प्रसाद कपूर से अवश्य ही सुपरिचित होंगे। उन्हीं ख्यातनामा नाट्यकार का लिखा यह नवीन नाटक अभी अभी छप कर प्रकाशित हुआ है। अगर आप अपने पूर्वजों की वीरता, क्षत्रियों का आत्म-गौरव और वीर क्षत्राणियों के तेज का हाल पढ़ना चाहते हों, अगर आप केवल 'तपबल' से बड़े बड़े पापियों का नाश देखना चाहते हों, अगर आप ब्रह्मतेज का प्रताप देखना चाहते हों, यदि आप सतीत्व का बल देखना चाहते हों, यदि आप आर्य नारि का गौरव देखना चाहते हों और यदि आप छोटे छोटे क्षत्रिय बालकों की वीरता देख मुग्ध होना चाहते हों तो इस नवीन नाटक को अवश्य पढ़िये। बहुत ही सुन्दरता से कई रंगीन और सादे चित्रों सहित, मोटे कागज पर बहुवर्णी मुख पृष्ठ सहित छापा गया है। मूल्य १)

अमला वृत्तान्त माला

कचहरी के अमलाओं को यदि कलियुग के दरबारी कहा जाय तो उचित होगा। वर्त्तमान समय की कचहरियों की तरफ से लोगों का विश्वास हटाने और उन्हें बदनाम करने का पूरा श्रेय इन्हीं को प्राप्त है। ये अमले ऐसी धूर्तता, चालाकी और बेईमानी से लोगों से रुपया मूसते हैं और गरीबों के साथ भी ऐसी संगदिली से पेश आते हैं कि जिसका बयान नहीं हो सकता। इस पुस्तक में इन अमलाओं की पोल खूब अच्छी तरह खोली गई है और बताया गया है कि इनकी चालाकी का ढंग क्या है, ये धूर्तता की चालें कैसे चलते हैं, और इनके बेईमानी करने के तरीके क्या क्या हैं, पुस्तक उपन्यास के रूप में लिखी गई है इससे खूब रोचक है और साथ ही शिक्षाप्रद भी है। मूल्य— ।।।)

मधुमालती

एक बहुत ही रोचक भावपूर्ण उपन्यास, इस पुस्तक का घटना क्रम बड़ा ही विचित्र है। इसमें एक वेश्या का चरित्र दिखाया गया है। कैसे वह पहिले वेश्या थी, कैसे एक चरित्रभ्रष्ट युवक ने अपनी सती साध्वी स्त्री को त्याग उस वेश्या के साथ अपनी जायदाद लिख दी, कैसे उस वेश्या को पीछे पश्चात्ताप हुआ और अन्त में उसने अपनी निकृष्ट वृत्ति को त्याग कैसे कैसे उत्तम कार्य किये यह पढ़ आप अवश्य प्रसन्न होंगे। इसके अतिरिक्त जीवन का वास्तविक दृश्य, डाकुओं की बदमाशी, भिखारियों का नीचों को उत्तम पथ पर लाने का उद्योग और उनका फल आदि बातें पढ़ कर आप अवश्य प्रसन्न होंगे। पुस्तक में पात्रों का चरित्र चित्रण बहुत ही उत्तम हुआ है और यह रोचक होने के साथ ही शिक्षाप्रद भी है। यदि आप उत्तम उपन्यासों के वास्तविक शौकीन हैं तो इसको अवश्य पढ़ें। मूल्य— १॥)

भयानक भ्रमण

एक अंग्रेज अफ्रिका के भयानक जंगलों में जा कर गायब हो गया था। उसे खोजने के लिये उसके कई दोस्त एक बड़े भारी गुब्बारे पर बैठ कर चले। रास्ते में उन पर बड़ी बड़ी आफतें आईं आदमी को समूचा निगल जाने वाले दैत्य मिले, सिंह को लातें मारने वाले राक्षस मिले, नरमुंडों की माला पहिनने वाले जंगली मिले, बड़े बड़े तूफान आये पर उन्होंने हिम्मत न छोड़ी। कई बार तो वे ऐसी हालत में पड़े कि उन्हें अपने मरने का निश्चय हो गया, पर फिर भी ईश्वर ने उनकी रक्षा की और अन्त में अपनी धीरता वीरता और बुद्धि से विघ्न बाधाओं को पार कर वे अपने खोये हुये दोस्त के पास पहुंच गये और बड़ी कारीगरी से उसे छुड़ा लाये। मूल्य— १॥)

स्त्री चरित्र संग्रह

इस पुस्तक में भारतवर्ष की कई सौ प्राचीन, सती, पतिव्रत स्त्रियों का जीवनचरित्र दिया हुआ है। इसे पढ़ने से मालूम होगा कि पहिले समय में हमारी स्त्रियें कैसी वीर हुआ करती थीं, कैसी दृढ़ प्रतिज्ञ, सत्यनिष्ठ, धर्माचारिणी और बुद्धिमती होती थीं आपत्ति काल में उनकी बुद्धि कैसी स्थिर रहती थी और घोर से घोर विपद्काल में भी वे किस तरह अपने जीवन का मोह तक त्याग कर धर्म की रक्षा करती थीं। आजकल स्त्रियों में शिक्षा का अभाव है परन्तु अंगरेजी पढ़ाने की अपेक्षा उन्हें अपने धर्म की शिक्षा देना अपनी बीती मर्यादा का स्मरण कराना, अपने प्राचीन गौरव की बातें बताना और उसके विषय में उन्हें समझाना अधिक अच्छा होगा। इस पुस्तक को आप स्वयं पढ़िये और अपनी कुल ललनाओं को भी पढ़ाइये। मूल्य बड़े साइज के दो भागों का केवल— ॥)

काव्यनिर्णय

कविवर भिखारीदास जी एक प्राचीन कवि हुये हैं जिनके बनाये छन्दार्णव, शृङ्गार निर्णय आदि काव्यग्रंथ प्रसिद्ध और प्रमाणिक हैं। उन्हीं का बनाया हुआ यह काव्यनिर्णय है। इस पुस्तक में काव्य का समस्त वर्णन आ गया है। काव्य किसे कहते हैं, उसमें क्या क्या होना चाहिये, उसकी भाषा कैसी होनी चाहिये, उसके गुण दोष क्या क्या हैं लक्षण, अलंकार और भाव [illegible] तत्व क्या है और कैसे बनता है, सारांश यह कि काव्य के विषय की कोई भी बात इससे छूटी नहीं है। यदि आप काव्य के विषय में पूरी जानकारी चाहते हैं और यह नहीं चाहते कि बहुत परिश्रम कर के पचासों किताबें पढ़ी जांय तो केवल यह पुस्तक आरंभ से अन्त तक ध्यान से पढ़ जांय। आपको इस विषय की सब बातें मालूम हो जायंगी। मूल्य १)

मायावती

तीन वीर पुरुष घर से उदास हो यात्रा कर के अपना मन बह लाने के लिये बाहर निकले हिमालय पर्वत श्रेणी को पार करके जंगल में प्रवेश करने और फिर बहुत दूर उत्तर की ओर चल जाने पर ये एक विचित्र अग्नि और सूर्यपूजकों के देश में पहुंचे। रास्ते में बड़ी बड़ी घटनायें हुईं, डाकुओं से लड़ाई, आग का फौआरा ज्वालामुखी पहाड़, विचित्र जन्तुओं से युद्ध, आदि कई आफतों से पार होने पर जब वे उस देश में पहुँचे तो वहां के विचित्र पुरुषों, अद्भुत रीति रिवाज और आश्चर्य जनक बातों को देख ये घबड़ा गये। वहां भी इन्हें कई चक्करों में फंसना पड़ा स्त्रियों में गृहयुद्ध, सूर्यपूजकों का अन्ध विश्वास, बलिदान की प्रथा आदि से इन्हें बड़ी तकलीफ उठानी पड़ी। अन्त में सब आफतों को पार कर ये उस देश में राजा हो गये। बड़ी रोचक पुस्तक है मूल्य-- २।

अर्थ का अनर्थ

आज कल इटली स्वतंत्र है और अच्छे सभ्य राष्ट्रों में गिना जाता है। पर दो ही तीन सौ वर्ष पहिले उसकी दूसरी ही अवस्था थी। उस समय पादड़ियों का प्राधान्य था, उनका दबदबा सब पर फैला हुआ था, धर्म के नाम पर बड़े २ अत्याचार होते थे, राजा रानियें और राजकुमारियें बिलासिनी और चरित्रहीना थीं प्रजा मूर्ख थी और डाकू इतने प्रबल थे कि वे मौका पाकर राजा को भी लूट लिया करते थे। इस उपन्यास में इटली की उसी समय की अवस्था का हाल है। इसमें धर्म के नाम पर पाद्-ड़ियों की करतूत, राजमहलों के गुप्त षड्यंत्र, राजकुमारियों की प्रेम लीला, और डाकुओं के जाल का रोचक हाल ऐसी सुन्दरता और अनूठे पन से लिखा गया है कि किताब शुरू करने पर फिर छोड़ने का मन नहीं करेगा। मूल्य -- १॥=)

बा० दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा लिखित।

मिलने का पता:—लहरी बुकडिपो,
बनारस सिटी